नीराजन

2013

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

कानपुर

वर दे, वीणावादिनी वरदे !

नीराजन

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक पत्रिका : 2012-13

संरक्षक	:	श्री वीरेन्द्रजीत सिंह (सचिव : विद्यालय-प्रबंध-समिति)
प्रधानाचार्य	:	श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव
प्रधान संपादक	:	दुर्गेश वाजपेयी
सह संपादक	:	पवन पाण्डेय
आवरण चित्र	:	चि० हर्षित मिश्र
सहयोग	:	कु० श्रुति गुप्ता, कु० अनुकृति शुक्ला, चि० हिमांशु प्रताप सिंह

राष्ट्र की आत्मा : चिति

राष्ट्र की भी एक आत्मा होती है। उसका एक शास्त्रीय नाम है, 'सिद्धान्त और नीति' में इसे चिति कहा गया है। मग्डूगल के अनुसार समूह की कोई मूल प्रकृति होती है। वैसे ही 'चिति' किसी समाज की वह प्रकृति है जो जन्मजात है तथा जो ऐतिहासिक कारणों से नहीं बनी। चिति तो मूलभूत होती है। चिति को लेकर तो प्रत्येक समाज पैदा होती है और उस समाज की संस्कृति की दिशा चिति निर्धारित करती है, अर्थात् जो चीज चिति के अनुकूल होती है वह संस्कृति में सम्मिलित कर ली जाती है। 'चिति' वह मापदंड है, जिससे हर वस्तु को मान्य अथवा अमान्य किया जाता है। यही राष्ट्र की आत्मा है। इसी आत्मा के आधार पर राष्ट्र खड़ा होता है, और यही आत्मा राष्ट्र के प्रत्येक श्रेष्ठ व्यक्ति के आचरण द्वारा प्रकट होती है।

– पं० दीन दयाल उपाध्याय

विषय–सूची

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	शिक्षा का उद्देश्य	श्री मोहन राव भागवत	01
2.	आई.आई.टी. में चुने गए छात्र		05
3.	समसामयिक छन्द	दुर्गेश वाजपेयी	06
4.	अंग्रेजी देवी साधना मंत्र ए.बी.सी.डी	श्री गिरिराज किशोर	07
5.	विद्यालय की प्रगति–आख्या		10
6.	कानपुर की मल्ल विद्या	किशन स्वरूप अवस्थी	16
7.	विद्यालय का वार्षिकोत्सव	श्रुति गुप्ता	17
8.	परोपकार	रोहन मुकेश	22
9.	स्वदेश–प्रेम	अनुकृति शुक्ला	25
10.	प्रभात	रोहित राठौर	28
11.	प्रभात	मोहित तिवारी	30
12.	प्रभात	अश्विनी अग्निहोत्री	31
13.	क्रिकेट स्टार सचिन	निहाल अहमद	34
14.	सुमन	सचिन पाठक	36
15.	प्रभात	श्रवण तिवारी	37
16.	प्रभात	ऋतिक सचान	38
17.	याचक	अंकित शुक्ल	39
18.	प्रभात	अखिल पाठक	39
19.	राष्ट्रीय एकता	आर्यन मिश्र	40
20.	आस्था का मेला कुंभ	आयुष त्रिपाठी	42
21.	भारतीय संस्कृति	प्रशान्त सिंह चौहान	44
22.	राष्ट्रीय एकता	चन्दन अग्रवाल	46
23.	भारतीय संस्कृति	शगुन गुप्त	48
25.	शहीदों का बलिदान	प्रफुल्लित त्रिपाठी	50
26.	भ्रष्टाचार की समस्या	अभय द्विवेदी	51
27.	सोम शर्मा के पिता की कहानी	शिवम शिवहरे	53
28.	सीमा पार से आतंकवाद	आशीष कुमार	54
29.	आरक्षण	अंकित शुक्ल	58
30.	मैं बेटी हूँ	दिव्यांशु कश्यप	60
31.	पुष्प की कली	दिव्यांशु कश्यप	61
32.	चुनाव और नेता	गौरव शुक्ल	62
33.	राष्ट्रीय एकता	मानस मिश्र	63
34.	राष्ट्रीय एकता	अर्पित सचान	65
35.	आस्था का महाकुंभ	प्रदीप कुमार भारती	67
36.	राष्ट्रीय एकता	अनुज शुक्ल	69
37.	मस्तक नवाकर देखिए	आशीष कुमार सिंह	71
38.	कालजयी कवि तुलसीदास	शीतांशु भदौरिया	72
39.	आस्था का संगम : कुम्भ मेला	रजत कटियार	76
40.	छात्र जीवन में अनुशासन का महत्त्व	अमित कुमार	78
41.	परोपकार	दीपांकर चौरसिया	80
42.	सब्जी मण्डी में डॉक्टर	हर्ष यादव	82
43.	मन शांत रखने के दस सूत्र	आशीष कुमार सिंह	83
44.	अपना कर्त्तव्य	प्रदीप पाल	83
45.	मानव की आशा के पुष्प	ऋषभ तिवारी	84
46.	विषय	हर्ष यादव	84
47.	जीवन एक गणित है	हर्ष यादव	84
48.	पितृभक्त	दिव्या	85
49.	बचपन	रुद्रप्रताप सिंह	86
50.	शतकों का शरताज : शतकवीर सचिन	आलोक कुमार	87

51.	ए.टी.एम. कार्ड से सुरक्षा	रोहित आनन्द	88
52.	हमारी हिन्दी	ऋषभ तिवारी	88
53	माँ	रोहित आनन्द	88
54.	जो करो शान्त और एकाग्र मन से करो	अनुकृति शुक्ला	89
55.	समय	कृतिका वाजपेयी	89
56.	भ्रष्टाचार	रोहित यादव	90
57.	कर्त्तव्य	रोहित यादव	90
58.	जगदीश चन्द्र बसु की जीवनी	विक्रांत यादव	91
59.	प्लोरैन्स नाइटिंगेल	कृतिका वाजपेयी	92
60.	कालजयी कवित : तुलसीदास	अभिषेक सिंह चौहान	93
61.	स्वदेश प्रेम	आयुष शाही	95
62.	पर्यावरण प्रदूषण	उत्कर्ष तिवारी	98
63.	प्रेरक प्रसंग	नैना सिंह	100
64.	सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा	काजल	100
65.	स्वामी विवेकानन्द	अनमोल तिवारी	101
66.	पहली गुरु है माँ	श्रुति गुप्ता	102
67.	मेरी प्रिय पुस्तक राम चरितमानस	श्रुति गुप्ता	103
68.	क्रिकेट स्टान सचिन	सत्यम सचान	105
69.	राष्ट्रीय एकता	गोविन्द सचान	107
70.	राष्ट्रीय एकता	अंकित गुप्त	109
71.	राष्ट्रीय एकता	संतोष कुमार गुप्ता	111
72.	आस्था को मेला कुंभ	महेश सोनी	113
73.	सीमा पार से आतंकवाद	करन गुप्ता	115
74.	कितना प्राकृतिक है जैव प्लास्टिक	रोहन वर्मा	118
75.	चिड़िया के बच्चे का गीत	दिलीप कुमार	119
76.	भ्रष्टाचार	अक्षांश ओमर	120
77.	मीडिया पर बंदिश के प्रयास	अभिनव पटेल	121
78.	सफलता प्राप्ति के लिए	काजल	123
79.	सचिन का संन्यास	अभिषेक सोनी	124
80.	क्या होती है माँ	प्रीती यादव	125
81.	माता–पिता व गुरुजनों की महत्ता	प्रीती कुमारी	126
82.	आज का स्टूडेण्ट	संकल्प सिंह सेंगर	127
83	संवेदनाएँ	दिलीप कुमार	128
84.	अगर पेड़ भी चलते होते	रंजन कुमार	128
85.	आस्था का संगम कुंभ मेला	रवि प्रताप सिंह	129
86.	गाँधी और यमराज	कृष्ण दत्त ओझा	130
87.	हँसना जरूरी है	अभिजय कृष्ण	131
88.	शिक्षक का सम्मान करो	अवनीश चौहान	133
89.	आज के लोग	मोनेश कुमार अग्रवाल	133
90.	स्वदेश प्रेम	आकाश गुप्त	134
91.	धोखे बाज गधा	पवन कुमार	134
92.	एमेजिंग फेक्ट्स	सिद्धार्थ पोरवाल	135
93.	महंगाई	यश सिंह	135
94.	गाय	सिद्धार्थ पोरवाल	136
95.	गौ	सिद्धार्थ पोरवाल	136
96.	शैक्षिक देशदर्शन–2012	अर्चित पाण्डेय	137
97.	चतुर्वर्णस्थ माँ	अर्चित पाण्डेय	143
98.	पत्ता और मैं	मायावती	144
99.	उनको औकात दिखा दो अब	रोहित यादव	144
100.	नहीं किसी से कम है बेटी	प्रीति कुमारी	145
101.	हमारे पर्व (चौपाइयाँ)	सौरभ शुक्ल	146
102.	बस की यात्रा (व्यंग्य)	अभिषेक राजपूत	147
103	आचार्य–परिवार		149

नमन

- दुर्गेश वाजपेयी

पिछले दिनों हमारे विद्यालय की प्रबन्ध-समिति के माननीय सदस्य पं0 रामबालक मिश्र जी इस आसार संसार को छोड़कर चले गये। वे विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म महाविद्यालय की प्रबन्ध-समिति के अध्यक्ष थे तथा ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल के सभापति थे। 'बार एसोसियेशन' के अध्यक्ष के रूप में उनकी काफ़ी ख्याति थी। वे नगर की अनेक शैक्षिक तथा धार्मिक संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री, संरक्षक या मार्गदर्शक थे। उनको अपने साथ जोड़कर संस्थाएँ स्वयं गौरवान्वित होती थीं। श्रद्धेय बैरिस्टर साहब के साथ उनका दीर्घकालिक साहचर्य रहा। पंडित जी के अन्तिम दर्शनों के लिए नगर के अनेक गण्यमान्य लोगों के साथ न्यायिक सेवा, चिकित्सा सेवा से जुड़े लोगों के अलावा फिल्म जगत् की भी शख्सियतें थीं। लगभग चौरानबे वर्ष का कर्ममय और प्रकाशपूर्ण जीवन उन्होंने जिया। उनके निधन से हम सभी को दुःख है; परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें!

किसी मनुष्य में जन-साधारण से विशेष गुण व शक्ति का विकास देखकर उसके सम्बन्ध में जो एक स्थाई आनन्द-पद्धति हृदय में स्थापित हो जाती है उसे श्रद्धा कहते हैं। श्रद्धा महत्त्व की आनन्दपूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ पूज्य बुद्धि का संचार है। यदि हमें निश्चय हो जायेगा कि कोई मनुष्य बड़ा वीर, बड़ा सज्जन, बड़ा गुणी, बड़ा दानी, बड़ा विद्वान, बड़ा परोपकारी या बड़ा धर्मात्मा है, तो वह हमारे आनन्द का एक विषय हो जायेगा। हम उसका नाम आने पर प्रशंसा करने लगेंगे, उसे सामने देख आदर से सिर नवायेंगे; किसी प्रकार का स्वार्थ न रहने पर भी हम सदा उसका भला चाहेंगे, उसकी बढ़ती से प्रसन्न होंगे और अपनी पोषित आनन्द-पद्धति में व्याघात पहुँचने के कारण उसकी निन्दा न सह सकेंगे। इससे सिद्ध होता है कि जिन कर्मों के प्रति श्रद्धा होती है, उनका होना संसार को वांछित है। यही विश्व-कामना श्रद्धा की प्रेरणा का मूल है।

कला-कुशल या सदाचारी अपने चारों ओर प्रसन्नता देखना चाहता है, अतः अपनी श्रद्धा द्वारा हम उसे अपनी प्रसन्नता का निश्चय मात्र कराते हैं। हमारी प्रसन्नता से उसे अपनी सामर्थ्य का बोध हो जाता है और उसका उत्साह बढ़ता है। इस प्रकार अपनी श्रद्धा द्वारा हम भी समाज का मंगल साधन करते हैं। दूसरे की श्रद्धा का श्रद्धेय पर इतना ही प्रभाव पड़ना चाहिए, इससे अधिक नहीं। यदि हमारी श्रद्धा के कारण वह हमें किसी प्रकार का लाभ पहुँचाना चाहता है तो वह हमारी श्रद्धा को खुशामद समझता है और हमारा अपमान करता है। श्रद्धा में याचकता का भाव लेशमात्र भी नहीं है। श्रद्धा द्वारा हम अपने हृदय का परिचय मात्र देते हैं कि उसमें मार्मिकता या धर्म-भाव है - सात्विक आचरण या प्रतिभा की कला से प्रसन्न होने की क्षमता है। यदि हमें किसी पर श्रद्धा है तो हमें उसके पास जाकर यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि 'महाराज, मेरी यह श्रद्धा स्वीकार हो।' इस प्रकार की स्वीकृति की हमें कोई आवश्यकता नहीं। हम अपनी श्रद्धा के लिए अपने घर बैठे रह सकते हैं, या उसे इस रीति से प्रकट कर सकते हैं जिस पर श्रद्धेय का कोई वश नहीं। यदि हमें किसी बड़े लेखक पर श्रद्धा है और वह हमसे रुष्ट है, तो भी हम उसका सच्चा चित्र और चरित्र छाप सकते हैं। इसका स्वत्व हमें समाज द्वारा प्राप्त है - इसका हक हमें कानूनन हासिल है, पर वहीं यदि हम उस लेखक से प्रेम करने चलें, उसके साथ-साथ लगे फिरें और हरदम उसे घेरे रहें तो वह हमें हटा सकता है। श्रद्धा प्रदर्शित करने का जितना विस्तृत सामाजिक अधिकार हमें प्राप्त है, उतना उसके विपरीत भाव अश्रद्धा या घृणा प्रकट करने का नहीं, क्योंकि श्रद्धा हमने भूल से या स्वार्थवश प्रकट की तो किसी को उतनी हानि नहीं, पर यदि घृणा भूल से या द्वेष-वश प्रकट की तो व्यर्थ का असंतोष और दुःख फैल सकता है।

जहाँ श्रद्धा के सम्बन्ध में इतनी बातें हैं वहीं श्रद्धास्पद होने के लिए सदाचारी, प्रेमपूर्ण, सुहृद, कर्मशील, न्यायी तथा निश्छल होना होता है। पंडित जी श्रद्धास्पद थे, उन्हें हमारा नमन।

ऊर्जावान खिलाड़ी

ध्रुव दल में चैम्पियन

800 मी. दौड़ में प्रथम
400 मी. दौड़ में प्रथम
1200 मी. दौड़ में प्रथम
1500 मी. दौड़ में प्रथम
गोला प्रक्षेप में द्वितीय
400 मी. रिले में द्वितीय

100 मी. दौड़ में प्रथम
200 मी. दौड़ में प्रथम
गोला प्रक्षेप में द्वितीय
रिले रेस 100 x 4 में द्वितीय

लवकुश दल चैम्पियन

1200 मी. दौड़ में प्रथम
800 मी. दौड़ में प्रथम
लम्बी कूद में प्रथम
400 मी. में द्वितीय
200 मी. में द्वितीय

राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता (अंडर-16) में फ्री स्टाइल में चतुर्थ स्थान

राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता (अंडर-14) में बटरफ्लाई विधा में चयनित

राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता (अंडर-14) में चयनित

राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता (अंडर-16) में चयनित

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में (अंडर-14) में 100 मी. दौड़ में चतुर्थ स्थान

मण्डल स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता (अंडर-14) में चयनित

शिक्षा का उद्देश्य

श्री मोहन राव भागवत
(सरसंघ चालक, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ)

26 नवम्बर 2012 को जुगल देवी सरस्वती विद्या मन्दिर कानपुर के नवीन शिक्षा प्रकल्प 'उर्मिल देवी विद्या मन्दिर' सरस्वती विहार, मकसूदाबाद के लोकार्पण के अवसर पर परम पूज्य मोहन राव जी भागवत (सरसंघचालक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) द्वारा दिया गया अभिभाषण–

आज के कार्यक्रम के माननीय अध्यक्ष, आदरणीय कैप्टन द्रोण जी, विशिष्ट अतिथि आदरणीय भाई जी, मंच पर उपस्थित अन्य सभी मान्यवर, उपस्थित नागरिक सज्जन, माता, भगिनी एवं भैया बहनों!

शिक्षा का प्रसार स्वतंत्रता के पहले से भारत में सब लोगों का कहना रहा है और करना भी रहा है। बहुत पहले हमारे यहाँ अपनी एक शिक्षा पद्धति चलती थी और वह गाँव–गाँव तक पहुँची। हमारे देश में शिक्षा का प्रतिशत 75 से ऊपर था। 1860 के बाद अंग्रेजों के द्वारा उस शिक्षा पद्धति को योजनापूर्वक ध्वस्त किया गया। उस समय उनके यहाँ पर शिक्षा का प्रतिशत केवल 17 था। केवल 17 प्रतिशत लोगों को शिक्षित करने वाली विलेज भर आकार वाली मुठ्ठी भर जनसंख्या वाले देश में भी केवल 17 प्रतिशत शिक्षा दे सकने वाली उनकी शिक्षा पद्धति को उन्होंने हमारे देश पर थोपा और हमारी शिक्षा पद्धति काउन्टी एजूकेशन सिस्टम के नाम से अपने देश में ले गए परिणाम यह हुआ कि हमारे यहाँ शिक्षा का प्रतिशत नीचे आया और वहाँ शिक्षा का प्रचार–प्रसार हुआ और इसलिए भारत के नवोत्थान के सभी पुरोधाओं ने भारत के गाँव–गाँव तक **अन्याय दूर करने वाली** शिक्षा को पहुँचाने का आग्रह किया। काम भी हुआ, स्वतंत्रता के बाद भी चलता रहा, अभी भी चल रहा है और आगे भी चलता रहेगा, परन्तु शिक्षा का प्रसार यानी केवल विद्यालयों का प्रसार नहीं, रचना मात्र, उपकरण मात्र पहुँचाने से काम होता है, ऐसा नहीं है। कुछ दिन पूर्व मैं दक्षिण भारत के तमिलनाडु में वेल्लौर नाम के एक ग्राम में गया। गाँव में जाने के पहले नदी है, नदी पर पुल है, पुल से पार करना होता है। नदी का पाट बहुत विस्तृत है लगभग एक किलोमीटर–सवा किलोमीटर लम्बा है। सवा किलोमीटर लम्बे उस पाट को पार करते समय देखा, सारी नदी सूखी पड़ी थी, रेत ही रेत, पानी की एक बूँद नहीं, तो स्वाभाविक मैंने कहा कि बहुत बड़ी नदी है, पालेम उसका नाम है, पालेम का अर्थ होता है दूध! यानी दूधकन्या उसका नाम है और पानी की एक भी बूँद नहीं। नदी ऐसे सूख गई, तो उन्होंने कहा कि वेल्लौर शहर तीन बातों के लिए प्रसिद्ध है– पहली आप देख रहे हैं, मैंने कहा क्या हैं? उन्होंने कहा पहली बात है **"रिवर विदाउट वाटर"** पानी के बिना नदी और दूसरी बात है कि पुलिस विदाउट पावर, क्योंकि नगर में प्रान्त की पुलिस प्रशिक्षण अकादमी है। हजारों पुलिस के जवान प्रान्त में रहते हैं, शहर में रहते हैं, घूमते भी हैं, बाजार करने बाहर भी आते हैं, वहाँ के रास्तों में पुलिस न मिले, ऐसा होता नहीं है लेकिन उनके पास पावर नहीं है। क्योंकि वे अभी प्रशिक्षण में हैं। दूसरी बात आप देखेंगे कि पुलिस विदाउट पावर और तीसरी बात पहले थी अब नहीं है ठीक हो गई है मैंने बोला वो क्या ? तो

यहाँ टेम्पल विदाउट ईश्वर है, ईश्वर यानी शिव है। शिव मंदिर है वहाँ एक बहुत प्राचीन प्रसिद्ध जलकण्डेश्वर उसका नाम, लेकिन 450 साल पहले उस मंदिर पर आक्रमण हुआ, लोगों ने वहाँ के शिव लिंग को गायब कर दिया तो वह मंदिर बिना शिवलिंग के सैकड़ों साल रहा। इसीलिए वेल्लौर को तीसरी बात से जाना जाता था **''टेम्पल विदाउट ईश्वर''** अभी 80 के दशक में वहाँ के लोगों ने एक होकर वहाँ शिवलिंग की स्थापना कर दी। बाद में राज्य सरकार ने भी वहाँ पर कुछ चढ़ावा दिया। एक सरकार ने उसके जीणोद्धार का काम किया, दूसरी सरकार ने सोने की चादर वहाँ बिछाई आदि–आदि हो रहा है लेकिन मंदिर है इसलिए ईश्वर होगा ऐसा नहीं है। नदी है इसलिए पानी होगा ऐसा नहीं है। ये जब होता है तो हमें सोचना चाहिए कि विद्यालय तो हमने पहुँचायें शिक्षा पहुँचायी कि नहीं। आज की शिक्षा, शिक्षा जहाँ चल रही है, ऐसा कहते हैं बड़े बड़े शहरों महानगरों में शिक्षा में शिक्षा नहीं है। पाठ्यक्रम है, छात्र आते हैं, पढ़ते हैं और बड़ी बड़ी फीस देकर पढ़ते हैं लेकिन शिक्षा क्यों आवश्यक है वह नहीं होता है। शिक्षा से व्यावहारिक जीवन तो चलना चाहिए, बात ठीक है। शिक्षा केवल जानकारी नहीं है। दो प्रोफेसर थे एक फिजिक्स का, एक गणित का। नदी के किनारे घूमने के लिए गए और लगा उनको कि जरा सैर की जाये तो नाव वाले को बुलाया, वो आ गया उसने नाव में बिठाया चलाने लगा। नाव चलती थी तो उनकी इच्छा हुई कि उससे थोड़ी बात करें। उन्होंने उससे पूछा क्यों भाई! तुम कुछ गणित सीखे हो क्या? ये जो तुम पैसा लेते हो हिसाब किताब कैसे करते हो? उसने कहा नहीं महाराज जी हमारे नसीब में शिक्षा कहाँ? गरीब घर में पैदा हुए, नाव से लोगों को पार ले जाना यही काम करते हैं, पेट भरते हैं, फुर्सत कहाँ मिलती है। तो बोले अरे, तुमको पैसा लेना पड़ता है हिसाब करना पड़ता है फिर भी तुमने गणित नहीं सीखी। तुम्हारी तो एक चतुर्थांश आयु व्यर्थ। वो क्या बोलेगा बेचारा, गरीब शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहा है और ये ऊपर से उपदेश दे रहे हैं। वो चुप रहा, तो दूसरा शुरू हो गया भौतिक शास्त्री, उसने पूछा उससे कि नाव चलाते हो तो तुमको पता है कि पानी का विशिष्ट गुरुत्व कितना रहता है और नाव की गति से उसका क्या संबन्ध है? पानी की लहरों की गति किधर है, और चप्पू कैसे चलाने से नाव जल्दी किनारे पहुँचेगी। कुछ भौतिकी पढ़े हो? उसने कहा महाराज हमने बताया न हम तो प्राइमरी स्कूल भी नहीं गये। हमारी स्थिति ऐसी नहीं थी तो हम कहाँ, और कहाँ आप बड़े लोग! शहर में लोग पढ़ाई करते हैं। तो उसने कहा कि तुम्हारी और एक चतुर्थांश आयु व्यर्थ हो गई। इतने में हुआ ऐसा कि तूफान आ गया। गंगा जहाँ सागर में मिलती हैं, बंगाल प्रदेश में, वहाँ गंगा में भी तूफान आतें हैं। सागर से बड़ी बड़ी लहरें उठती हैं। वैसी लहरें उठने लगीं और नाव हिचकोले खाने लगी, बीच मझधार में थी, लगा कि अब नाव डूब जायेगी। तो केवट ने पूँछा कि आप दोनों को तैरना आता है? उन्होंने कहा कि तैरना तो हम नहीं सीखे हैं, तो फिर उसने कहा कि गणित और भौतिकी न सीखने से मेरी तो आधी आयु खराब हो गयी, तैरना न सीखने से आपकी पूरी आयु पानी में चली जाएगी। तो शिक्षित आदमी यानी क्या? जो अपना जीवन नहीं चला सकता, स्वावलम्बी नहीं बन सकता वह कैसे शिक्षित होगा? आज शिक्षा ले–ले कर आदमी स्वावलम्बी नहीं बनता वह नौकरी की तरफ भागता, अच्छी खासी खेती घर में है, मैं कृषि विद्यापीठ में पढ़ा हूँ, सौ–सौ एकड़, दो–दो सौ एकड़ जमींदार जो हैं, उनके पास, अच्छे ट्रैक्टर हैं, पानी की व्यवस्था है, सब है भरी पूरी खेती है। उनके बच्चे पढ़ने के लिए आते हैं,एम०एस०सी० हो जाते हैं। अपनी खेती ठीक से करने के लिए गाँव वापस नहीं जाते, वो बैंक में फील्ड आफीसर बनना चाहते हैं। स्वावलम्बी बनना नहीं चाहते हैं। किसी

के नौकर बनना चाहते हैं। **मन में स्वावलम्बन का भाव उत्पन्न न करे, जीवन को स्वावलम्बी न बनाए तो वो विद्या है क्या? शिक्षा है क्या?** लेकिन चल रही है शिक्षा, और स्वावलम्बी बनने का भाव कम हो रहा है। शिक्षित आदमी को निर्भय होना चाहिए लेकिन हमारी शिक्षा लोगों के मन में डर बिठाने का काम ज्यादा करती है। आज शिक्षित लोगों में आप देखिए, सब लोग क्या कर रहे हैं? वजन कम कर रहे हैं। वजन क्यों कम रहे हैं? किसी से भी पूछिए कोई ये उत्तर नहीं देगा कि शरीर को स्वस्थ रखना चाहिए। इसलिए वजन कम कर रहें हैं क्योंकि सब लोग यह कहते हैं कि ब्लड प्रेशर का खतरा कम करने के लिए जरूरी है। ब्लड प्रेशर से मौत को डरते हैं। कितना भी करे आदमी एक दिन तो मरेगा ही। लेकिन अंग्रेजी पत्रिकाओं में आने वाले लेखों से यह पता चलता है कि सामान्य आदमी के मन में मौत का डर बिठाओ तब वह व्यायाम करेगा। रामदेव महाराज जी के पास तो लाखों हजारों लोग योगासन करने जाते हैं, योगासन करने के लिए क्यों जातें हैं, वो आते हैं उसका लाभ लेने, बहुत अच्छी बातें सिखाते हैं वो। उनके मन में डर नहीं बिठा रहे, उनका डर निकाल रहे हैं, लेकिन जाने वाले क्यों जाते हैं, अधिकतर शिक्षित लोग हैं, उनको डर है डायबिटीज से मरेंगे, ब्लड प्रेशर से मरेंगे, अब ये स्वभाव हम लोगों का इस शिक्षा ने बनाया है। **शिक्षा से संस्कार मिलना चाहिए, केवल जीविका चलाना, आराम से जीना इससे काम नहीं चलता।** रामकृष्ण परमहंस के पास एक महात्मा गए, उनकी भी बड़ी तपस्या थी, उन्होंने कहा, महाराज! मैंने बहुत तपस्या की है तो मुझे सिद्धि प्राप्त हुई है। आपकी तपस्या से आपको क्या प्राप्त हुआ है? तो रामकृष्ण परमहंस ने उनसे पूछा कि आपको कौन सी सिद्धि प्राप्त हुई! तो बोले अभी दिखाता हूँ। दक्षिणेश्वर में थे, पंचवटी से गंगा में उतर गए पानी पर चलकर पार चले गये, वेल्लौर के मन्दिर का दर्शन किया और पानी पर चलकर वापस आ गये। इतनी तपस्या की मैं पानी पर चल सकता हूँ, तो राम कृष्ण परमहंस हँसे उन्होंने कहा, महाराज! बारह साल जीवन को खराब करके अपने यह विद्या सीखी, हम तो यहाँ दो पैसे केवट को देते हैं और नाव से पार हो जाते हैं। इतनी तपस्या करके इतनी छोटी चीज पाकर आपको अभिमान क्यों है? तपस्या इसके लिए नहीं है, तपस्या भगवान को पाने के लिए है। आपने सिद्धि पाई, सिद्धि की जरूरत नहीं है। दो पैसा देने से काम होता है। उसको रोजगार मिलता, और हम पार हो जाते हैं। **शिक्षा का उद्देश्य है संस्कार! शिक्षित आदमी संस्कारित बने, शिक्षित आदमी के मन में संवेदना उत्पन्न हो "वैष्णो जन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाने रे" तो पराई पीर का अपने मन में अनुभव करते हुए जीवों की सेवा के लिए अपना जीवन खर्चा करने वाला व्यक्ति ही वास्तव में शिक्षित व्यक्ति है।** स्वामी विवेकानन्द की सार्द्ध जन्मशती हम मनाने वाले हैं। स्वामी जी कितना पढ़े थे? स्वामी जी किस चुनाव में चुनकर आये थे? स्वामी जी का कितनी स्ट्रेन्थ थी? स्वामी जी ने न पैसा कमाया, न बहुत बड़ी उच्च शिक्षा में अपना नाम कमाया। क्षमता थी, लेकिन उन्होंने नहीं किया। न स्वामी जी समाज के सामने पुरोधा बनकर नेता बनकर आये। स्वामी जी ने क्या किया? भगवा पहनकर सारा जीवन समाज की सेवा में लगा दिया। उनके मरने के बाद उनकी माता का निर्वाह का खर्चा खेतड़ी के महाराजा राजस्थान करते थे, ऐसी उनकी आर्थिक विपन्नावस्था थी। अपने परिवार को विपन्न दुखी रखकर भी उन्होंने सारे समाज के लिए अपना जीवन खर्चा किया। हम स्वामी विवेकानन्द को जानते हैं। अपने पूर्वजों का हमें पता नहीं लेकिन हम स्वामी विवेकानन्द को जानते हैं। हमने उनको देखा नहीं, हमारे गाँव में वो आये नहीं, न हमारे पूर्वज हैं लेकिन उनका नाम हम सब जानते हैं।

इतने सारे सत्तापति, धनपति दुनिया में होकर चले जाते हैं, सबका नाम कोई स्मरण नहीं रखता। पितृ–वचन के लिए राज्य छोड़ने वाले राम का नाम सबको पता है, राणा प्रताप को सारी सम्पत्ति देने वाले धनपति भामाशाह को सब जानते हैं, बाकी को लोग भूल गए। विवेकानन्द को याद हम इसलिए करते हैं क्योंकि उन्होंने देश का दुःख–दारिद्रय समझकर उसको नष्ट करने के लिए अपना जीवन लगा दिया। शिक्षा का यह उद्देश्य होता है। उच्च शिक्षित लोग हैं फिर भी इतनी समझ नहीं है कि पराया धन लेना नहीं चाहिये। उस शिक्षा ने उनको क्या सिखाया? हमारे विद्यालयों में विद्यालय के भवन है पाठ्यक्रम है, सिखाने वाले लोग हैं, लेकिन शिक्षा नहीं है। इस अभाव को दूर करना होगा और आनन्द की बात है कि ठीक इसी अभाव को दूर करेन का काम विद्या भारती करती है। विद्या भारती के सम्पूर्ण देश में चल रहे इस महान कार्य में संघ के अनेक स्वंयसेवक और समाज के अनेक सज्जनों का सक्रिय सहयोग उनको मिल रहा है। हमारे गाँव में ये विद्यालय बना है, इस विद्यालय के आग्रजपूर्वज जो कानपुर शहर में है उनकी कीर्ति जो आपने सुनी है, समाज के लिए सक्रियता जिनकी दिखती है, ऐसे लोगों में इन विद्यालयों के निकाले विद्यार्थियों का भी बड़ा नाम है। समाज के लिये जिन्होंने अपना जीवन अर्पण कर दिया, ऐसे महापुरूषों का प्रत्यक्ष पथ–प्रदर्शन इन विद्यालयों की निर्मित में, उनके पाठ्यक्रम की पढ़ाई में इन सब लोगों को मिला है। ऐसा वास्तव में शिक्षा देकर मनुष्य नामक पशु को मानव की उपाधि धारण करने लायक बनाने वाली शिक्षा अपने यहाँ पर भी उपलब्ध हो गयी है। हम सब लोगों का सहयोग इस दिशा में चाहिये भवन निर्माण हो गया है, भवन में जो भाव होना चाहिये, वह हो, यह मात्र विद्या भारती का काम नहीं है क्योंकि कौन सी शिक्षा बालकों को लेना, उसकी प्रेरणा देने वाले उनके माता पिता हैं। अभिभावकों को समझना पड़ेगा कि बच्चे को पढ़ाना इसलिये जरूरी नहीं है। कि पैसा कमा–कमा कर वो गब्बर हो जायें, पढ़ाना इसलिये है कि कमा कर मेरे कुल की कीर्ति अधिक उज्जवल करने वाला, सारे देश में जिसका स्मरण किया जाये पीढ़ी दर पीढ़ी, ऐसा एक व्यक्ति उसमें से बनना चाहिये। मनुष्य केवल मनुष्य है वर्ना केवल पशु है। "आहार निद्रा भय मैथुनं च, सामान्यमेतत् पशुभिः नराणाम् "वो जब मानवता का वरण करता है तब वह वास्तव में मनुष्य बनता है। मानव में सहृदयता होती है, संवेदना होती है, संस्कृति होती है और अपने विकास के लिये सतत् साधना करने का भाव होता है। ऐसा मनुष्य जब परोपकार के लिये अपनी सारी शक्तियों को लगा देता है तो फिर वह मानव वृत्तियों से देवत्व मात्रा करता है। उसका जीवन सृष्टि के अर्थ कामों में बद्ध नहीं रहता, वह मुक्त हो जाता है इसलिये अपने यहाँ कहा गया है कि "सा विद्या या विमुक्तये", जो इस सांसारिक बंधनों से जीवन को मुक्त करके सारे चराचर को अपना कहने वाला और उसके लिये खपने वाला मानव बनाती है,उसको विद्या कहते हैं। इन विद्यालयों में आज की रूढ़ि शिक्षा जो निःशब्द है लेकिन लेना आवश्यक लोकरीति के अनुसार उसको लेते–लेते हम सब लोग इस विद्या को प्राप्त करें, और इस विद्या को प्राप्त करने का यह अभियान समपूर्ण देश में व्याप्त हो। इसलिये हम सब अभिभावकों को समाज के समाजसेवी सज्जनों का, संघ के स्वयंसेवकों का, सबका सहयोग इसमें आवश्यक हैं। और सहयोग देने का संकल्प आज इस भवन लोकार्पण के निमित्त हम सब लोग करें। इतना कह कर हम अपनी बात समाप्त करते हैं।

❀ ❀ ❀

Pt. Deen Dayal Upadhyaya Sanatan Dharma Vidyalaya, Kanpur

Selected Students I.I.T. (J.E.E.-2013)

Sl. No.	Name of Student	AIR
1.	Prince Kumar Verma	521
2.	Abhi Sahu	1733
3.	Gyanendra Awasthi	2528
4.	Abhishek Kumar	2819
5.	Abhishek Rajput	2839
6.	Subham Uttam	3244
7.	Punit Yadav	3800
8.	Ajit Singh	4737
9.	Shivam Dubey	4755
10.	Anurag Awasthi	6278
11.	Adarsh Pandey	9200
12.	Ankit Nigam	11213
13.	Prakhar Dwivedi	11678

Selected Students in (CPMT-2013)

Sl. No.	Name of Student	
1	Gaurav Kumar Singh	King George College Lucknow

Mahesh Chandra Srivastava
Principal

समसामयिक छन्द

दुर्गेश वाजपेयी
प्रवक्ता : हिन्दी

सवैया छन्द

मनमोहन सिंह सुनो जनता अपने इस देश की जाग चुकी है।
जन का मन पीड़ित है समझो वरना घर में अब आग लगी है।
हठ छोड़ करो कुछ काम भले व्यवधान हरो हर राह रुकी है।
इतिहास गवाह रहा इसका जन के बल से सरकार झुकी है।।

सवैया छन्द

भारत की जनता दुःख दर्द सहे कितना कहिये मनमोहन।
टूट गये अरमान सभी सपने बिखरे अपने मनमोहन।।
दाम बढ़े, अपराध बढ़े, अभिमान बढ़े कितने मनमोहन।
आग लगी चहुँ ओर परन्तु नहीं कहते कुछ भी मनमोहन।।

घनाक्षरी छन्द

निष्कलंक जीवन विचार सारवान और
धारदार जीवन है अन्ना मतवाले का।
भ्रष्टाचार दानव का अन्त करने के हेतु
शक्ति का नवीन अवतार है हजारे का।।
बेईमानी देश में समुद्र सी भरी अपार
पार करने को है जहाज दिलवाले का।
सुप्त देश प्रेम को जगाने का किया है काम
अन्ना का जवाब नहीं रालेगण वाले का।।

कुण्डलिया छन्द

अन्ना की आवाज से, जागा हिन्दुस्तान।
जनता पीछे चल पड़ी, अपना सीना तान ।।
अपना सीना तान, सत्य को मिला सहारा।
गूँगे के तुम बोल, पंगु को दिया किनारा।।
कह कविवर दुर्गेश, लिखा है स्वर्णिम पन्ना।
भ्रष्ट देश में सत्य, न्याय की आशा अन्ना।।

अंग्रेज़ी देवी साधना मंत्र ए.बी.सी.डी.

श्री गिरिराज किशोर
(प्रख्यात उपन्यासकार, गाँधीवादी विचारक)

प्रो. प्रजापति साह अंग्रेज़ी के विद्वान और आई.आई.टी. कानपुर के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर हैं। उनका मेरे पास एक ईमेल आया 'आर वी वन नेशन?' दलित नेता और विद्वान श्री चंद्रभान प्रसाद जी ने दिल्ली में भारत में अंग्रेजी को प्रशासकीय भाषा के रूप में प्रस्थापित करने वाले लार्ड मैकॉले का जन्मोत्सव मनाया था। मैकॉले ने बिना पढ़े और जाने कहा था कि शेक्सपियर की एक रचना के मुकाबले भारत का अलमारी भर साहित्य रखा जा सकता है। अपनी समझ और अपना विवेक। उसमें मुख्य अतिथि थे विद्वान समाजशास्त्री आशिष नन्दी। यह प्रशंसनीय बात है कि किसी विदेशी विद्वान का जन्म दिन हमारे देश में मनाया जाए। लेकिन संदर्भ अलग था। उसमें अंग्रेज़ी को देवी के रूप में स्थापित किया गया था और कहा गया था कि दलित अंग्रेज़ी को देवी मानें और शिशुओं के कान में जो मंत्र उच्चारित किया जाए वह ए.बी.सी.डी. हो। भाषा के स्तर पर यह दलितों के उत्थान की दिशा में नया प्रयोग है। जनतंत्र में सब स्वतंत्र हैं। अपने सोच और आवश्यकता की दृष्टि से हर कोई जो उचित समझता है, करता है कहता है। उसमें किसी को टाँग अड़ाने का अधिकार नहीं होना चाहिए। लेकिन यह घटना कई सवाल उठाती है। दलित हों या गैरदलित लगभग एक तिहाई से अधिक जन समुदाय या तो अनपढ़ है और अगर पढ़ा लिखा है भी तो उसकी अपनी मातृभाषा से अधिक आत्मीयता है। अंग्रेज़ी तो अधिक से अधिक चार से पाँच प्रतिशत जानते हैं। वह भी काम चलाऊ। उनमें एक प्रतिशत या कम अंग्रेज़ी के वास्तविक जानकर होंगे। कैरियर की दृष्टि से तो अंग्रेज़ी का चलन देश में टैक्नीकल शिक्षा के विस्तार के बाद हुआ। पहले अंग्रेज़ी जानने वाले और भी कम थे। आज़ादी के पहले या तो वकील बैरिस्टर, अफसर, बड़े ज़मीदार, मिल मालिक जिनका अंग्रेजों से संपर्क रहता था, अंग्रेंज़ी के जानकर होते थे। साहब समझे जाते थे। आज़ादी के बाद अंग्रेजी का प्रचार ज़्यादा ज़ोर शोर से हुआ। सही मायने में मैकॉले का जादू तभी चला। फिर भी उनकी प्रतिशतता 4 या 5 से अधिक नहीं हो पाई। गोरे आक़ाओं के ज़माने में जब अंग्रेज़ी वास्तव में पूजनीय थी, तब भी अंग्रेज़ी मात्र बित्ता भर ही फैल पाई थी। उल्टे अंग्रेज़ अफ़सरान देश में आने के बाद उर्दू/हिंदी या अन्य भारतीय भाषाएँ सीखते थे।

दूसरा सवाल जो बार–बार सामने आता है वह है कि अंग्रेज़ों ने देश पर लगभग दो सदियों तक राज किया। मैकॉले साहब का मानना था कि **अगर किसी देश की सभ्यता और वैचारिक आधार में सेंध लगानी है तो वहाँ की भाषा को बदलो।** उन्होंने प्रयोग भी किया। कोर्ट की भाषा इतने लंबे समय तक अंग्रेज़ी रही। यहाँ तक कि विश्वविद्यालयों में भाषाई विषयों पर शोध ग्रंथ तक अंग्रेज़ी में लिखे जाते थे। देशी भाषाओं को वर्नाक्यूलर भाषाएँ घोषित किए जाने के बावजूद भारत के लोग अंग्रेज़ी को अपनी भाषा के रूप में स्वीकार नहीं कर पाए। जो लोग राधाकृष्णन जैसे अंग्रेज़ी के

अद्वितीय विद्वान थे वे भी अपने घरों में अधिकतर अपनी मातृभाषा का ही प्रयोग करते थे। यानी अंग्रेज़ी के इतने लंबे शासन के बावजूद अंग्रेज़ अंग्रेज़ी को देश की सर्वसम्मत भाषा बनाने में असफल रहे। भारतीयों की देवी तो उनकी अपनी भाषाएँ ही रहीं। अपनी भाषाओं और बोलियों के सबसे बड़े पैरोकार दलित और वे ही लोग थे जो गैर अंग्रेज़ी पढ़े लिखे थे। अगर हम शिशुओं के कानों में चन्द्रभान प्रसाद जी का महामंत्र फूँक भी देंगे तो क्या उनका यह परंपरागत सोच बदल जाएगा?

नवजागरण काल जिसमें केशव चंद्र सेन, राजा राम मोहन राय, सर सैय्यद अहमद जैसे क्रांतिकारी विचारक अपनी कौमों को यह समझाते रहे कि अगर उन्नति करनी है तो अंग्रेज़ी पढ़ो और विज्ञान सीखो, लेकिन भाषा के स्तर पर वे लोग आम और मध्यमवर्गीय जीवन पर इतना ही असर डाल पाए कि उन्होंने नौकरी यानी बाबूगीरी के लिए ज़रूर अंग्रेज़ी सीखी, लेकिन अपनी भाषा के प्रति उनकी दृष्टि में ज़रा सा भी परिवर्तन लाने में वे सफल नहीं हो सके। मैकॉले को ऋषि चाहे मान लिया हो पर अंग्रेज़ी को देवी नहीं मनवा पाए। बंगाली बाँग्ला से ही जुड़ा रहा, और है। हालांकि अंग्रेज़ी मद्रास और बंगाल में ही सबसे पहले अवतरित हुई थी। उसके बावजूद वे अपनी भाषाओं के आज भी कट्टर समर्थक हैं मुस्लिम भी उर्दू के प्रति ही समर्पित रहे और आज भी हैं।

यह सही है कि दलित समाज के साथ अंग्रेज़ों ने भारतीय हिन्दुओं की ज्यादतियों के मुकाबले अधिक मानवीय व्यवहार किया। हालांकि डा. अम्बेडकर ने स्वयं माना है कि उन्होंने केवल यथास्थिति बनाए रखी। न कोई कानून बनाया और न उनके जीवन को बेहतर बनाने में कोई सकारात्मक सहयोग दिया। डा. अंबेडकर बहुत बड़े अंग्रेज़ीदाँ थे, पर वे हिंदी और भारतीय भाषाओं के समर्थक भी थे। हो सकता है कि मैं गलत हूँ, लेकिन वे अंग्रेज़ी में भारत का भविष्य न देखकर भारतीय भाषाओं में देखते थे। यह तो बचपन में हमने देखा था कि ऊँची जाति वाले ब्रिटिश पुलिस की सहायता से गाँव के गाँव जलवा देते थे। पकड़ धकड़ के बाद सब शांत हो जाता था। वह परंपरा आज तक मौजूद है। जो दलित अंग्रेज़ी जानते थे या हैं, उनके पास आम, अशिक्षित या अर्ध अशिक्षित दलित की रसाई उतनी आसान आज भी नहीं हैं। दलित की बात क्यों करें, उच्च जातियों में भी अंग्रेज़ी जानने वालों और न जानने वालों के बीच समानता का नाता आज भी नहीं है। भले ही देश आज़ाद हो गया हो लेकिन नेहरू जैसे देशभक्तों की कृपा से शासकों की भाषा आज भी अंग्रेज़ी ही है। अंग्रेज़ी ने भी उसी तरह कुलीन वर्ग का निर्माण किया जिस प्रकार कभी संस्कृत ने किया था। हालांकि अंग्रेज़ी के साथ पवित्रता का ढकोसला नहीं जुड़ा लेकिन कुलीनता और विशिष्टता गहराई से जुड़ी है। आई.आई.टी. जैसी संस्थाओं में कान्वेन्टियन संस्कारों से आने वाले बच्चों के अलावा बहुत कम छात्र अपना सम्मान बचा पाते हैं। भले ही वे दलित न हों। दलितों की समस्याओं का तो मैंने अपने उपन्यास 'परिशिष्ट' में अध्ययन किया था। क्योंकि वह दलित द्वारा नहीं लिखा गया, शायद इसीलिए इस समस्या पर लिखे गये इस अकेले उपन्यास पर कम लोगों का ध्यान गया। यह कहा जा सकता है कि उनके साथ जो भी हुआ अंग्रेज़ी न जानने के कारण हुआ। दूसरे वर्ग के लोग जो सामान्य परिवारों से आते हैं, उन्हें भी अंग्रेज़ी उच्चारण तक में छूट नहीं देती। उच्च वर्ग उसे अपनी श्रेष्ठता का आधार बनाकर रखना चाहता है। चंद्रभान जी जैसे बहुत कम लोग हैं जो अंग्रेज़ी में पारंगत हैं। यह सामान्यतः संभव नहीं। अंग्रेज़ी को देवी ही माना जा सकता है। वैसे भी अंग्रेज़ों ने भले ही दलित वर्ग के प्रति अन्याय न किया

हो, परंतु अंग्रेज़ी ने बाँटा तो है ही। जीवन पथ प्रदर्शिनी नहीं। जैसे देश की आर्थिक नीतियाँ छोटे को और छोटा बना रहीं हैं अंग्रेज़ी ने भी यही काम किया है और आगे भी करेगी। उसका हमारी संवेदना से कोई जुड़ाव नहीं, न हो सकता है। यहाँ की जनता ने, चाहे दलित आंदोलन हो या आज़ादी की लड़ाई हो अपनी भाषाओं के सहारे लड़े हैं। दलित अपनी भाषाओं के सहारे ही अपनी आज़ादी पाएँगे। प्रबुद्धजन अंग्रेज़ी की पूजा करें या उसकी वर्णमाला को मंत्र बनाएँ, उसकी तसबी घुमाएँ या लार्ड मैकॉले को पूजें पर ईश्वर के लिए अपनी भाषाओं में उनके विश्वास को न टूटने दें। जहाँ तक विदेशियों को समझाने के लिए यह भाषा चाहिए आप जैसे विद्वान काफ़ी हैं। वे अपनी भाषाओं के माध्यम से आपको जन संवेदना से जोड़ने का काम करेंगे आप अपनी इस विशिष्ट भाषा के ज़रिए उसे संसार भर में फैला दें। डा. साहब ने अकेले यह काम किया। उनको और उनकी भाषा को साथ–साथ जीने दें। कहीं ऐसा न हो कि न वे अंग्रेज़ी को साध पाएँ, जैसा कि अब तक होता रहा है और अपनी भाषा से भी भटक जाएँ। कहीं यही मुहावरा चरितार्थ न हो जाए 'नकटी देवी ऊत पुजारी'। हम सब अंग्रेज़ी की पूजा कर रहे हैं और समझ रहे हैं अंग्रेज़ी से हमारी नाक ऊँची हुई है। सच पूछिए तो हम सब नकटे पुजारी हैं। नाक कटा कटा कर भगतों की टोली में शामिल हो गए हैं।

❀ ❀ ❀

राम

लेखक– श्री पं0 देवनारायण तिवारी

रामदृढव्रती आर्य थे श्रेष्ठ श्रेष्ठ था उनका कर्म महान्।
वेद–वेदांग, उपनिषद्–तत्त्व आदि का उन्हें पूर्ण था ज्ञान।।
धर्म में रत काया थी नित्य सत्यव्रत साधक पुरुष महान्।
धर्यशाली, प्रियदर्शी, तेजवान थे, थे अति पौरुषवान्।।
यज्ञ के व्रती–रती थे निष्ठ, कर्म था प्रति अतिनिष्ठावान्।
नित्य संध्या–वंदन में लीन, वेद का करते पावन गान।।
धुरन्धर, नीति–निपुण थे राम काम पर था पूरा अधिकार।
प्रजा–पोषक, तोषक सुमान्, सर्वप्राणी के पोषणहार।।
क्रोधजित रहे, असूया–शून्य, शत्रुओं के प्रति थे यमराज।
मधुरभाषी, तेजस्वी, योगयुक्त थे, पूरे योगीराज।।
जितेन्द्रिय, दाता धनद–समान, प्रजा रञ्जक, भञ्जक दुःख पाप।
स्वप्न में भी भूले से राम ने किया कभी न कोई पाप।।
पिता–माता गुरुजन सम्मान रक्त के कण–कण में था व्याप्त।
सप्तमर्यादापालक सुधी, आचरणवान् पुरुष थे आप्त।।
विपद में भी वे स्थिर धर्म, साधनारत रहते थे धीर।
धीरता में हिमशैल–समान, सिन्धुसम था उनका गाम्भीर्य।।
युगों पश्चात् आज भी लोग राम का करते हैं यश गान।
न मन्थर कभी हुआ गतिहीन, विश्व में रामायण का मान।।
आज भी कोटिक जन–समुदाय राम को कहता है भगवान्।
भक्ति की धारा में अविराम, राम व्यापक हैं बने महान्।।
भले ही राम न हों सर्वत्र, किन्तु सर्वत्र राम का नाम।
धरा पर वैसे ही व्याप्त, राम की गाथा ललित–ललाम।।
राम की जय का पावन नाद, भर रहा भूतल में निर्वेद।
राम की महिमा अमित–अपार, न कोई कर सकता उच्छेद।।

विद्यालय की प्रगति-आख्या

युगद्रष्टा पं० दीन दयाल उपाध्याय के 96 वें जन्मोत्सव पर आज हम उनका पुनः स्मरण कर रहे हैं। साधना के पर्याय इस युग के ऋषि के द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रदान की गई प्रेरणा अनन्त काल तक आदर्श उद्धरण रहेगी और उनका बलिदान हर संवेदनशील देशभक्त के लिए चुनौती। वास्तव में हमारे विद्यालय की मूल भावना उस युग दधीचि के मर्मघाती बलिदान से ही प्रेरित है।

यह विद्यालय जिस भावना–भित्ति पर आधारित है उसके निर्माण की मूल सामग्री है, सात्विक भाव, सद्विचार और सदाचार। विद्यालय का उद्देश्य है शक्ति, शौर्य तथा साधना संकल्प के साथ भारत माता की आजीवन आराधना। इस उदात्त उद्देश्य–प्रेरित विद्यालय के निर्माण में जिन महनीय महापुरुषों ने अपना अनिर्वचनीय योगदान दिया है उनमें विद्यालय की कल्पना मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी **पूज्य भाऊराव**, इसकी आधार शिला रखने वाले युग पुरुष **परम पूज्य श्री गुरु जी**, भव्य भवन को मूर्त–रूप देने वाली **ममतामयी माँ श्रद्धेया बूजी** और इसकी कंचन–काया में प्राण संचरित करने वाले **श्रद्धास्पद बैरिस्टर साहब** सदा ही स्मरण किये जायेंगे। विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष ब्रह्मलीन प्राचार्य श्री शिवशरण शर्मा का व्रती जीवन और संकल्पसिद्ध अध्यवसाय जहाँ हमारे लिये पाथेय है वहीं गोलोकवासी श्री इन्द्रजीत जैन जी की उदारता हमारा संबल।

संवत् 2026 की गुरु पूर्णिमा (18 जुलाई 1970) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय आज अपना बयालीसवाँ वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इस विद्यालय की कल्पना–शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप जाग्रत विवेक है। पं० दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति है। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा–शक्ति सम्पन्न आदर्श पीढ़ी धीरे–धीरे समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है।

कलेवर

षष्ठ कक्षा के मात्र 24 छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज विज्ञान वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है, वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। प्रारम्भिक अर्द्धचन्द्राकर दुमंजिले भव्य भवन का निर्माण श्रद्धेया बूजी ने अपने नितान्त व्यक्तिगत साधनों से करवाया, जो अपने में एक महिमामय उद्धरण है। आवश्यकतानुसार धीरे–धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनों का भी निर्माण होता गया यथा विज्ञान–वीथी, भाऊराव–भवन, नरेन्द्र–निवास छात्रावास, प्राचार्य–आवास, माधव स्मृति क्रीड़ा–परिसर व प्रेक्षागार, आचार्य–कर्मचारी आवास तथा 7500 वर्ग फीट क्षेत्रफल का 'पण्डित दीनदयाल सभागार।'

इस समय प्रथम से द्वादश तक कक्षाओं के 24 अनुभागों में छात्रों की संख्या 997 है। इनमें से 301 छात्रावासीय हैं जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाऊराव–भवन तथा नरेन्द्र–निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही उत्तराखण्ड, बिहार, झारखण्ड, बंगाल तथा मध्य प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय–परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य अधीक्षकों द्वारा की जाती है।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान मे 36 है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं।

विद्यालय के पास लगभग एक लाख पचास हजार रु० से अधिक मूल्य की 18000 से अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय भी है। वाचनालय में 6 दैनिक, 3 साप्ताहिक तथा 10 मासिक पत्र–पत्रिकाएँ आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम–पटों पर लिखे जाते हैं।

इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रहकर हम विद्यालय के छात्रों का समग्र विकास करने में सफल भी हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

■ परिषदीय परीक्षाएँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल 1975 में तथा द्वादश कक्षा का 1981 में उत्तर–प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा–परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है।

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (37 वर्षों का)		द्वादश (30 वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	3730		3170	
कुल प्रविष्ट छात्र	3729	99.97	3165	99.84
उत्तीर्ण	3713	99.54	3148	99.30
ससम्मान	1550	41.55	1086	34.25
प्रथम श्रेणी	1801	48.28	1722	54.25
द्वितीय श्रेणी	352	09.43	335	10.56
तृतीय श्रेणी	0010	00.26	05	00.15

वर्ष 2012 का परीक्षा परिणाम निम्नांकित है

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	121	107
कुल प्रविष्ट छात्र	121	104
उत्तीर्ण	121	104
अनुपस्थित	00	03
ससम्मान	121	74
प्रथम श्रेणी	00	30
द्वितीय श्रेणी	00	00
तृतीय श्रेणी	00	00

अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ

प्रतियोगी परीक्षाओं का अद्यावधि परिणाम

कुल छात्रों की संख्या	वर्गशः	चयनित संस्था	सफल छात्रों की संख्या	प्रतिशत
3150	गणित 2792	आई०आई०टी०	334	11.96%
		अन्य इन्जीनियरिंग संस्थान	1812	64.89%
	जीव विज्ञान 347	मेडिकल परीक्षायें	87	25.07%

गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं :

जे०ई०ई० / संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई०आई०टी, मर्चेण्ट नेवी, धनबाद खनन महाविद्यालय तथा सी०बी०एस०ई)	36
यू०पी०टी०यू० / (क्षेत्रीय अभियांत्रिकी विद्यालय)	75
कुल (इंजीनियरिंग में) चयनित छात्र	111
प्रशासनिक सेवाएँ	04

एन०डी०ए० और सी०डी०एस० के माध्यम से सेना में पहुँचे लगभग 38 सैन्य अधिकारी और संघ लोक सेवा आयोग से चयनित लगभग 29 प्रशासनिक अधिकारी विद्यालय से प्राप्त संस्कारों एवं जीवन के उदात्त आदर्शों का प्रकटीकरण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इस वर्ष चि० शान्तनु अग्रहरि, कौशलेन्द्र प्रताप, आलोक केसरवानी, अजय शुक्ल ने आई.ए.एस. परीक्षा में चयनित होकर विद्यालय के गौरव में श्री वृद्धि की है। विशेष बात यह है कि इन सबके विद्यालय से सतत् सम्बन्ध बने हुए हैं।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज, परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रतिवर्ष शत् प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मवर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

शासन द्वारा स्वीकृत छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले कुल 43 छात्र विद्यालय में अध्ययनरत हैं साथ ही भारत सरकार द्वारा डॉ० भीमराव अम्बेडकर फाउण्डेशन के अर्न्तगत 02 छात्र प्रतिभा छात्रवृत्ति योजना में चयनित किये गये हैं।

हमारे अनेक छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं। इन छात्रवृत्तियों के दाता महानुभावों तथा न्यासों/संस्थाओं के नाम निम्नाकिंत हैं। हम इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति

- श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति
- श्रीमती सावित्री अग्रवाल
- श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल
- श्री इन्द्रजीत जैन स्मारक छात्रवृत्ति
- श्री प्रेम नारायण जी सोमानी
- आई०जे०एस० ट्रस्ट कानपुर
- श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति
- श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति
- श्रीमती भाग्यवती त्रिपाठी द्वारा श्री रवीन्द्र नाथ त्रिपाठी, पाण्डुनगर, कानुपर
- श्रीमती संजना मित्तल
- पूर्व छात्र चि० प्रवीण भागवत
- पूर्व छात्र चि० संदीप मेहरोत्रा
- पूर्व छात्र चि० हृदयेश गुप्त
- पूर्व छात्र चि० अजय गुप्त

कुल मिलाकर 32 छात्र इन सभी न्यासों और संस्थाओं के द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं। विद्यालय के पूर्व छात्र स्व० गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ० सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

खेल–कूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अपने सीमित साधनों में यथासंभव खेलों में भी कौशल प्राप्त करने का हमारा प्रयास रहता है। विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्त्व दिया

जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन०सी०सी०) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र प्रायः प्रतिवर्ष ही देशदर्शन हेतु जाते रहते हैं। इस योजना के अन्तर्गत अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं।

नैतिक शिक्षा

हमारी समय–सारणी में नित्य प्रायः मानस, गीता आदि ग्रंथों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार वेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण–सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रौत्साहन हेतु नियत मापदण्डों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय–रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास

निर्भीक–सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थाएँ कार्य करती हैं–

अष्टम कक्षा तक बाल–भारती, नवम–दशम में किशोर–भारती और एकादश–द्वादश में तरुण–भारती जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय–प्रक्रिया तथा छात्रावास–संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर, नगर, जनपद, प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद–विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते रहे हैं।

कम्प्यूटर शिक्षण

विद्यालय का कम्प्यूटर विभाग सुव्यवस्थित और आधुनिकतम सुविधाओं से सुसम्पन्न है। साफ्टवेयर के माध्यम से कम्प्यूटरों पर ही पूर्ण अध्यापन तथा स्वनिर्मित साफ्टवेयर द्वारा अपने विद्यालय में छात्रों की प्रवेश–प्रक्रिया को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है। प्रवेश–परीक्षा का परिणाम भी विगत वर्षों से इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा है।

छात्रों के तकनीकी विकास हेतु विद्यालय अवधि के पश्चात इण्टरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिसके द्वारा छात्र अपने Subject, Career, Current Issuses की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

विद्यालय की गृह परीक्षाओं एवं Student Database को Computerized करने हेतु Software बनाने के लिए विभाग कार्यरत है जिसके द्वारा हम अपने विद्यालय की Attendance एवं Result को Computerized कर सकेंगे

युग–भारती

बाल, किशोर और तरुण–भारती की शृंखला में अगली कड़ी है युग–भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र का विद्यालय के साथ सम्बन्धों की समाप्ति न माना जाये, इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरुण–भारती की स्थापना हो गयी थी, जो कि अब युग–भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है। युग–भारती ने अपने शिविरों, ग्राम–सम्पर्क–योजनाओं आदि से समाज को अपनी लगन और निष्ठा का परिचय दिया है।

पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव विद्यालय की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण भी।

माँ सुशीला वात्सल्य मन्दिर

विद्यालय द्वारा प्रारम्भ हुआ यह एक पावन प्रकल्प है, जिसका उद्देश्य समाज के सुविधा–वंचित शिशुओं की जीवन की आवश्यक सुविधाओं के साथ पालन–पोषण तथा समुचित अध्ययन की व्यवस्था करना है।

इसके लिए विद्यालय के दाहिने पार्श्व में वी०एस०एस०डी० महाविद्यालय के अनुग्रह से प्राप्त भूमि पर एक भव्य भवन निर्मित हो चुका है। विद्यालय के सह–सचिव श्री यतीन्द्र जीत सिंह जी के द्वारा इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए पूरा व्यय भार वहन करने का अनुकरणीय संकल्प लिया गया है। भविष्य में इस वात्सल्य मन्दिर के द्वारा पालित–पोषित एवं मार्गदर्शित छात्रों का यशस्वी जीवन समाज के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण बन सकेगा, इसी विश्वास के साथ विद्यालय का यह पावन प्रकल्प 23 सितम्बर 2004 से कार्यरत है। वर्तमान समय में 30 शिशु शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। इस सेवाभावी पावन प्रकल्प में आप सबके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

समाज के आर्थिक रूप से अभावग्रस्त परन्तु प्रतिभाशाली, वंचित वर्ग के छात्र–छात्राओं की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए तीन वर्ष पूर्व विद्यालय में प्रतिभा प्रोत्साहन प्रकल्प के माध्यम से समाज के इस वर्ग के बालकों को निःशुल्क शिक्षा देने का कार्य प्रारम्भ हुआ था।

इस वर्ष इस योजना को और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से वंचित वर्ग के छात्रों को विद्यालय में प्रवेश देकर उन्हे निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था प्रारम्भ हो रही है।

भारतीय चिन्तन में "शिक्षा का उद्देश्य" विषय का कक्षा–शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति–निर्माण के माध्यम से समाज–जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा–प्रवाह अवरूद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करें जों समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रहकर अपनी तेजस्विता से निरन्तर नवजीवन को संचार करते हेतु इस जीवन–प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें।

अंत में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्र–निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे।

धन्यवाद!

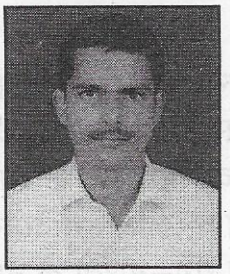

कानपुर की मल्ल विद्या

किशन स्वरूप अवस्थी
क्रीड़ा आचार्य

स्वथवृत्तं यथोदि्दष्टं यः सम्यगनुष्ठिति।
स समाः शतमव्याधिः आयुषा न वियुज्यते।।

गंगा यमुना के दोआब में वैदिक व पौराणिक ऐतिहासिकता को समेटे कानपुर जनपद आर्य सभ्यता का केन्द्र रहा है। अखिल भारतीय मल्ल विद्या में कानपुर का स्थान सम्मान जनक रहा है। मल्ल विद्या व कुश्ती में अखाड़ा वह स्थान होता है जहाँ पर पहलवान अपनी शक्ति व शौर्य का प्रदर्शन करता है। देश में प्राचीन काल से राजा महाराजा व धनाढ्य वर्ग अखाड़ों का पोषण करते चले आ रहे हैं। जिससे पहलवानी सबसे प्राचीन खेल होने के साथ आज भी स्थान बनाये हुए है। अखाड़ों में पहलवान अपने शरीर सौष्ठव को बरकरार रखने के लिए नित नये दाँव पेंच का अभ्यास करते रहते हैं। जिसे विशेष अवसरों पर आयोजित दंगलों में प्रदर्शित करते हैं। कुश्ती अखाड़े से ही जानी जाती है।

राजा पटियाला, राजा खुद्दीपुर के अखाड़े, पुरानी परम्परा से अब तक संचालित हैं। जहाँ पर बड़े–बड़े प्रसिद्ध पहलवान कुश्ती लड़ चुके हैं। कानपुर में अखाड़ों का प्रारम्भ मनीराम पाण्डेय के अखाड़े से माना जाता है। मनीराम का अखाड़ा आज भी तपेश्वरी मन्दिर के पास बिरहाना रोड में स्थित है। परेड पर म्योर मिल के पास सरकारी अखाड़ा था जिसे अंग्रेजों के साथ महाराज प्रयाग नारायण तिवारी ने पोषण प्रदान किया। विशेष पर्व व उत्सव के साथ अखाड़ों में पहलवानी का अभ्यास किया जाता है। इन अखाड़ो की पंचायत शहर में छतई महराज ने कायम की थी। सन् 1840 में इनकी बैठकें भी होती रहती थी। पंचायतों में अखाड़ों के विभाग व खलीफा नामित किये जाते थे। बैठकों के निर्णय के अनुसार नये खलीफा पद के दोवदार से दावों के तोड़ व कुश्ती के नियमों के प्रश्न पूछकर परीक्षा लेते थे। इसके बाद नये खलीफा का चयन हो पाता था। खलीफा पदवी प्राप्त करने के बाद शहर भर के प्रत्येक अखाड़े को सवासेर मिठाई व मिश्री का खुज्जा भेजता था।

इस प्रकार अखाड़ों की परम्परा सन् 1950 तक बदस्तूर जारी रही। परिवर्तन इतना हुआ कि उस समय आधा सेर जलेबियाँ अखाड़ों में भेजी जाने लगी। अखाड़ों की भाषा में इसे डलिया कहते हैं। जो अखाड़ा पहलवानी की परम्परा व नियमों की अवहेलना करता तो उसकी डलिया पंचों की बैठक के बाद बन्द कर दी जाती थी। नये खलीफा को बनाने के लिए बैठक बुलाने के लिए जब अखाड़ों में इलायची भेजी जाती थी तो सभी पगड़ी बंद खलीफा एकत्र होकर नये खलीफा को मिलकर पगड़ी बाँधते थे। पगड़ी बाँधने की रस्म के साथ उच्च स्वर में एक निश्चित अखाड़े का खलीफा होने की घोषणा करते थे। उसी समय उसे उसके अखाड़े का हिसाब दिया जाता, जिसे वह जुलूसों में लेकर सबके आगे निकलता था। सन् 1950 में लगभग 55 पगड़ी बन्द खलीफाओं के अखाड़े मौजूद थे और लगभग इतनी ही संख्या में शौकिया पहलवानों के अखाड़े मौजूद थे। इन अखाड़ों में पहलवान के अलावा स्लामाई युवक भी दाँव पेंच सीखते थे।

विद्यालय का वार्षिकोत्सव

श्रुति गुप्ता
नवम 'क'

"हृदय सरल, संकल्प दृढ़ मेधा मण्डित भाल।
सुरसरि सम सरसित सदा पण्डित दीनदयाला।।

पं० दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म आश्विन मास विक्रम संवत् उन्नीस सौ तिहत्तर की कृष्ण पक्ष त्रयोदशी तदनुसार पच्चीस सितम्बर उन्नीस सौ सोलह को हुआ था। ऐसे महान व्यक्तित्व को अस्तित्व प्रदान करने वाली उनकी माता रामप्यारी देवी थी। पं० जी ने अपनी पढ़ाई का क्रम सन् उन्नीस सौ पच्चीस से आरम्भ किया। "सामान्य परिवार में जन्म लेकर असामान्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व धारण करना सामान्य बात नहीं है।

" यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते, लोकस्तदनुवर्तते।।"

दीनदयाल जी एक कर्मशील योगी महामानव, दृढ़ संकल्पी तथा समाजसेवी और प्रमाण शिल्पी थे। उनके अनुसार स्वाध्याय का अर्थ है अपने बारे में अध्ययन।

ग्यारह फरवरी उन्नीस सौ अड़सठ को वह क्रूर दिन आ गया जब भारतीय प्रजातन्त्र के राजनीतिक क्षितिज पर विचार कार्य और प्रगति की महान आशाएँ लेकर जो अति दिव्य जीवन उभर कर सामने आ रहा था उसे कुछ सत्तालोलुप नेताओं ने रहस्यास्पद स्थितियों में षड़यंत्र रचकर मार डाला।

फिर पड़ा काल का क्रूर हाथ, तुम चिरनिद्रा में लीन हुए।
किस वज्र हृदय से सहन करें, आश्चर्य, क्षुब्ध श्रीहीन हुए।।

पं० दीनदयाल जी की याद आते ही सबकी दृष्टि के सामने एक उज्जवल हिम शिखर मूर्तिमान हो उठता है जिसकी पृष्ठभूमि में सीमाहीन आकाश की नीलिमा और चरण प्रांत में हरिताभ वनश्री, पक्षियों का श्रुति मधुर संगीत, कलहासिनी नदियाँ और निर्झर विद्यमान हैं। ऐसे ही महान युगद्रष्टा पं० दीनदयाल जी की स्मृति में राष्ट्र निर्माण के संकल्प के साथ स्थापित पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय नें पं० जी के 96 वें जन्मोत्सव को अपने 42 वें वार्षिकोत्सव के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया। प्रस्तुत है इसी उत्सव की एक झलक–

कार्यक्रम की पहली कड़ी में पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय में आज अन्तर विद्यालयीय वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिन्दुस्तान समाचार पत्र के संपादक श्री प्रताप सोमवंशी जी थे। कार्यक्रम का शुभारंभ देव प्रतिमाओं पर माल्यार्पण तथा सरस्वती वन्दना से हुआ। कार्यक्रम में मंचासीन महानुभावों तथा निर्णायकों डॉ० सुमन सिंह, डॉ० आर०जी० पाण्डेय, डॉ० राकेश शुक्ल तथा प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी जी का परिचय विद्यालय के आचार्य डॉ० मनोज शुक्ल जी ने कराया।

वाद विवाद प्रतियोगिता का विषय था– "सरकारी नौकरियों में पदोन्नति में आरक्षण अनुचित हैं।"

सर्वप्रथम सरस्वती ज्ञान मंदिर इण्टर कालेज के भैया हार्दिक श्रीवास्तव ने विषय के पक्ष में आरक्षण को प्रतिभाहीन जनों को वैसाखी देने के समान बताया। विषय के विपक्ष में भैया रोहित श्रीवास्तव के अनुसार आरक्षण जनों को समानता दिलाता है। इसके बाद जयनारायण विद्या मंदिर के भैया राघव त्रिवेदी ने विषय के पक्ष में बोलते हुए आरक्षण को अलोकतांत्रिक बताया तो विपक्ष में भैया आदित्य दीक्षित ने आरक्षण को भारत में दलितों की प्रगति का एक मात्र कारण बताया। तत्पश्चात् डी०पी०एस० आजाद नगर के छात्र भैया देवांग ने विपक्ष में आरक्षण को ही दलितो की उन्नति में सहायक बताया जबकि भैया अभिषेक प्रताप सिंह के आरक्षण के समर्थन को वोट लोलुप सत्ता का षड़यंत्र बताया। बी०एन०एस०डी० शिक्षा निकेतन के भैया अनिमेष तिवारी ने आरक्षण देश में असमानता उत्पन्न होने का सर्वप्रमुख कारण बताया तो इसके विपक्ष में भैया अखिलेश प्रताप सिंह के अनुसार आरक्षण से ही देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाया जा सकता है। इसके बाद सेठ मोतीलाल खेड़िया सनातन धर्म इण्टर कालेज के छात्र नवेन्दु झा के अनुसार आरक्षण से सामान्य जनों की मेधा शक्ति का अपमान होता है तथा इसके विपक्ष में भैया सागर झा नें आरक्षण से दलितों के साथ होने वाले अन्याय को रोका गया है ऐसा बताया। तत्पश्चात् पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के छात्र सौरभ गुप्त ने आरक्षण को देश में विद्वेष उत्पन्न होने का कारण बताया। तो इसके विपक्ष में भैया आयुष त्रिपाठी ने आरक्षण को समर्थन करते हुए इससे होने वाले विकास को समाज का अंग बताया। छात्र वर्ग की अंतिम प्रस्तुति के रूप में सरस्वती विद्या मंदिर के छात्र देवांश राय ने पक्ष में बोलते हुए आरक्षण से सामान्य जनों को दलितों की स्थिति में पहुँचता हुआ बताया। तथा विपक्ष में भैया श्याम जी गौड़ ने आरक्षण को जातिवाद की समाप्ति का कारण बताया।

छात्रा वर्ग में प्रतियोगिता के प्रारम्भ में सर्वप्रथम ओंकारेश्वर विद्या निकेतन की छात्रा महिमा वर्मा ने "आरक्षण से जातिवाद को नहीं रोका जा सकता है" ऐसा बताया तो इसके विपक्ष में छात्रा कीर्ति तिवारी ने आरक्षण सर्वथा लोकहित में बताया। इसके बाद ज्ञान भारती इण्टर कालेज की छात्रा प्रतिभा गुप्ता ने विषय के पक्ष में बोलते हुए आरक्षण से सामान्य जनों व दलितों में बढ़ती दूरी का कारण बताया। और विपक्ष में छात्रा कीर्ति ने आरक्षण को देश के सम्यक भविष्य के निर्माण का कारण बताया। तत्पश्चात् नन्दलाल खन्ना इण्टर कालेज की छात्रा हिना चट्टानी ने पक्ष में बोलते हुए आरक्षण को सर्वथा अन्यायसंगत बताया तो इसके विपक्ष में बहन काजोल यादव के अनुसार आरक्षण से दलितों का मनोबल सुदृढ़ किया जा सकता है। इसके बाद सरस्वती ज्ञान मंदिर इण्टर कालेज की छात्रा कोमल सिंह ने पक्ष में कहा कि आरक्षण राजनीतिक दलों की स्वार्थ सिद्धि का परिणाम है। इसके विपक्ष में बहन आरती ने आरक्षण के बिना देश के विकास को असम्भव बताया। इसके बाद बी०एन०एस०डी० शिक्षा निकेतन की छात्रा निधि नीलाक्षी ने पक्ष बोलते हुए आरक्षण को समाज के भक्षण का कारण बताया। तो इसके विपक्ष में बहन ऋतिका भदौरिया ने आरक्षण को दलित वर्गों के परिश्रम को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक बताया।

इस प्रकार छात्र वर्ग एवं छात्रा वर्ग की वाद–विवाद प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इसी क्रम में मुख्य अतिथि श्री प्रताप सोमवंशी जी ने हमारे मुख को हमारे मस्तिष्क में संग्रह विचार रूपी निवेश का ए०टी०एम० बताया। उन्होंने हमें सरल से सरल भाषा के प्रयोग के लिए सुझाव दिया। इसके बाद महानुभाव डॉ० सुमन सिंह जी ने दलितों को आर्थिक सहायता देने के लिए कहा किन्तु आरक्षण का विरोध किया। तत्पश्चात् डॉ० राकेश जी ने भी हमारा मार्गदर्शन किया। अन्तिम क्षणों में इस प्रतियोगिता का परिणाम बताया गया। छात्र वर्ग में डी०पी०एस० आजाद नगर के भैया अभिषेक सिंह

(पक्ष) तथा पं० दीनदयाल विद्यालय के छात्र आयुष त्रिपाठी ने संयुक्त रूप से प्रथम स्थान प्राप्त किया। पं० दीनदयाल विद्यालय के ही छात्र भैया सौरभ गुप्त (पक्ष) ने द्वितीय तथा डी०पी०एस० के भैया देवांग (विपक्ष) तथा बी०एन०एस०डी० शिक्षा निकेतन के भैया अनिमेष तिवारी (विपक्ष) ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्रा वर्ग में सरस्वती ज्ञान मंदिर इण्टर कालेज की छात्रा कोमल सिंह (पक्ष) ने प्रथम, श्री नन्द लाल खन्ना इण्टर कालेज की छात्रा हिना चट्टानी (पक्ष) ने द्वितीय तथा कीर्ति तिवारी (विपक्ष) व महिमा वर्मा (पक्ष) ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार छात्र वर्ग में पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय तथा छात्रा वर्ग में ओंकारेश्वर विद्या निकेतन प्रथम स्थान पर रहा।

कार्यक्रम की अगली कड़ी के रूप में 25 सितम्बर का कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 25 सितम्बर की सांध्य बेला में विद्यालय में प्रवेश करते ही चित्ताकर्षक द्वार ने मेरा मन मोह लिया और मन में कार्यक्रम के प्रति उत्सुकता जगाने में उत्प्रेरक की भाँति कार्य किया। कार्यक्रम के आरम्भ होने में केवल 25 मिनट ही शेष हैं। साज सज्जा, मंच, ध्वनि, विस्तारक, यन्त्र, प्रकाश सभी की व्यवस्थाएँ पूर्ण हो चुकी हैं। छात्रों व छात्राओं में उमंग उत्साह की लहरें हिलोरे मार रही हैं। बड़ें छात्र कुछ गम्भीर परन्तु उत्साहित और उत्तरदायित्वों के प्रति सजग हैं। "समय का सदुपयोग" बहुत ही छोटी और उपयोगी आदत होती हैं। इसी का अनुसरण करते हुए कार्यक्रम निर्धारित समय पर आरम्भ हुआ। और साथ में मुख्य अतिथ माननीय श्री अरूण जी तथा अन्य गणमान्य अतिथियों का सामूहिक स्वागत हुआ। विद्यालय की परम्परा और भारतीय संस्कृति का निर्वाह करते हुए छात्र–छात्राओं द्वारा माँ शारदे की स्तुति की गई। इसके पश्चात् मुख्य अतिथि श्री अरूण जी (अखिल भारतीय सह सम्पर्क प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ) ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि, "महापुरूषों का स्मरण सदैव आत्म अवलोकन और आत्मशुद्धि का अवसर होता है।" उन्होंने कहा कि "दीनदयाल जी का जन्मदिन हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है। देश की गुलामी के कालखंड में दीनदयाल जी का जन्म हुआ। उनके जीवन में अनेक बाधाएँ आईं परन्तु बाधाओं का सामना करते हुए उन्होंने जीवन में ध्येय निष्ठा का परिचय दिया। अभावों के होते हुए भी उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। देश को आजाद कराने के कारण दीनदयाल जी ने अपने जीवन के अन्दर राष्ट्र को लक्ष्य मानकर अपने जीवन को व्यतीत किया। दीनदयाल जी के जीवन का दूसरा पहलू दृढ़ निश्चय था। दीनदयाल जी नेता ही नहीं अपितु समाज सुधारक थे। दीनदयाल जी कथन था कि भारत न केवल विशाल राष्ट्र बनेगा। अपितु अन्य राष्ट्रों का मार्गदर्शक भी बनेगा। दीनदयाल जी के अनुसार हर राष्ट्र की एक आत्मा होती है और भारत की आत्मा धर्म है तथा धर्म के आधार पर राष्ट्र निर्माण करना है।" इसके बाद उन्होंने दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद भाव का वर्णन किया और प्रशंसा भी की। अपने अंतिम शब्दों में उन्होंने दीनदयाल जी के वचनों में कहा" विचारधारा आदर्शों व आचरण के बिना कुछ नहीं है।" अन्य गणमान्य मंचासीन महानुभावों में प्रमुख रूप से विद्यालय कार्यकारिणी समिति के सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह अध्यक्ष डॉ० ज्ञानचन्द्र अग्रवाल, पं० रामबालक मिश्र तथा प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी आदि थे। अतिथियों के स्वागत में एन०सी०सी० तथा घोष के उत्कृष्ट प्रदर्शन हुए। एक कहावत है कि–

"उत्तम स्वास्थ्य में ही उत्तम मस्तिष्क रहता है।"

इसी को चरितार्थ करते हुए छात्रों द्वारा योग प्रदर्शन किए गए। तत्पश्चात् विद्यालय के कुछ छात्रों ने मार्शल आर्ट का प्रदर्शन किया, हाथों से ईंट तोड़ने का कार्यक्रम हुआ तथा छात्रों के माध्यम से

पिरामिड का निर्माण भी किया गया। छात्रों ने तिष्ठ योग, द्रुत योग तथा जूडो एवं मार्शल आर्ट का प्रदर्शन कर उपस्थित जनसमूह को मुग्ध कर लिया।

इसके बाद मेधावी छात्र अलंकरण समारोह हुआ। इण्टरमीडिएट के मेधावी छात्रों में नीरज कुशवाहा, प्रियम सिंह, ज्ञानेन्द्र अवस्थी, मृत्युंजय शुक्ल, आयुष द्विवेदी तथा हाईस्कूल के मेधावी छात्रों में प्रफुल्लित त्रिपाठी, अलंकृत गुप्त, केशव तिवारी, अभय द्विवेदी, गौतम झा और अंकित शुक्ल थे। इसके बाद एन०सी०सी० के सीनियर डिवीजन के सर्वश्रेष्ठ कैडेट रणविजय सिंह, आदित्य तथा जूनियर डिवीजन के सर्वश्रेष्ठ कैडेट परमवीर कुमार व कमलेश कुमार को सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् घोष, बालीबॉल, क्रिकेट तथा तैराकी के सर्वश्रेष्ठ छात्रों को भी सम्मानित किया गया। तदुपरान्त पुरस्कार वितरण कार्यक्रम उल्लास और करतल ध्वनि के मध्य समाप्त हुआ। इस प्रकार योग प्रदर्शन तथा मेधावी छात्र अलंकरण समारोह के बाद प्राचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी ने वार्षिक आख्या प्रस्तुत की। विद्यालय के संस्थापक बैरिस्टर नरेन्द्र जीत सिंह के जन्म शताब्दी वर्ष पर विद्यालय की पत्रिका "नीराजन" का विमोचन माननीय मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। जिसके संपादक श्री दुर्गेश वाजपेयी तथा तृप्ति प्रेम जी थी।

कार्यक्रम का संचालन तरूण भारती के अध्यक्ष भैया पार्थ निगम के द्वारा हुआ। धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय प्रबन्ध समिति के सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी ने किया।

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय में वार्षिकोत्सव के अंतिम दिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य आयकर आयुक्त श्री गिरीश नारायण पाण्डेय जी थे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्राचार्य जी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। भारतीय परम्परा है कि किसी भी शुभ कार्य करने से पूर्व हम आराध्य की वंदना करते हैं। इसलिए कार्यक्रम का शुभांरभ देव प्रतिमाओं तथा पं० दीनदयाल जी के चित्र पर पुष्पार्पण के साथ हुआ। इसी शृंखला में छात्र–छात्राओं द्वारा माँ शारदे की स्तुति की गयी। मुख्य अतिथि श्री पाण्डेय जी का स्वागत प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी ने किया तथा आचार्य श्री दिनेश जी ने परिचय कराया। मुख्य अतिथि श्री पाण्डेय जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि " जितना हम प्रकृति से जुड़ाव करेंगे। उतना ही हम लाभान्वित होंगे। हम जिसका–जिसका दुःख दर्द समझते हैं वहाँ–वहाँ तक हमारे शरीर का विस्तार हो जाता है। इस धरती पर ईश्वर ने किसी भी बच्चे को बिना गुण के नहीं भेजा है, अतः इस धरती पर सभी बच्चे अद्वितीय है, वे एक प्रकार के बीज हैं जो आगे बढ़कर फल फूलकर पेड़ बनेंगे तथा देश और हमारे राष्ट्र को सजायेंगे। गुरु अगर सच्चा हो तो बच्चे के महान बनने में कोई समय नहीं लगता।"

कार्यक्रम का संचालन किशोर भारती के मंत्री भैया प्रशान्त सिंह के किया। धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय प्रबंध समिति के सचिव श्री वीरेन्द्र जीत सिंह जी ने किया।

हमारे संस्कृत ग्रंथों में एक श्लोक कहा गया है कि –

साहित्यसंगीतकलाविहीन : साक्षात्पशुपुच्छ विषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद् भागधेयं परमं पशूनाम्।।

इसलिए रंगमंचीय कार्यक्रमों में विद्यार्थियों ने सोत्साह प्रतिभाग किया। कक्षा षष्ठ, सप्तम व अष्टम की बालिकाओं के द्वारा सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की गयी। कक्षा प्रथम व द्वितीय के

छात्र–छात्राओं के द्वारा "बम बम भोले" गीत नृत्य प्रस्तुत किया गया। कक्षा प्रथम से पंचम तक के छात्रों व छात्राओं के द्वारा "भारत एक अनोखा राष्ट्र" नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गयी जिसमें भारत के सभी प्रदेशों के नृत्य प्रस्तुत कर अनेकता में एकता के दर्शन कराए गए तथा उन सभी प्रदेशों की झाँकियाँ निकाली गयीं। इसके बाद कक्षा तृतीय व पंचम के छात्र–छात्राओं के द्वारा "राधा कृष्ण" नृत्यनाटिका प्रस्तुत की गयी। तत्पश्चात् विद्यालय के षष्ठ से द्वादश तक के छात्र–छात्राओं और आचार्यों एवं आचार्याओं के अथक परिश्रम के बाद तैयार किए नाटक "गंगावतरण" का सफलता पूर्वक मंचन हुआ। इस नाटक में गंगा के अवतरण की पौराणिक कथा दिखाई गयी। कपिल मुनि के शाप से राजा सगर के साठ हजार पुत्र भस्म हो गए थे उनके उद्धार के लिए भगीरथ ने कठोर तप कर गंगा का अवतरण कराया जिसे भगवान शंकर ने अपनी जटाओं में संभाल लिया। बाद में इस नाटक में यह भी दिखाया गया कि गंगा को किस तरह से लोग प्रदूषित कर रहें हैं। नाटक में मुख्य भूमिका देवांश ब्रह्मांश, अनुकृति, ऐश्वर्या आदि ने निभाई। नाटक का निर्देशन श्रीमती शारदा राव तथा श्रीमती रेखा निगम ने किया। नाटक की पटकथा आचार्य श्री दुर्गेश वाजपेयी ने लिखी। पार्श्व गायन संगीताचार्य श्री अंकुर दुबे ने किया।

सरकारें बदलती हैं नेता बदलते हैं लेकिन,
आम आदमी का दर्द दूर नहीं होता।

इस अवसर पर हास्य नाटक सनसनी न्यूज चैनल अभिनीत किया गया। यह हास्य व्यंग्य प्रधान संक्षिप्त प्रहसन था। जिसमें भ्रष्टाचार की समस्या को उजागर किया गया। प्रहसन में एक न्यूज चैनल का दफ्तर है जिसका एंकर एक–एक करके कुछ भ्रष्ट नेताओं से बातचीत करता है तथा प्रधानमंत्री से भी बात करता है। एक मंत्री का संवाद चल ही रहा होता है। कि पुलिस बीच में ही उसे पकड़ कर ले जाती है। तथा दूसरे भ्रष्ट मंत्री जनता तब आक्रमण करती है जब उसका इंटरव्यू चल रहा होता है। प्रहसन के अंत में मंच पर हिन्दुस्तान के आम आदमी का प्रवेश होता है और वह जनता की व्यथा को स्वर देता हुआ भावुक हो जाता है। यह नाटक आचार्य श्री दुर्गेश वाजपेयी ने लिखा तथा निर्देशित किया। कार्यक्रम में मुख्य भूमिका चि० पार्थ निगम, श्रवण तिवारी, अंकित गुप्त, व राजदीप ने निभाई।

इसी के साथ बहुरंगी सांस्कृतिक कार्यक्रम का समापन करतल ध्वनि के मध्य समाप्त हुआ। प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अपने विद्यालय में पं० दीनदयाल के जन्मोत्सव का कार्यक्रम अत्यंत हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

चरैवेति! चरैवेति।
"मृत्यु शाम है यों न ढलते रहिए,
जिंदगी भोर है, सूरज से निकलते रहिए,
एक पाँव पर ठहरेंगे तो थक जायेंगे।
धीरे–धीरे ही सही राह पर चलते रहिए।"

नवम कक्षा की निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

परोपकार

रोहन मुकेश
नवम 'ख'

प्रस्तावना :

"परहित सरिस धरम नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।" संसार में भलाई करने से अच्छा कोई कार्य नहीं है तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाने से बड़ा कोई पाप नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास जी की इन पंक्तियों ने धर्म की सुन्दर परिभाषा को प्रस्तुत किया।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा कोई भी व्यक्ति पूर्ण मानव तब तक नहीं है जब तक वह दूसरों के लिए कुछ करता नहीं है। समाज में सभी को एक दूसरें से सहयोग की आवश्यकता है। मनुष्य भी जानवरों पर दूध–दही व वृक्षों पर फल–फूल व अन्नादि तथा जल के लिए बादल व नदियों पर निर्भर रहता है। यह सभी बातें धर्म का सन्देश देती है।

परोपकार मानवीय धर्म

वृत्रासुर का वध करने के लिए देवताओं ने महर्षि दधीचि से अस्थि का दान माँगा। इस पर दधीचि ने अपनी अस्थियों को वज्र बनाने हेतु दान दे दिया। जिससे बने वज्र से वृत्रासुर का वध हुआ। इस प्रकार दधीचि ने मानवीय परोपकार का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। इस त्याग भावना के कारण मनुष्य भी देवतुल्य हो जाता है। इसी प्रकार महाराजा शिवि ने करूणा भावन के वशीभूत होकर एक कबूतर की बाज से रक्षा करने के लिए अपना माँा खिलाकर बाज की बुभुक्षा पूरी करवाई व इस प्रकार उन्होंने भी परोपकार में प्रतिमान स्थापित किया। हमारे देश में अनेक उदाहरण हैं परोपकार के अनेकों महाराजाओं ने अपनी प्रजा हेतु सर्वस्व दान दे दिया इसीलिए कहा गया है –

क्षुधार्त्त रन्तिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया अस्थि जाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमाँस दान भी दिया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर चर्म भी दिया।
अनित्य देह कि लिए अनादि जीव क्या डरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए न मरे।

प्रकृति में परोपकार

प्रकृति में परोपकार अप्रतिहत गति से चलता दिखाई देता है। सूर्य बिना किसी जाति–देश, समानता–असमानता के भाव के उष्णता व पौधों व सभी के जीवनोपयोगी तत्व देता है। वायु जीवदायिनी गैस प्रदान करती है। वृक्ष फल, फूल, पत्तियाँ, शाखायें, छाल इत्यादि बिना किसी भेदभाव के प्रदान करता है। नदियाँ झरने पिपासा शान्त करने हेतु अमृतमय जल प्रदान करती हैं। नदी तो परोपकार की देवी है। चन्द्रमा रात्रि को प्रकाश व शीतलता प्रदान करता है। इसीलिए कहा गया है–

बृच्छ कबहुँ नहिं फल भखैं, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।।

जब प्रकृति इतना सब कुछ करती है तो जो मनुष्य उसी की देन है दूसरों के लिए थोड़ा समय क्यों नहीं प्रदान कर सकता?

परोपकारः मानवता का परिचायक

परोपकार से भाई चारे की भावना का विकास होता है। परोपकार आपसी द्वेष को नष्ट करता है। परोपकार करने से ही मनुष्य देवतुल्य बन सकता है इसीलिए कहा गया है–

सूर्य, चन्द्र, भू, सरिता, पेड़, बादल कर पर उपकार।
बन जाते हैं देवतुल्य क्या, सचमुच देवता के अवतार।।

परोपकार विश्वबन्धुत्व की भावना को बढ़ाता है। परोपकार के बारे में अट्ठारह पुराणों के रचयिता महर्षि वेदव्यास जी ने परोपकार को पुण्य तथा परपीड़ा को पाप कहा है।

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

इसी भाँति परोपकारी राजा रन्तिदेव ने अड़तालीस दिन भूखे रहने के बाद उन्चासवें दिन जब भोजन प्राप्त हुआ तब एक याचक द्वारा माँगे जाने पर वह उसे दान दे दिया। मृत्यु पर उन्हें स्वर्ग या मोक्ष की चिन्ता नहीं बल्कि उन्होंने सबकी पीड़ा दूर करने का वरदान माँगा।

परहित बस जिनके मन माँही, तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।

निःस्वार्थ परोपकार जो लोग करते है उन्हें एक अन्य आनन्द की अनुभूति होती है। वह सब कार्य जब हम किसी रोगी को दवा, ठिठुरते व्यक्ति को वस्त्र व प्यासे को पानी प्रदान करते हैं तब हम स्व व पर के भेद से अलग कुछ करते हैं। यह करने पर हम ब्रह्मानन्द की प्राप्ति करते हैं।

परोपकार के विविध रूप

परोपकार के अनेकों रूप है जैसे–धर्मशाला, विद्यालय, निःशुल्क लंगर, सदाव्रत, प्याऊ, जलाशय, वस्त्र देकर, अनेकों कार्य करके परोपकार कर सकते हैं।

रहिमन यों सुख होत है, उपकारी के संग।
बाँटनवारे को लगे, ज्यों मेंहदी के रंग।।

जिस प्रकार मेंहदी बाँटने वाले को मेंहदी लग जाती है उसी प्रकार परोपकारी को अपार आनन्द की प्राप्ति होती है। परोपकार हेतु मनुष्य को जहाँ पुल नहीं वहाँ पुल बनाये, सड़कें, नाली आदि बनवायें। लड़कियों को स्वावलम्बन का प्रशिक्षण, शिक्षा आदि सभी परोपकार है। नेता इत्यादि स्वार्थ की पूर्ति न करते हुए देश समाज के लिए कार्य करें। जो एक सामान्य तर्क है कि सिर्फ धनवान ही परोपकार सकते हैं यह गलत है एक सामान्य व्यक्ति भी यदि राह में पड़े केले के छिलके को उठाकर

सही जगह डाल देता हैं तो वह भी परोपकार है। यदि किसी वृद्ध को गन्तव्य तक पहुँचा देता है। तो वह भी परोपकार है।

परोपकार आत्म उत्थान का मूल :

परोपकार ही क्षुद्र को महान तथा विरल को विराट बनाता है। भारतीय संस्कृति का लक्ष्य ही एक मात्र प्राणी की जीवनरक्षा है। यह मनुष्य का समिष्टमय स्वरूप है। इससे मानव के अन्दर उदारता बढ़ती है व आनन्द की प्राप्ति करता है इसीलिए कहा गया है

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत।।

परोपकार पर मैथलीशरण गुप्त ने भी कहा है–

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

जो स्वयं के लिए जीता है वह पशु है व जो दूसरों की मदद करता है वह मनुष्य और जो सम्पूर्ण जीवन दूसरों के लिए लगाये वह महात्मा है। इसीलिए कहा गया है–

पर उपकार बचन, मन, काया।
सन्त सहज सुभान खगराया।।

उपसंहार

मनुष्य परोपकार से अक्षय कीर्ति धारण करते हैं व युग युगान्तर के लिए प्रणम्य हो जाते हैं इसीलिए कहा गया है वसुधैव कुटुम्बकम्' 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' ऐसी प्रेरणा हमें अपनी भारतीय संस्कृति से मिलती है। परन्तु आजकल परोपकार का स्वरूप बदल गया हैं आज लोग अपने स्वार्थ के लिए परोपकार करते हैं कोई नेता 'गरीबी हटाओ' के नारे लगाकर अपना वोट बैंक पक्का करता है तो कोई किसी वर्ग को आरक्षण दिलाकर या तो कोई अपनी सम्पत्ति को छिपाने हेतु औषधालय खुलवा देता है। वास्तव में यदि कहीं पर भी सुख या संवर्धन लाना है तो वहाँ परोपकार करना होगा व परोपकार के आधिक्य से ही प्रसन्नता होगी।

❁ ❁ ❁

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्।।

गीता ७।१३

इन तीनों गुणरूप भावों से मोहित यह सम्पूर्ण जगत् (प्राणिमात्र) इन गुणों से अतीत अविनाशी मुझे नहीं जानता।

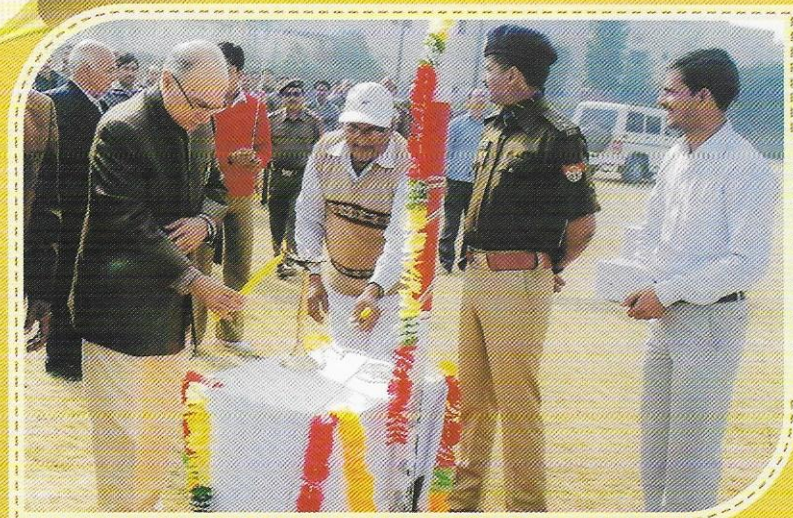

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का दीप प्रज्वलन के साथ उद्घाटन करते हुए प्रबन्ध समिति के सचिव मा० श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी, मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार साहनी (एस०पी० : बुलन्दशहर) के साथ क्रीड़ा आचार्य श्री सुभाष जी तथा श्री किशन जी।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के उद्घाटन अवसर पर स्वागत-प्रदक्षिणा करते हुए घोष के छात्र तथा अनुगमन करता हुआ छात्राओं का दल (शान्ति कुंज)

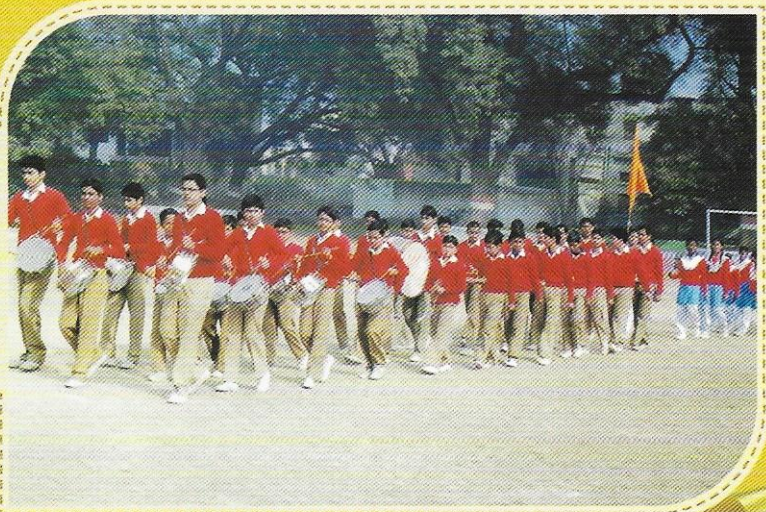

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के अवसर पर मंच पर विराजमान विद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष डॉ० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल तथा मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार साहनी (एस०पी० : बुलन्दशहर)

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के मैदान पर विद्यालय की छात्राओं का दल (शांति कुंज), जिसका नेतृत्व कर रही हैं - कु० अनुकृति शुक्ला

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के प्रथम दिन शपथ-ग्रहण करते हुए सभी कुंजों के प्रमुख छात्र तथा कु० अनुकृति और शपथ दिलाते हुए विगत-वर्ष के चैम्पियन चि० रणविजय सिंह

जोर लगाकर आगे आओ
बाधाओं से मत घबराओ

विजय स्तम्भ पर खड़े विजेता छात्र, साथ में मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार साहनी (एस0पी0 - बुलन्दशहर) तथा विद्यालय के क्रीड़ा आचार्य

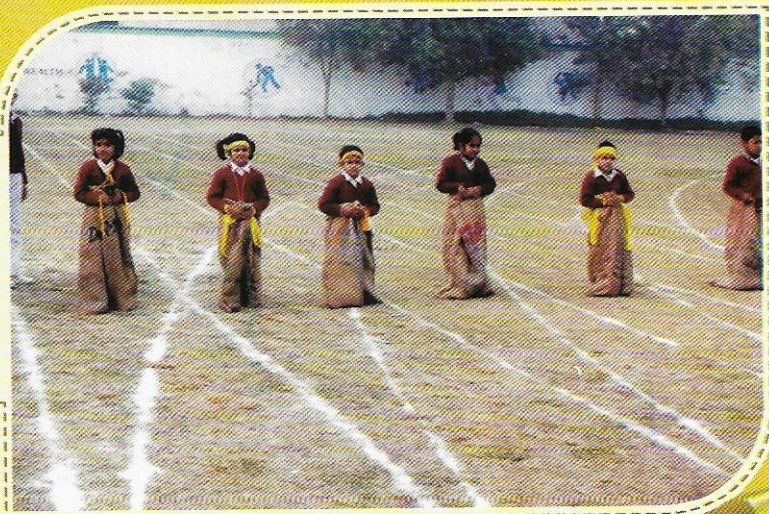

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में बोरा दौड़ में भाग लेते प्राथमिक कक्षाओं के छात्र

'चाकलेट रेस' में कक्षा द्वितीय के शिशु

मेधावी छात्र

91.5 प्रतिशत अंक

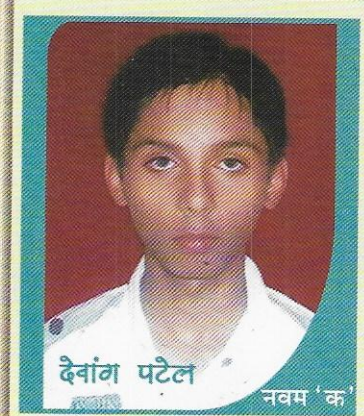

91.1 प्रतिशत अंक

94.5 प्रतिशत अंक

91.5 प्रतिशत अंक

94.5 प्रतिशत अंक

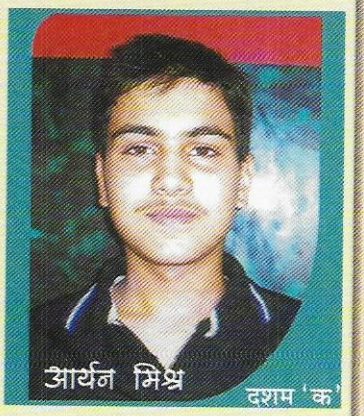

निबंध लेखन प्रतियोगिता
में दशम कक्षा में प्रथम

एकादश कक्षा की
कविता-लेखन प्रतियोगिता में
द्वितीय

कविता-लेखन प्रतियोगिता
में दशम कक्षा में प्रथम स्थान

गणतंत्र दिवस

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर गोल प्रांगण में पंक्तिबद्ध खड़े विद्यालय के छात्र और शिक्षक गण

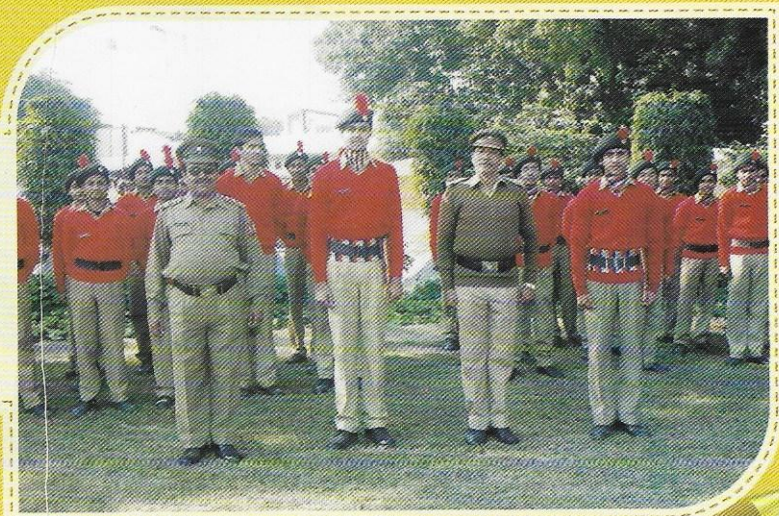

एन०सी०सी० कमाण्डर चि० परमवीर तथा चि० रणविजय के साथ उनके ए०एन०ओ० श्री सतीश जी तथा श्री श्रीप्रकाश ओझा जी

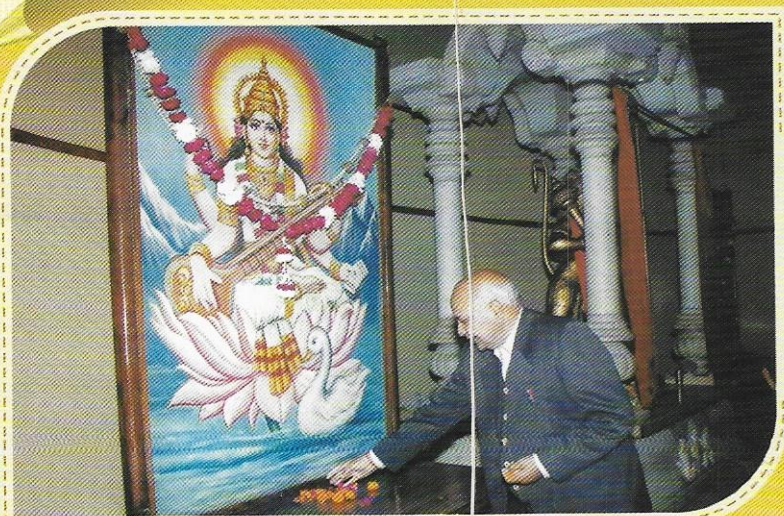

माँ सरस्वती के श्री चरणों में पुष्पार्पण करते हुए वरिष्ठ आचार्य श्री महेश जी

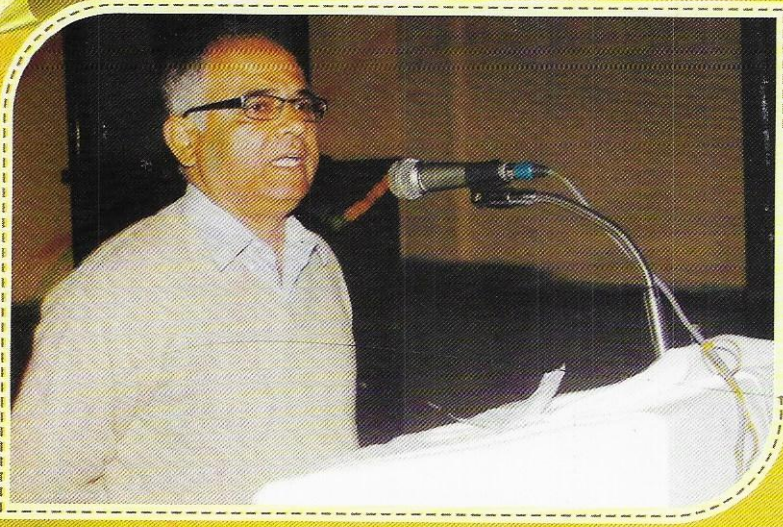

ज्ञानात्मक सम्वेदना से सम्पन्न डॉ0 योगेन्द्र भार्गव जी, छात्रों को उद्बुद्ध करते हुए

मा0 प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी का स्वागत करते हुए आचार्य श्री महेश जी

किशोर भारती के मंत्री चि0 प्रशान्त सिंह गणतन्त्र दिवस के कार्यक्रम का संचालन करते हुए

विज्ञान-प्रदर्शनी

विज्ञान-प्रदर्शनी में अपने प्रदर्शों के साथ तत्पर, प्रतीक्षारत प्रतिभागी छात्र

विज्ञान-प्रदर्शनी में पधारे मुख्य-अतिथि डॉ० डी०एन० रायज़ादा (गर्वनर : रोटरी क्लब) नवम कक्षा के छात्र चि० अश्विनी अग्निहोत्री से उनके प्रदर्श के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर करते हुए

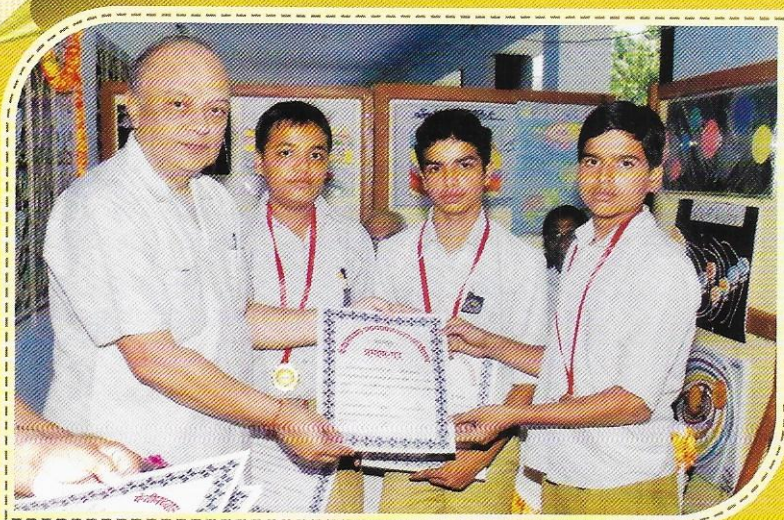

विज्ञान-प्रदर्शनी में विजेता छात्रों को प्रमाण-पत्र देते हुए डॉ० रायज़ादा (गर्वनर : रोटरी क्लब)

वाद-विवाद प्रतियोगिता

वाद-विवाद प्रतियोगिता में अपने विद्यालय की द्वादश कक्षा के छात्र चि० सौरभ गुप्त ने प्रभावी तर्क प्रस्तुत किये

वाद-विवाद प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में पधारे डॉ० राकेश शुक्ल (रीडर, हिन्दी विभाग : वी०एस०एस०डी० कॉलेज, कानपुर)

वाद-विवाद प्रतियोगिता में मुख्य अभ्यागत के रूप में पधारे 'हिन्दुस्तान' के दिल्ली संस्करण के सम्पादक श्री प्रताप सोमवंशी ने छात्रों को सहज भाषा के महत्त्व के बारे में बताया

विद्यालय का वार्षिकोत्सव

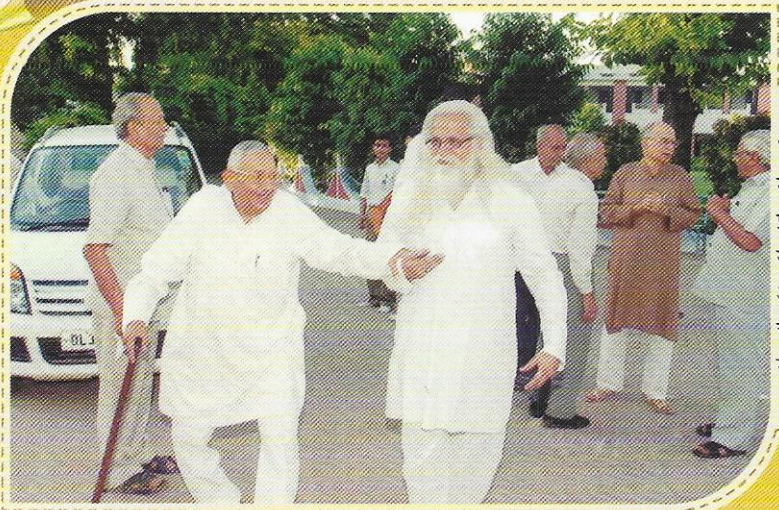

'बंकिम पग, नतपृष्ठ, दीप का लिया सहारा, दिया सहारा बहुतों को, मन अब तक न हारा।'
प्रबन्ध समिति के वरिष्ठ सदस्य पं० रामबालक मिश्र जी को 'माधव-स्मृति-प्रांगण' की ओर ले जाते पूर्व आचार्य श्री दीपक जी, पीछे बाँयी ओर डॉ० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल जी तथा दाहिनी ओर मा० सचिव जी गण्यमान्य अतिथियों के साथ

कार्यक्रम-स्थल की ओर प्रस्थान करते हुए मा० अरुण जी (अखिल भारतीय सह संपर्क प्रमुख : राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ) साथ में विद्यालय की अहर्निश चिन्ता करने वाले, सचिव मा० श्री वीरेन्द्रजीत सिंह जी तथा मा० प्रधानाचार्य जी)

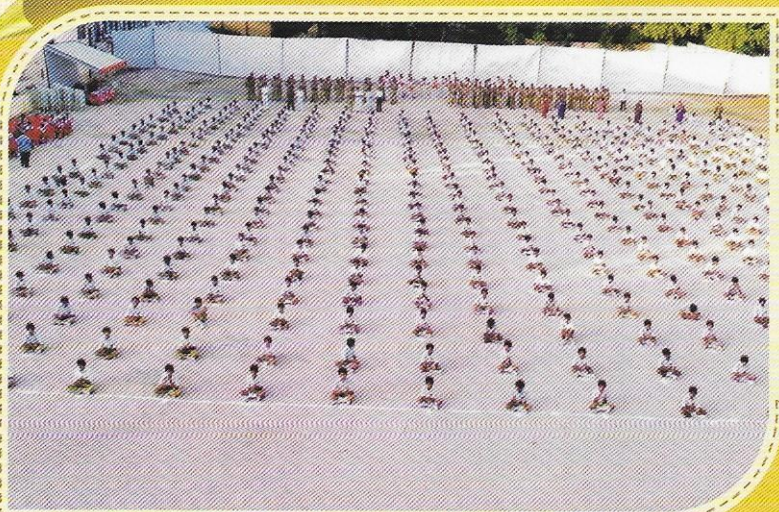

मा० अरुण जी के विचारों को ध्यान से सुनते हुए विद्यालय के छात्र और अध्यापक

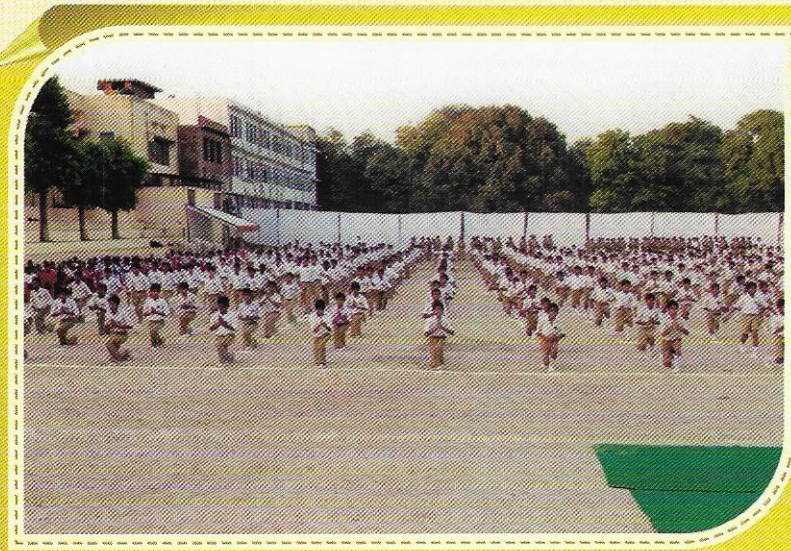

वार्षिकोत्सव के मुख्य दिवस पर योग-व्यायाम करते हुए विद्यालय के छात्र

नवम से एकादश तक के छात्र ताइक्वांडो में ईंट तोड़ते हुए

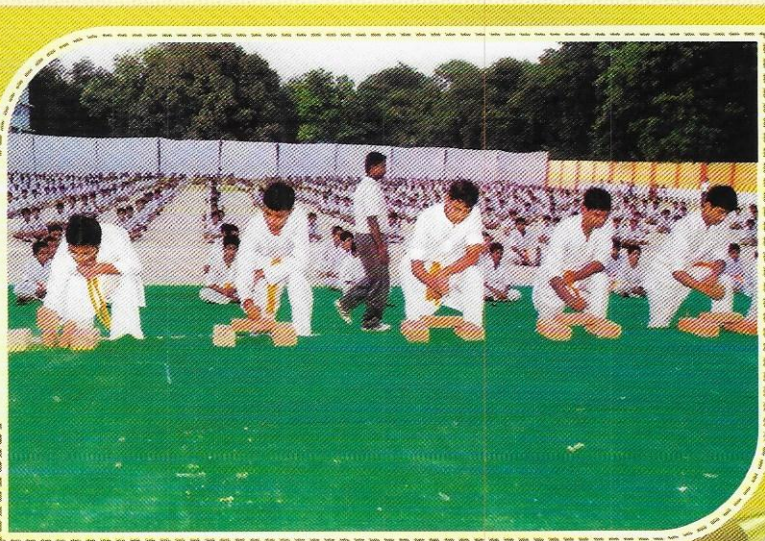

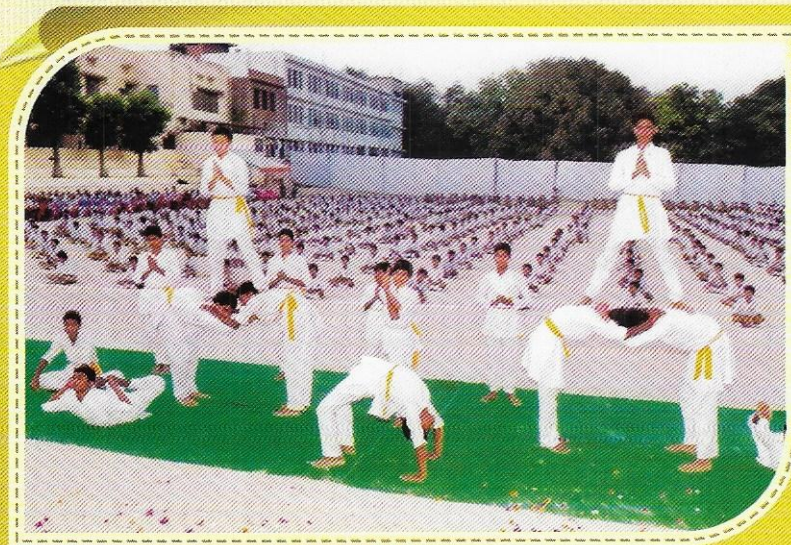

कक्षा से नवम तक के छात्र पिरामिड रचना करते हुए

आयकर आयुक्त श्री गिरीश नारायण पाण्डेय का स्वागत करते हुए प्रधानाचार्य श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी जी

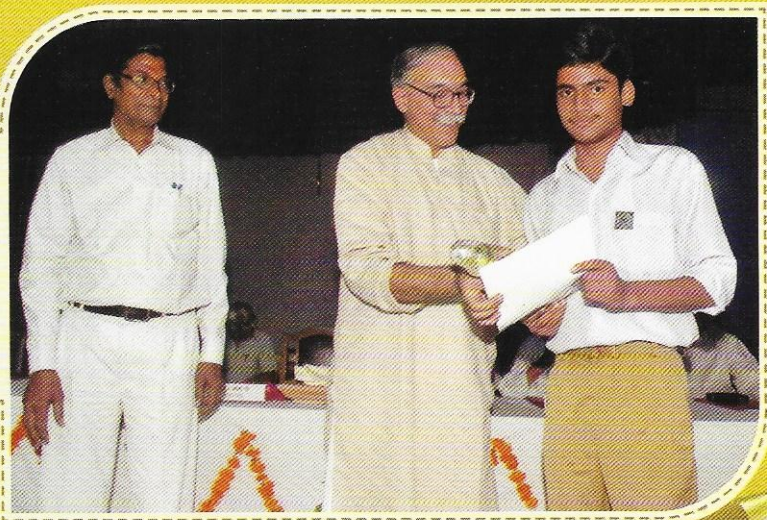

मेधावी और सौम्य चि० अभय द्विवेदी को पुरस्कृत करते हुए मा० अरुण जी

कुशाग्र मेधा के धनी प्रिय अलंकृत को प्रोत्साहित करते हुए मा० अरुण जी तथा मा० प्रधानाचार्य जी

रंगमंचीय कार्यक्रम

मनोहर नृत्य करती हुई वात्सल्य मंदिर की छात्रा कु0 दिव्या अधिकारी

गंगावतरण के लिए महादेव की प्रार्थना करते हुए भागीरथ (महादेव : चि0 प्रियांशु तथा भागीरथ : चि0 देवांश भारद्वाज)

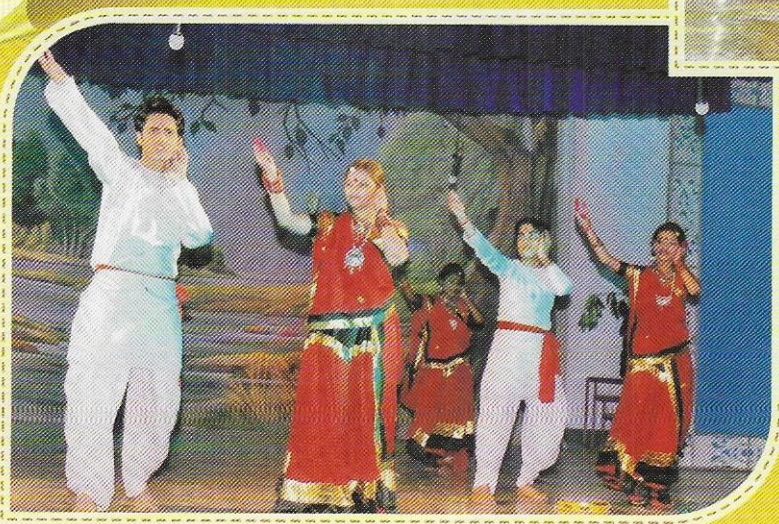

लोक-नृत्य (चि0 शिवम राजपूत, कु0 कृतिका मिश्रा व अन्य)

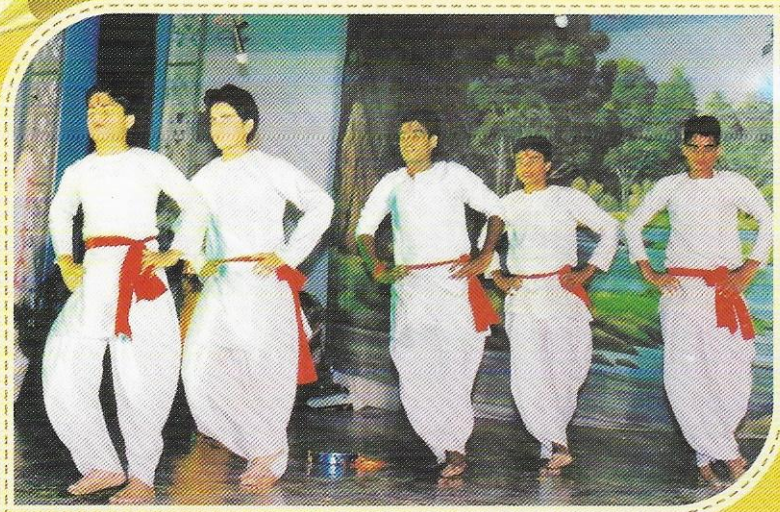

रंगमंचीय कार्यक्रम में नृत्य करते छात्र
(चि० शिवम्, चि० शान्तनु साथियों के साथ)

गंगावतरण पर केन्द्रित नाटक में दुर्गा-पूजा का दृश्य (चि० आदित्य व छात्राएँ)

'भ्रष्टाचार' पर केन्द्रित प्रहसन में न्यूज़ एंकर के रूप में चि० पार्थ मुकेश कलमाड़ी का इंटरव्यू करते हुए

हास्य नाटक 'सनसनी न्यूज़ चैनल' में न्यूज़ एंकर (पार्थ निगम) डी0 राजा का इंटरव्यू करते हुए

सनसनी न्यूज़ चैनल में एंकर ने मैकमोहन सिंह से भी तीखे सवाल किए, जिसके उन्होंने हँसाने वाले उत्तर दिए

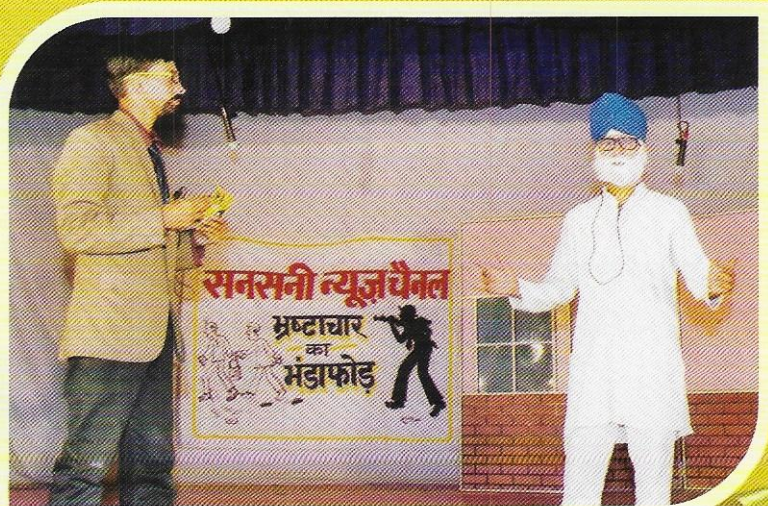

समाचारों के बीच विज्ञापनों का प्रसारण भी हुआ। एक केश-तेल का प्रचार करते हुए चि0 गोविन्द मिश्र

नवम कक्षा की निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान

स्वदेश-प्रेम

अनुकृति शुक्ला
नवम 'क'

प्रस्तावना :

'ईश्वर की सर्वाधिक अद्भुत रचना है 'जननी' जो स्नेह की मधुर बयार है प्रेम का पर्याय है, संस्कारों के पौधों को ममता के जल से सींचने वाली चतुर उद्यान रक्षिका है। जननी निःस्वार्थ प्रेम की प्रतीक है। यही बात जन्मभूमि के विषय में भी सत्य है। जननी और जन्मभूमि का स्नेह और दुलार जिसने प्राप्त कर लिया उसे स्वर्ग का पूरा–पूरना अनुभव धरा पर ही हो गया।

जिस समय लक्ष्मण जी ने स्वर्ण की बनी लंका की प्रशंसा की उस समय रामचन्द्र ने 'जननी और 'जन्मभूमि' की महिमा स्वर्ग से भी बढ़कर बतायी। उन्होंने कहा

"अपि स्वर्णमयी लंका लक्ष्मण मे न रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।"

वास्तव में जिसे अपनी मातृभूमि से प्रेम नहीं, अपने देश पर गर्व नहीं , वह पत्थर के समान है–

'जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

देश–प्रेम की स्वाभाविकता

प्रेम मानव का स्वाभाविक गुण है। प्रेम के अभाव में जीवन सारहीन है। 'प्रेम' एक ऐसा वशीकरण मन्त्र है जिससे मानव तो क्या पशु–पक्षी भी वश में आ जाएँ। यह प्रेम विभिन्न रूपों में प्रकट होता है, जैसे जाति प्रेम, धर्म प्रेम, देश प्रेम आदि परन्तु देशप्रेम ही सर्वोपरि है।

प्रत्येक देशवासी को अपने देश से अनुपम प्रेम होता है। अपना देश चाहे बर्फ से ढका हो चाहे गर्म रेत से भरा, वह सबके लिए प्रिय होता है। ठीक ही कहा गया है–

विषुवत् रेखा का वासी जो जीता है नित हाँफ–हाँफ कर,
रखता है अनुराग अलौकिक वह भी अपनी मातृभूमि पर।
ध्रुववासी जो हिम में तम में, जी लेता है काँप–काँप कर,
वह भी अपनी मातृभमि पर, कर देता है प्राण निछावर।।

एक बहुत प्रसिद्ध किंवदन्ती है कि एक व्यक्ति ने देखा कि वृक्ष में आग लग गई है तो उसने वृक्ष पर बैठे पक्षियों से पूछा–

आग लगी इस वृक्ष में, जलते इसके पात।
तुम क्यों जलते पक्षियों, जब पंख तुम्हारे पास।।

पक्षियों उत्तर दिया–

फल खाए इस वृक्ष के, बीट लथेड़े पात।
यही हमारा धर्म है, जलें इसी के साथ।।

जब पशु–पक्षियों को अपनी जन्मभूमि से इतना लगाव है तो मानव को क्यों नहीं ? वह तो ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है।

अपने देश के हजारों दुःख परदेश के सुखों से श्रेयस्कर हैं। अपनी टूटी–फूटी झोपड़ी का सुख पराये महलों में भी दुर्लभ है।

देश–प्रेम का अर्थ

देश प्रेम का अर्थ है यहाँ कि प्रत्येक जड़–चेतन वस्तुओं से प्रेम। यहाँ के धर्म, सम्प्रदायों, संस्थानों, वृक्षों, नदियों, तृण, लताओं, पहाड़ों, सागरों, मिट्टी, जातियों, रिवाजों सबसे प्रेम अपनत्व और गर्व की अनुभूति करना।

देश–प्रेम का क्षेत्र

यह क्षेत्र बहुत व्यापाक है। सैनिक युद्धि भूमि में प्राणों की बाजी लगाकर, राजनेता राष्ट्रउत्थान का मार्ग प्रशस्त कर, साहित्यकार जन–जागरण का स्वर फूँककर, समाज सुधारक समाज का नवनिर्माण कर, व्यापारी, किसान श्रमिक सभी से अपने दायित्वों का निर्वाह कर अपना देश प्रेम प्रदर्शित कर सकते हैं।

देश के प्रति कर्तव्य

जिस देश में हमने जन्म लिया, जिसकी मिट्टी में खेल–कूदकर स्वस्थ शरीर प्राप्त किया, जहाँ का अन्न–जल ग्रहण किया, जिसकी वायु में साँसा ली, उस देश के प्रति हमारे भी बहुत से कर्तव्य है–

जिसकी रज में लोट–लोटकर बड़े हुए हैं।
घुटनों के बल सरक–सरककर खड़े हुए हैं।
परमहंस सम बाल्यकाल में सुख पाये।
जिसके कारण धूलि भरे, हीरे कहलाए।।

देश ने हमे सब कुछ प्रदान किया, हम पर इतने उपकार किये कि हम चाहकर भी उसका बदला नहीं चुका सकते। कहा गया है–

तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ।

भारतीयों का देश–प्रेम

भारत माता ने ऐसे असंख्य पुत्र–पुत्रियों को जन्म दिया है, जिन्होंने अपने राष्ट्र के लिए अपने प्राणों तक को न्योछावर कर दिया। प्रताप ने घास की रोटियाँ खाना स्वीकार किया किन्तु मुगलों के सामने झुके नहीं। लक्ष्मीबाई, शिवाजी, आदि वीरों ने अपने देशे के लिए प्राणों तक को समर्पित किया। तिलक ने स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। इस मन्त्र को लोगों तक पहुँचाया। गाँधी, नेहरू, बोस, भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, आजाद आदि देशभक्तों ने देश को अंग्रेजों से आजाद कराया। न जाने कितने गुमनाम वीरों ने भारत की हर आक्रमण से रक्षा की । उन वीरों को मेरा शत–शत नमन है। किसी कवि ने ऐसे वीरों का श्रद्धांजलि देते हुए कहा है–

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले,
वतन पे मिटने वालों का यही बाकी निशाँ होगा।।

देश भक्तों की कामना

'वैभव विलास, मैं नहीं भोगने आया,
हे मातृभूमि! तुझपर अर्पित मन काया।

एक सच्चे देशभक्त को ख्याति, ऐश्वर्य, सुख की कामना नहीं होती। वह तो सिर्फ अपने राष्ट्र की उन्नति चाहता है। माखनलाल जी के शब्दों में एक पुष्प की भी यही कामना है–

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ पर जावें वीर अनेक।।

उपसंहार

खेद का विषय है कि आज देश प्रेम की भावना में कहीं न कहीं कमी आई है। भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया है। "देश प्रेम की गाथाएँ केवल पाठ्य सामग्री बनकर रह गयी है।" इस स्थिति में बदलाव की आवश्यकता है। प्रत्येक देशवासी को यह समझना चाहिए कि"यह देश मेरा शरीर है और इसकी क्षति मेरी ही क्षति है।"

देश रूपी बाग में राज्यरूपी क्यारियाँ हैं। एक क्यारी कि उन्नति एकांगी है जबकि सभी क्यारियों की उन्नति सर्वांगीण है। प्रत्येक देशवासी, को देश प्रेम की भावना को संकुचित नहीं, 'व्यापक' रूप में ग्रहण करना चाहिए। भेदभाव त्याग 'देशहित को ही सर्वोपरि समझना चाहिए।' प्रत्येक व्यक्ति के मन में देश के लिए सब कुछ समर्पित करने की शक्ति होनी चाहिए। कोई राष्ट्र उन्नति तब करता है जब उसके निवासियों के मन में यह भाव हो–

मेरा हर सुख तुझे समर्पित, तेरा दुःख मैं पी लूँ।
मरना–जीना तेरे हित, हो धन्य भाव यह जी लूँ।।

❀ ❀ ❀

नाहं विप्रो न च नरपतिर्नापि वैश्यो न शूद्रो
ना वा वर्णी न च गृहपतिर्नो वनस्थो यतिर्वा।
किन्तु प्रोद्यन्निखिलपरमानन्दपूर्णामृताब्धे–
र्गोपीभर्तुः पदकमलयोर्दासदासानुदासः।।

श्वेताश्वर० १। १२

मैं न तो ब्राह्मण हूँ, न क्षत्रिय हूँ, न वैश्य हूँ, न शूद्र हूँ; न ब्रह्मचारी हूँ, न गृहस्थ हूँ और न संन्यासी हूँ; किन्तु परमानन्दमय अमृत के उमड़ते हुए महासागर रूप गोपीकान्त श्यानसुन्दर के चरण कमलों के दासों का दासानुदास हूँ।

नवम कक्षा की कविता लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

प्रभात

रोहित राठौर
नवम 'ग'

बीत जाती है जब अंधियारी रात,
तब नयी खुशियाँ लेकर आता है प्रभात।

चिड़िया जो सो रही थी डाल पर,
छिपी थी, मछलियाँ गहरे पानी में,
पड़ी जब प्रभात की किरण वृक्षों तालों पर,
गुनगुना उठी गीत चिरैया अँबवा की डाल पर।

बन्द हुआ चकई–चकवा का रोना,
कर दिया किसान ने शुरू बीज बोना,
प्रभात आने पर अंधियारे ने पकड़ लिया है कोना,
माँ कहती है सुबह हो गई, मुन्ना बन्द करो सोना।

निकल गया मजदूर, अपनी भूख मिटाने को,
निकल गया मछुवारा, अपना जाल बिछाने को
रात में भूखे थे ये सब
इन्तजार कर रहे थे, नये प्रभात के आने का।

माँ कहती है उठ जा मुन्ना
देखो सूरज आया है।
जिस अँधियारे से डरता था तू
उसे मार भगाया है।

प्रभात के आने पर चिड़ियाँ खुशी मना रही हैं।
कोई चूँ–चूँ कोई चीं–चीं, सब अलग–अलग गा रही हैं।

प्रभात का उपकार भौंरा भी जताता है,
जो रात के समय धोखे से, कमल के अंदर रह जाता है।
प्रभात के आने पर ही, वह भी आजादी को गले लगाता है।

प्रभात के आते ही तितली,
फूलों पर मँडरा रही है।
अंधियारे के साथी मच्छरों को,
धूप भगा चुकी है।

रात में फैले, पौधों और पत्तियों पर
वो ओस के मोती।
कौन उठाता इनको,
अगर भोर न होती।

प्रभात होते ही पौधे,
प्राण वायु देने लगे हैं।
जिस वायु से खतरा है हमको,
उसे खुद लेने लगे हैं।

कमल की मुरझाई कलियों में,
प्रभात के आते ही जोश आया है।
जन्तु से लेकर पौधों तक
सबने उत्साह दिखाया है।

बड़े–बड़े कवियों ने
कविता लिखने का सही समय,
प्रभात को ही बतलाया है।

❀ ❀ ❀

एतज्ज्ञेयं नित्यमेवात्मसंस्थं नातः परं वेदितव्यं हि किंचित्।
भोक्त भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममेतत्।।

श्वेताश्वर० १। १२

अपने ही भीतर स्थित इस ब्रह्म को ही सर्वदा जानना चाहिए; क्योंकि इससे बढ़कर जानने योग्य तत्त्व दूसरा कुछ भी नहीं है। भोक्ता (जीवात्मा), भोग्य (जगत्) और इनके प्रेरक परमेश्वर को जानकर मनुष्य सब कुछ जान लेता है। इस प्रकार यह तीन भेदों में बताया हुआ ब्रह्म ही है अर्थात् जीव, जगत् और परमात्मा – तीनों समग्र ब्रह्म के ही रूप हैं।,

नवम कक्षा की कविता लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान

प्रभात

मोहित तिवारी,
नवम

अरुण सौरभ मधुमय हे प्रभात!
इसे देख प्रसन्न हो जाता हर गात,
क्यों करते हम इसकी बात ?
पक्षी इसके इंतजार में
मुश्किल में काटें रात।
अरुण सौरभ मधुमय हे प्रभात! .....

जब पड़ती प्रभात की पहली किरण
होता रात्रि का अन्तिम चरण,
किसी का जन्म तो किसी का मरण,
हम तो जाते सूर्य की शरण
ये प्रभात हमेशा की तरह आता है।
अपने साथ अनन्त खुशियाँ भी लाता है।
आगमन पर इसके चलने लगती मधुर वात,
अरूण सौरभ मधुमय हे प्रभात! .....

प्रभात एक अच्छाई की तरह है,
जो बुराई पर विजय पाता है
अपने–आप ही ये,
बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक बन जाता है
प्रभात का ये गुण हम सबको बहुत भाता है।
आगमन के साथ ही ये खुशियों के गीत गाता है।
देता सबको समान लाभ, न पूछता किसी की जात,
अरुण सौरभ मधुमय हे प्रभात! .....

नवम कक्षा की कविता लेखन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान

प्रभात

अश्विनी अग्निहोत्री
नवम 'ग'

सूर्य प्रभात लेकर होता उदय है।
अंधकार का होता विदय है।।

किरणें निकलकर करती अभिनय हैं।
सीमाओं पर लगे जवान खड़े अभय हैं।।

प्रभात की ऐसी लालिमा छाई है।
किरणों की बारात सी आई है।।

रोशनी उमंग की सौगात लाई है।
रंगों की हरियाली सबको भाई है।।

प्रभात होते वीर जवान बढ़ाते कदम हैं।
देश के लिए आने वाला मिटाते अधम हैं।।

देश के नागरिक करते अपना करम हैं।
प्रभात–पूजा को ही मानते धरम हैं।।

इस प्रभात से हुआ जागरण देश का।
इस मानवता को वापस लाना कर्म है स्वदेश का।।

महापुरूषों की जन्मभूमि पर कलंक लगाया किसने।
उठाओं गोलियाँ मिटा दो हिम्मत की कैसे उसने।।

इस प्रभात की नव बेला में हर्षित हो रहा जन जन।
इस देश प्रेम की भक्ति में लग रहा उनका तन–मन।।

चारों ओर हरियाली सी छाई है।
नव वर्ष अमृत बेला आज आई है।।

यह प्रभात दिलाता याद हर पल।
जब बहती नदियाँ कल–कल।।

घास लहराती है कैसी अविचल।
उस स्वतंत्रता की याद आती हर पल।।

सूर्य तप कर हुआ गोल है।
प्रभात में चिड़िया करती किलोल है।।

हरियाली पृथ्वी गोल है।
यह एक भू गोल है।।

तारों की चमक हुई ठंडी है।
प्रातः लग गई सड़कों पर मंडी है।।

पेड़ों पर रंगीन फूल खिल रहे हैं।
पत्ते एक–दूसरे से मिल रहे हैं।।

उस पवन के झोके से, पत्ते सब हिल रहे हैं।
जल के कण बूँद–बूँद कर मिल रहे हैं।।

ओस जैसे इन पर जम गई है।
धरती वैसे उस पर नम गई है।

प्रभात इस ठंड से चिड़िया सहम गई है।
किरणों की ऊर्जा वहन गई है।

स्कूल जाते बच्चे लग रहे सुंदर हैं।
घोसले पर बैठे कबूतर घुस गये अंदर हैं।

हर घर में उत्पात मचाते बंदर हैं।
खेल रहे खिलाड़ी हुनर मंदर हैं।।

खुशियों के रंग इससे निकले हैं।
आभा भी आई सबसे मिलने है।।

रौनक की किरण होती हसीन है।
कम्प्यूटर आधुनिक मशीन है।।

प्रभात ने दिया सबको ज्ञान है।
इस किरण से उत्पन्न विज्ञान है।

सूर्य का तेज अत्यन्त प्रचंड है।
सूखी भूमि के हुए खंड खंड हैं।।

इस प्रभात का सब पर राज है।
हिमालय पर्वतों का शोभा साज है।

किया जागरण इसने हम–सब का।
कार्य करता है मजहब का।।

विश्वास है सबका इस पर।
देश उन्नति के लिए है तत्पर।।

निशा बीत गई पता नहीं कब ।
हुआ सवेरा जागो अब।।

चाँद गया सूरज आया।
पेड़ करें सब पर छाया।।

फूलों को देख सबका मन भाया।
मानवता का आज दिन वो आया।।

मुखरित हुआ प्रभात आज का।
किया कल्याण अपने समाज का।।

जगमगा रहा संसार रोशनी से।
हुआ प्रभात खिली मोहिनी से।।

इस प्रभात से नव–जीवन पर,
पड़ा प्रभाव कितना पावन।।

जन–जन हर्षित हो रहा है।
तन–मन पुलकित कर रहा है।।

सूर्य प्रभात लेकर होता उदय है।
अंधकार का करता विदय है।।

प्रभात होने का निकला समय है।
लालिमा करती अभिनय है।

रंगों का दिन है आज।
धूप खिली सब पर विराज।।

विद्या वपुषा वाचा वस्त्रेण विभवेन च।
वकारौ पञ्चभिर्युक्तौ नरः प्राप्नोति गौरवम्।।

❁ ❁ ❁

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।।
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्।।

गीता ७।४-५

पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश – ये पंचमहाभूत और मन, बुद्धि तथा अहंकार – इस प्रकार यह आठ प्रकार के भेदों वाली मेरी यह अपरा प्रकृति है; और हे महाबाहो! इस अपरा प्रकृति से भिन्न जीवरूप बनी हुई मेरी परा प्रकृति को जान, जिसके द्वारा यह जगत् धारण किया जाता है।

क्रिकेट स्टार सचिन

निहाल अहमद
नवम 'ख'

प्रस्तावना :

एक ऐसा नाम जिसको सुनते ही हमारे इस मिट्टी से बने बदन में क्रिकेट का जुनून पैदा होने लगता है। जी हाँ हम बात कर रहे हैं क्रिकेट के भगवान सचिन तेंदुलकर की। सचिन का जन्म सन् 1973 में 24 अप्रैल को हुआ था। सचिन में क्रिकेट का भूत बचपन से ही सवार था और इनकी सहायता की इनके भाई अजीत तेंदुलकर ने। सचिन ने अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया और इन्होंने अपना पहले क्रिकेट में गुजरवाला में 1989 ई० में पाकिस्तान के खिलाफ किया था। इन्होंने अपने पहले अन्तर्राष्ट्रीय टेस्ट क्रिकेट में इग्लैण्ड के खिलाफ 110 रन की पारी खेली जो कि उनका पहला टेस्ट शतक था। सचिन ने एक दिवसीय क्रिकेट में 463 मैच खेले हैं जिसमें उन्होंने 18,426 रन बनाए, 49 शतक बनाए 154 विकेट लिए जिसमें इन्होंने दो बार पाँच–पाँच लिये विकेट हैं। इनका औसत 44.83 तथा स्ट्राइक रेट 83.19 का है। सचिन ने 140 कैच पकड़े है। इन्होंने एक दिवसीय प्रारूप में 2016 चौके तथा 199 छक्के मारे हैं। ये 41 वार नाट आउट वापस आए हैं। सचिन का नाम लेते ही पूरे क्रिकेट का शमा उस नाम में बंध जाता है। उनमें उम्र का कोई तकाजा नहीं था और हमेशा की तरह उन्हें अपना शत् प्रतिशत देने की लत लगी थी। 22 वर्षों के अपने करियर में उन्होंने क्रिकेट के इतिहास का कोई भी ऐसा पेज नहीं छोड़ा जिसमें उन्होंने अपना नाम न दर्ज कराया हो। लोग कहते है कि उम्र बढ़ने के साथ–साथ शरीर भी ढीला पड़ने लगता है लेकिन यदि इस वाक्य को निरर्थक सिद्ध किया तो वह है सचिन तेंदुलकर। उस 70 या 80 गज के घेरे में जब गेंद सीमा रेखा पर जा रही होती है तो वो गेंद पर इस प्रकार झपटते है जैसे किसी शेर का शिकार छूटा जा रहा हो। मैं तो उनकी इस फुर्ती पर आश्चर्य करता हूँ।

सोलह की उम्र में उसने तीस वालों को ठोंका है
हर गेंद को बल्ले पर लाकर उसने चौका मारा है।।

खेलने का तरीका

जब वो मैदान में खेलने के लिए उतरते हैं तो उनका सारा जोश, जज्बा और जुनून गेंदबाजों की गेंदबाजी पर दिखता है। उनके लिए बाउंस गेंद की सीमा रेखा के बाहर छः रन के लिए भेजना मात्र एक महज मजाक है। जब वो गेंद को दो खिलाड़ियों के बीच से निकालते है तो उनके शरीर का प्रदर्शन देखते ही बनता है। यहाँ तक वो अच्छी गेंदों को सम्मान भी देते है। उन्होंने अपने को कभी भी ऊँचा दिखाने को कोई प्रयास नहीं किया और शायद वो इसलिए क्रिकेट के भगवान कहे जाते हैं। मुझे याद है जब वो वर्ल्डकप में पाकिस्तान के खिलाफ खेल रहे थे तो ऐसा लग रहा था कि वो सचिन नहीं बल्कि साक्षात् भगवान खेल रहे हो। उस मैंच में उनको पाँच बार जीवन दान मिला था और उस मैच में भारत की तरफ से सर्वाधिक रन 85 (115) रन बनाए थे और वो मैच भारत सम्मान के साथ जीतकर सीधा फाइनल में प्रवेश किया था और अन्त में विश्वकप 2 अप्रैल 2011 में भारत की बाँहों में था और वो रात्रि के पल सचिन की जिन्दगी सबसे अहम थे। वो अपने साथ नॉन स्ट्राइक पर उतरे हुए बल्लेबाज का प्रोत्साहन करते रहते हैं।

सफलता की भूख

आजकल सचिन मुम्बई की रणजी टीम सेना की तरफ से खेल रहे हैं लेकिन हर मैच जीतने के बाद ऐसा जुनून रहता है। जैसे कि वो विश्वकप जीत गए हो। उनके अंदर सफलता की भूख हमेशा रहती है। चाहें वो टेस्ट का प्रारूप हो या फिर वनडे या टी 20 का प्रारूप हो। वो हर प्रारूपों को दिल से खेलते है और शायद वो इस मुकाम पर इसलिए है आज 23 सालों के करियर में उन्होंने हमेशा एक दो पहले कि नेट प्रेक्ट्रिस में जब उनको करते हुये देखते हैं तो उनके अंदर की लगन को देखते ही बनता है। वो क्रिकेट हमेशा सच्ची लगन से खेलते थे। जैसे कोई बच्चा किसी खिलौने के साथ खेलता हो। सचिन को इस खिलौने (क्रिकेट) के साथ–खेलते–खेलते पूरे 22 साल हो चुके हैं लेकिन उन्होंने अपना खिलौना नहीं छोड़ा। और तो और उसे हमेशा अपने दिल के करीब रखा। जब उन्होंने द० अफ्रीका के खिलाफ दोहरा शतक लगाया था तो सारे क्रिकेट जगत का सिंहासन हिल गया था। आज अगर सचिन से ज्यादा महान माना जाता है तो वह है सर डॉन ब्रैडमेन। एक इंटरव्यू में सचिन से पूँछा गया कि सर डॉन ने कभी भी हेलमेट नहीं लगाया तो आप क्यों लगाते हैं। सचिन का जवाब साधारण था और उन्होने कहा कि सरडॉन के जमाने में हेलमेट जैसी सुविधा होती तो सरडॉन भी हेलमेट लगाते आपकी जानकारी के लिए बताया कि सरडॉन की मृत्यु नाक में गेंद लगने से हुयी थी और उस मैच में सरडॉन ने 00 रन बनाए थे। आज सचिन और डॉन के बीच तुलना की जाती है। सचिन ने टेस्ट में 51 शतक लगाए है।

अनुशासन

सचिन जब भी मैदान में खेलने के लिए आते है तो पूरे अनुशासन के रहते है। लोग कहते हैं कि सफलता की पहली सीढ़ी अनुशासन ही होती है। सचिन का व्यवहार मैदान में उपस्थित हर व्यक्ति के प्रति उदार होता है। उनके मासूम चेहरे से ऐसा प्रतीत होता है जैसे क्रोध नामक शब्द को जानते ही नहीं है, कि क्रोध चीज क्या है। वो हमेशा मैदान में सभी खिलाड़ियों का सम्मान करते है तथा उसे प्रोत्साहित करते रहते है उन्होंने कभी भी ये नहीं सोचा कि मैं सबसे अच्छा करूँ और कोई न करे। उन्होंने हर खिलाड़ी यहाँ तक कि विपक्षी को भी क्रिकेट के गुर' सिखायें है वो कभी भी अम्पायर के निर्णय पर नाखुश नहीं होते हैं बल्कि वो अम्पायर के निर्णय का सम्मान करते हैं।

सचिन की महानता

एक बार एक मैच में सचिन के बैट से कट लगकर गेंद विकेट कीपर के हाथ में गयी। ये बात मात्र उस विकेट कीपर और सचिन को पता थी। यदि सचिन चाहते तो अंपायर का निर्णय ले सकते लेकिन कट की आवाज अंपायरों को भी नहीं सुनायी दी थी लेकिन सचिन तुरंत पवैलियन चले गए और उन्होंने अपनी ईमानदारी को एक बार फिर सारी दुनिया के सामने प्रस्तुत किया सचिन 'अपनालय' नामक अनाथालय में 200 बच्चों के रहने की व्यवस्था करते हैं।

उपसंहार

सचिन को हम एक क्रिकेटर के रूप में ही नहीं बल्कि एक सम्पूर्ण पिता के रूप में भी देखते है। उनका हृदय हमेशा प्रतिभा की ओर अग्रसर हुआ है। उनका चयन अभी सांसद के रूप में हुआ है। सचिन का वजूद उनकी लगन, प्रतिभा और मेहनत की वजह से कायम था है और भविष्य में रहेगा। सचिन उन क्रिकेटरों में से है जिन्होंने हमेशा क्रिकेट को खेल भावना और मनोरंजन के रूप में किया है।

सुमन

सचिन पाठक
दशम 'क'

था कली के रूप में नवजात हे सुंदर सुमन!
हास्य करता था झुलाता अंक में तुझको पवन।
खिल गया जब पूर्ण तू मंजुल सुकोमल फूल बन,
सुस्वाद मधु के हेतु मँड़राने लगे लोभी भ्रमर।।

हे मनुज! तू भी धरा पर एक है खिलता सुमन।
जब तलक है जिन्दगानी भ्रमर ध्वनि का कर श्रवण।
देखता हूँ जब–जब तुझे पुलकित हो जाता मन–वदन।
कर रही श्रृंगार तेरा सूर्य की स्वर्णिम किरन!

देखकर तुझको कवि मधुर गीत गाते हैं।
अनिल के झोंके सदा झूला झुलाते हैं।
दे रहा संसार को सौरभ अपरिमित हे सुमन!
कर रहा पाठक सचिन अपना नमन मेरे सुमन!

सूर्य की स्वर्णिम किरण तुझको हँसाती है,
राग घोलकर कानों में कुछ 'गीत' गाती है,
तेरा मजहब नहीं कोई न कोई जाति है तेरी
सुमन खुश्बू लुटाता है, सिखाता प्रेम करना है।

कविता लेखन प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में द्वितीय स्थान

प्रभात

श्रवण तिवारी
दशम 'ख'

चपल चञ्चल किरणें सूर्य की,
कुसुम ओठों पर खिली है।
बाल सूर्य की शैशव किरणें,
जल तरंगों पर खेल रही हैं।।
ये किरणें दे रही हैं संदेश एक,
होता है प्रभात हर निशा के बाद।
कितना भी करना पड़े संघर्ष,
इस असार संसार में।
कभी न रुको, कभी न थको,
कभी न मानो हार इस जीवन संग्राम में।।
सदैव रखो स्मरण ये,
होता है प्रभात हर निशा के बाद।।
संकल्प के इस विश्व में,
हो कितना भी कठिन समय,
चाहे आये कितनी भी कठिनाइयाँ
दृढ़ रहो धैर्य रखो।।
क्योंकि होता है प्रभात हर निशा के बाद।।
जिसे है नहीं भय मृत्यु का,
उसे नहीं डरा सकता कोई।
है जो दृढ़ संकल्पी,
उसे नहीं हिला सकता कोई।।
खड़े रहो, कभी न डरो,
क्योंकि होता है प्रभात हर निशा के बाद।।
निशा सम दुःख के दिन भी खत्म हो जायेंगे,
तुम्हारी कीर्ति के गीत सब गायेंगे।
सब्र करो, अपने ऊपर विश्वास करो
विपत्तियों की आँखों में आँखें डालकर देखो।
क्योंकि होता है प्रभात हर निशा के बाद।।

कविता लेखन प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में तृतीय स्थान

प्रभात

ऋतिक सचान
दशम 'ख'

सूरज की पहली किरण से
अंधकार है दूर हुआ।
चमक गया है जग ये फिर से
हर तरफ प्रकाश हुआ।।
शेर की दहाड़ से
काँप गया वन सारा,
कमल की सुगंध से
महक गया है उपवन सारा।
पक्षियों के कलरव से
मंद बहती शीतल पवन से,
प्रकृति के इस मनोरम दृश्य से
पुलकित है मन मेरा।
सुबह होते ही सब
अपने काम को जाते हैं।
बच्चे स्कूल जाते हैं
तो पापा आफिस जाते हैं।
भजन कीर्तन से
वातावरण भर जाता है,
सबको अपने राग में
बहुत मजा आता है।।
कमल में बन्द भौंरा भी
सारी रात यही सोचता है,
सूरज की पहली ही किरण पर
मुझे यहाँ से उड़ना है।।
रात्रि के आँधी तूफान से
टूटे घर को समेट कर
हार नहीं मानती है,
फिर से नयी सुबह का
चिड़िया इंतजार करती है।।
इस खतरे का सामना कर
नये घर का निर्माण करती है।
नया सवेरा हमारे लिए
एक संदेश लेकर आता है,
कभी किसी मनुष्य को
दुःख का अनुभव नहीं कराता है,
क्योंकि हर काली रात्रि के बाद
एक नया सवेरा आता है।।

❀ ❀ ❀

सब कामनाएँ कभी किसीकी पूरी नहीं होतीं। कुछ कामनाएँ पूरी होती हैं और कुछ पूरी नहीं होतीं–यह सबका अनुभव है। इसमें विचार करना चाहिये कि कामना पूरी होने अथवा न होनेके स्थिति में क्या हमारेमें कोई फर्क पड़ता है? क्या कामना पूरी न होनेपर हम नहीं रहते? विचार करनेसे अनुभव होगा कि कामना पूरी हो अथवा न हो, हमारी सत्ता ज्यों–की–त्यों रहती है। कामना उत्पन्न होनेसे पहले हम जैसे थे, कामनाकी 'पूर्ति' होनेपर भी हम वैसे ही रहते हैं, कामनाकी 'अपूर्ति' होनेपर भी हम वैसे ही रहते हैं और कामनाकी 'निवृत्ति' होने पर भी हम वैसे ही रहते हैं। इस बातसे एक बल मिलता है कि यदि कामनाकी अपूर्ति हमारेमें कोई फर्क नहीं पड़ता तो फिर हम कामना करके क्यो दुःख पायें।

तरुण वर्ग की कविता लेखन प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार

याचक

अंकित शुक्ल
एकादश 'क'

गली–गली, नुक्कड़–नुक्कड़,
हर घर पर, हर इक दर पर।
भिक्षा की कामना किए हुए,
होंठों पे याचना लिए चला।

लेकर अपनी वो दीन दशा,
बारिश का सामना किए चला।
मन में थी आशा पाने की,
क्या सर्दी क्या तूफान भला?

सर्दी–गर्मी से हार गया,
जब दुत्कारों से त्रस्त हुआ।
गिर पड़ा दीन वह वहीं कहीं
निज भाग्य से भी हार गया।

फिर माँ का चेहरा देखा,
बाबा के मन का दर्द दिखा।
तब साहस का संचार हुआ,
फिर से याचक तैयार हुआ।

❁ ❁ ❁

नवम कक्षा की कविता लेखन प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार

प्रभात

अखिल पाठक
नवम 'क''

प्रभात से पहले उसकी लालिमा में,
छाया सिंदूर सा रंग
जब सूरज और निकला तो बदला रंग,
जगा नवजीवन
खिल उठे मुरझाए हुए फूल,
प्रभात के उन क्षणों में विहंगों ने छेड़े सुर,
वृक्षों की छटाओं से
ओजवान होती दिवा किरणें।
प्रभात के उस चरण ने लाँधी,
सौंदर्य की सीमाएँ सारी।
प्रभात की कान्ति ने हरा सबका मन,
साधुओं ने भी प्रारम्भ किया अपना तप।
इस सुन्दर बेला में चहके
कल–कल करते खगों के कुल।
शान्ति भी है और उल्लास भी,
यही तो है प्रभात की कान्ति।

❁ ❁ ❁

निबन्ध प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में प्रथम स्थान

राष्ट्रीय एकता

आर्यन मिश्र
दशम 'क'

प्रस्तावना

एकता एक भावात्मक शब्द है जिसका अर्थ है – एक होने का भाव। देश का सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक दृष्टि से एक होना, राष्ट्रीय एकता है। इस दृष्टि से भारत में अनेकता है किन्तु बाह्य रूप से दिखने वाली इस अनेकता का मूल वैचारिक एकता है। अनेकता में एकता ही भारत की प्रमुख विशेषता है। राष्ट्रीय एकता राष्ट्रीय गौरव की प्रतीक है। भारत अनेक धर्मों, जातियों और भाषाओं का देश है फिर भी हमारे देश में विविधता में एकता निहित है। जब कभी उस एकता को खण्डित करने का प्रयास किया जाता है तो देश का नागरिक सजग हो जाता है। राष्ट्रीय गौरव की प्रतीक राष्ट्रीय एकता पर गर्व करना चाहिए। कहा भी गया है –

जिनको न निज गौरव निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर पशु निरा है और मृतक समान है।।

राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय

भारत एक विशाल देश है अतः इसमें विविधता होना स्वाभाविक है। परन्तु इन विविधताओं में भी एकता है राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयत्न करने से पूर्व हमें राष्ट्र का स्वरूप जान लेना आवश्यक है। राष्ट्र की भूमि, भूमि के निवासी और इन निवासियों की संस्कृति के बारे में जानना अत्यावश्यक है। हमारे देश में विभिन्न प्रकार की जातियाँ, धर्म हैं फिर भी 'हम सब भारतीय हैं' इस प्रकार की भावना सामूहिक राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रदर्शित करती है। गुरु नानक का कथन है –

अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब वन्दे।
एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले कौन मन्दे।

गरु नानक ने भी राष्ट्रीय एकता की भावना से प्रेरित होकर सभी लोगों को एक ईश्वर की सन्तान बताया है फिर भी हमारे देश में विविधता है।

राष्ट्रीय एकता का आधार

देश की राष्ट्रीय एकता का आधार **दर्शन** और **साहित्य** है। ये विभिन्न प्रकार की विभिन्नताओं और असमानताओं को दूर करते हैं। भारतीय दर्शन सर्व समन्वय की भावना का पोषक है। यद्यपि भारत के साहित्य ग्रन्थ विविध क्षेत्र के निवासियों द्वारा विविध भाषाओं में लिखे गये हैं परन्तु उनके द्वारा क्षेत्रवादिता या प्रान्तीयता की भावना को न अपनाकर आपस में मिल जुल कर रहने की भावना तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रदर्शित किया गया है।

हमारा देश एक शृंखला है तथा हम सब उस शृंखला की कड़ियाँ हैं। कड़ी जहाँ से कमजोर होती है शृंखला वहीं से टूट जाती है और उस देश का उत्थान रूक जाएगा। यह एक राष्ट्रीय एकता की भावना से प्रेरित होकर शृंखला की मजबूत कड़ी बनना होगा जिससे हमारे देश का निरन्तर विकास हो सके।

राष्ट्रीय एकता और सामाजिक जीवन

मनुष्य के सामाजिक जीवन में राष्ट्रीय एकता का अत्यन्त महत्त्व है। परन्तु खेद है कि हमारे देश में राष्ट्रीय एकता की भावना फीकी होती जा रही है। यह हमारे लिए चिंता का विषय बन सकता है। किसी भी देश के विकास में राष्ट्रीय एकता की भावना अति आवश्यक है। परन्तु हमारे देश में राष्ट्रीय एकता की भावना दिखायी ही नहीं दे रही है प्रत्येक दिन अखबारों में घटनाएँ दिखायी देती है क्या यह राष्ट्रीय एकता का अभाव नहीं है। देश के नेताओं में तो राष्ट्रीय एकता की भावना दूर–दूर तक नजर नहीं आती लोग अपने ही वर्ग के नेताओं को हानि पहुंचाने की सोचते हैं। आज राष्ट्रीय एकता केवल पुस्तकों तक ही सीमित रह गयी है। मेरे अनुसार भारत शायद इसीलिए विकासशील देशों की गिनती में आज तक गिना जाता है। हमारे महापुरुषों ने राष्ट्रीय एकता के बारे में लोगों को खूब समझाया परन्तु लोगों ने उनकी बातों पर ध्यान न देकर अपनी इच्छानुसार कार्य किया उसी का परिणाम आज भुगतना पड़ रहा है। राष्ट्रीय एकता को छोड़िए आज परिवार में तो एकता दिखायी नहीं देती। भाई–भाई की ही जान लेता चाहता है। यह सब हमारे देश के लिए चिंता का विषय है।

राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधाएँ

राष्ट्रीय एकता के मार्ग में अनेक बाधाएं हैं। इनमें से कुछ बाधाएँ निम्न हैं–

1. भाषागत विवाद, 2. प्रान्तीयता की भावना, 3. साम्प्रदायिकता, 4. जातिगत विवाद

राष्ट्र द्रोह से मुक्ति

सरकार को चाहिए कि राष्ट्रद्रोही लोगों को पहचाने तथा किसी भी दबाव में आकर उन्हें खुले नहीं घूमने देना चाहिए। कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितने भी उच्च पद पर आसीन हो, उसे देशद्रोह पर क्षमादान नहीं देना चाहिए। राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र भाषा तथा संविधान राष्ट्रीय सम्मान के प्रतीक हैं। इनका अपमान और उपेक्षा राष्ट्रद्रोह मानी जानी चाहिए। इस प्रकार हम राष्ट्रीय एकता का विकास कर सकते हैं। जब तक जन–जन में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत नहीं की जाएगी, तब तक राष्ट्रीय एकता को खतरा बना रहेगा।

उपसंहार

यदि देश के नागरिक सुनागरिक बनें, उनमें राष्ट्र प्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी हो तभी राष्ट्रीय एकता स्थापित हो सकती है। आज जबकि संसाधन बढ़ते जा रहे हैं और भौगोलिक दूरियाँ कम होती जा रही हैं, तब भी आदमी–आदमी से बैर कर रहा है। इस पर गिरिराज शरण अग्रवाल ने कहा है – **साधनों की मुठ्ठियों में धरतियाँ सिमटी हुई,**

और फिर भी फासला ही फासला चारो तरफ?

उपर्युक्त बातों से सिद्ध होता है कि हर क्षेत्र में एकता की भावना की आवश्यकता होती है। जिस समूह में एकता होती है, वहीं उत्थान की ओर अग्रसर हो जाता है और जिसमें एकता की भावना नहीं होती या जिस समूह में सभी मालिक होते हैं, वह समूह बिखर जाता है; और उसका पतन निश्चित हो जाता है। अतः हमें राष्ट्रीय एकता के महत्त्व को जानते हुए उस पर ध्यान देना चाहिए–

"हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, आपस में सब भाई–भाई।"

निबन्ध प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में द्वितीय स्थान

आस्था का मेला कुंभ

आयुष त्रिपाठी
दशम 'ग'

आस्था का मेला, मोक्ष का द्वार कुंभ एक स्थान पर लगभग 12 वर्ष के अन्तराल में लगने वाला अति प्रसिद्ध समागम है। यह विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक संगम है जिसमें हजारो लोग सम्मिलित होते हैं।

कुंभ मेले का विशेष पौराणिक महत्व है। जैसा कि सत्य एवं अटल है कि भगवान (विष्णु) इस पृथ्वी के आदि मध्य व अन्त में स्थित है उनका दर्शन कुंभ के इस पौराणिक महत्व में भी दिखायी देता है। जब देवताओं व असुरों के मध्य युद्ध हुआ तो देवता हारने के पश्चात् श्री हरि के पास पहुँचे विष्णु ने उन्हें समुद्र मन्थन की सलाह दी। समुद्र मन्थन हेतु मन्दराचल पर्वत जब कोई न उठा पाया तो भगवान विष्णु के वाहन गरुण ने उसे उठाया वे उसके आदि में थे। मन्थन के समय पर्वत डूबने पर भगवान विष्णु ने कच्छप अवतार लिया अर्थात् वे उसके मध्य में थे। और अन्त में अमृत लेकर भगवान विष्णु धन्वन्तरि के रुप में निकले वे उसके अन्त में भी थे। इस अमृत कुंभ को जो विश्वकर्मा द्वारा नौकलाओं में नौ रुपों से बना था पर अधिकार को लेकर देवताओं और दानवों में युद्ध छिड़ गया और श्री हरि ने मोहिनी रुप रखकर देवताओं को अमृत पिलाया। इस युद्ध में इस कुंभ को बारह स्थानों पर रखा गया उन बारह स्थानों में सूर्य ने कलश को टूटने, चन्द्रमा ने छलकने तथा गुरु ने अपहरण होने से बचाया उन बारहों स्थानों पर तब ये ग्रह जिन नक्षत्रों में थे उन्हीं स्थानो पर आज कुंभ का आयोजन होता है। इनमें से आठ स्थान देवलोक में तथा चार स्थान पृथ्वी लोक में हैं। इस प्रकार प्रथम कुम्भ सूर्य–चन्द्रमा के मकर में तथा गुरु के मेष में होने पर गंगा–यमुना तथा अदृश्य सरस्वती के पावन संगमस्थल प्रयाग पर पड़ता है। जब गुरु कुम्भ में तथा सूर्य वृष राशि में हो तो द्वितीय कुम्भ हरिद्वार में मनाया जाता है। तृतीय कुम्भ गुरु के सिंह तथा सूर्य–चन्द्रमा के कर्क राशि में स्थित होने पर अवन्तिका (उज्जैन) में पड़ता है। तथा चतुर्थ कुम्भ गुरु के तुला तथा वृश्चिक में सूर्य के स्थित होने से पंचवटी में पड़ता है। इनमें प्रयाग तथा हरिद्वार दोनों पर 6–6 सालों में अर्द्धकुम्भ का आयोजन भी होता है।

इन सभी बारह कुम्भों में सर्वाधिक महत्व तीर्थराज प्रयाग पर लगने वाले महाकुंभ का है। चूंकि प्रयाग का अर्थ होता है ऐसा स्थान जहाँ पर बहुत से यज्ञ हुये हो कहा जाता है प्रयाग पर बह्मा जी ने प्रथम यज्ञ किया था और सृष्टि की रचना की थी। इसलिये इस कुंभ को देवलोकों में लगने वाले कुंभ मेले से भी पवित्र तथा उत्तम माना गया है। कुंभ में अमृत था और अमृत कभी नष्ट नहीं होता इसी प्रकार जीवात्मा भी कभी मरती नही। इसी आत्म तत्व का बोध कराने हेतु कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है।

वर्तमान परिदृश्य में भी कुंभ बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इस महा मेले में सम्मिलित होने के लिए करोड़ों विदेशी आते हैं। इलाहाबाद में आयोजित कुम्भ मेले में इलाहाबाद की जनसंख्या से 40 गुना अधिक लोग सम्मिलित होने आ रहे हैं।

परन्तु आज इस कुम्भ मेले में राजनीति गर्माने लगी है। वास्तविक शंकराचार्य को चतुष्पद की भूमि नही उपलब्ध करायी जाती वहीं फर्जी शंकराचार्यों को जमीन दे दी जाती है। कुंभ मेले में सर्वाधिक महत्व रखने वाले शंकराचार्य सम्मिलित होने से मनाकर देते हैं और सरकारी तंत्र पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। ऐसे सनातन धर्म के सम्मेलन का लाभ ही क्या जहाँ मुख्य व्यक्ति का कुछ पता ही न हो। वहीं दूसरी समस्या गंगा के प्रदूषण की है। कुंभ में देश विदेशों से लोग, साधु सन्यासी पतित पावनी समझी जाने वाली गंगा माँ में आस्था की डुबकी लगाने आते है। परन्तु हद तो तब हो जाती है जब उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री साहब स्नान करने जाते हैं परन्तु गंगा का प्रदूषण देखकर बिना स्नान किये ही वापस लौट आते हैं। मन्त्री जी आपने खुद को तो बचा लिया परन्तु उन करोड़ो के बारे में मंत्री होने के नाते कुछ भी नहीं सोचा क्या गंगा आपकी माँ नहीं? क्या अपनी माँ को प्रदूषण मुक्त करना आपका कर्तव्य नहीं। गंगा में सर्वाधिक प्रदूषण कानपुर शहर में फैलाया जाता है। अक्सर कई अखबारो में इस खबर को निकाला जाता है परन्तु किसी के कानों में जूँ तक नहीं रेंगती।

माँ गंगा कर रही पुकार
कब होगा मेरा उद्धार।

सदियों से लोगों के पाप धुलते–धुलते सरस्वती तो अदृश्य हो ही गयी है और देखा जाय तो गंगा भी लगभग अदृश्य हो गयी है चूँकि गंगोत्री से निकलने वाली गंगा का अधिकांश जल बिजली बनाने तथा अन्य परियोजना में उपयोग कर लिया जाता है और अधिकतम जल जो हमें उसमें दिखता है उसमें नालों का पानी तथा टेनरियों का अपशिष्ट होता है। वही जल इलाहाबाद जाकर भक्तों को मोक्ष की प्राप्ति कराता है। इसका कारण है कि सरकार के मुँह को टेनरी मालिक नोटो की गड्डी से भर देते है और उनके मुँह कभी नहीं खुलते है। बडी विडंबना है कि भ्रष्टाचार के कारण लोग अपनी माँ के प्रति हो रहे अन्याय को लगातार सहे जा रहे हैं और विरोध के नाम पर केवल रैली व भाषण होते हैं।

अन्त में अगर हम कुंभ से कुछ सीखना चाहते है कुछ प्रण करना चाहते है तो यही की हम तब तक चैन से नहीं बैठेगें जब तक अपनी माँ को प्रदूषण मुक्त नहीं बना लेंगे। ऐसा नहीं है कि यह अत्यन्त दुष्कर कार्य है। विदेशों में भी कई ऐसी नदियाँ हुयी है जो पहले बहुत गन्दी थी परन्तु योजना चलाकर उन्हें साफ किया गया, फिर हमारे देश में यहाँ तो नदी को 'माँ' का स्थान प्राप्त है परन्तु हमारे देश में ईमानदार जनप्रतिनिधि की कमी है जो इसे अपना कर्तव्य समझता हो। परन्तु हर कार्य के लिये नेताओं से उम्मीद करना भी ठीक नहीं इस कार्य के लिये हमें एकजुट होना पड़ेगा तभी हम कुंभ के इस सांस्कृतिक व पौराणिक महत्त्व को जीवित रख सकेगें। अन्त में मैं यह कहना चाहूँगा कि जिस प्रकार का समर्पण हमारे पूर्वज राजाओं में था जो कुंभ के मेले में अपने वस्त्र तक दानकर देते थे उसी प्रकार हम भी पूर्ण आध्यात्मिक भाव से कुंभ का भ्रमण करें।

❀ ❀ ❀

निबन्ध प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में तृतीय स्थान

भारतीय संस्कृति

प्रशान्त सिंह चौहान
दशम 'क'

रूपरेखा –
1. प्रस्तावना
2. संस्कृति का अर्थ
3. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ
4. उपसंहार

1. प्रस्तावना –

हजारों वर्षों की परम्पराओं से पुष्ट भारतवर्ष किसी समय विश्व गुरु कहलाता था। जिस समय आज के उन्नत एवं सभ्य कहे जाने वाले राष्ट्र अस्तित्वहीन या जंगली अवस्था में थे उस वक्त हमारा यह राष्ट्र अपनी संस्कृति, अपने अस्तित्व को कायम रखकर विश्वगुरु के पद पर आसीन था। हमारे राष्ट्र में महान ऋषियों और मुनियों द्वारा वेदों की ऋचाएँ लिखी जा रही थीं। आश्रमों में वेद–मंत्रों का जप किया जाता था। यज्ञ में डाली गयी आहुतियों से निकलता हुआ सुगन्धित धुआँ भारतीय संस्कृति को पल्लवित एवं आनन्दमयी बना देता था, और इसी संस्कृति की वजह से आज भी भारत अपने अस्तित्व को कायम रखने में सक्षम है। भारतवर्ष की सभ्यता एवं संस्कृति महान है। कवि इकबाल ने लिखा है –

यूनान मिस्त्र रोमों, सब मिट गए जहाँ से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

2. संस्कृति का अर्थ –

संस्कृति ही मनुष्य को पशु से अलग करती है जैसे जब दूध को किसी अशुद्ध वस्तु के साथ मिला देने पर वह फट जाता है परन्तु यदि उसे किसी सुयोग्य वस्तु के साथ मिलाया जाता है तो वह दही, पनीर इत्यादि अनेक भोज्य पदार्थों के रुप में प्राप्त होता है जिसे ग्रहण करने से हमारा शरीर पुष्ट होता है; ठीक उसी प्रकार यदि हमारी संस्कृति में अशुद्ध पदार्थ रूपी कमियाँ होगी तो वह हमें कुसंस्कारी बना देगी। परन्तु जब हमारी संस्कृति में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह जैसे गुणों का समावेश होगा तो वही संस्कृति हमें उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर चढ़ा देती है। इन सभी गुणों का समावेश हमारी भारतीय संस्कृति में है, इसी कारणवश इतने वर्षों तक गुलाम रहने के पश्चात् भी ब्रिटेन जैसे महाशक्तिशाली राष्ट्र हमारी संस्कृति की जड़ों को नहीं हिला सके। महारानी लक्ष्मीबाई, अवन्तीबाई, महात्मा गांधी, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे महान देशभक्तों ने अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए ही अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। भारतीय संस्कृति ने सदा ही अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने की प्रार्थना की है। उसमें कहा गया है –

'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय'

अर्थात् हे ईश्वर! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

3. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ –

हमारी भारतीय संस्कृति विविध गुणों से परिपूर्ण है। हमारी भारतीय संस्कृति नारी का बहुत सम्मान करती है। इसकी यह विशेषता है कि यह किसी एक जाति अथवा राष्ट्र तक सीमित नहीं रही। वैदिक ऋषि सारे विश्व को श्रेष्ठ बनाना चाहते थे। वे अपने मंत्रों से सम्पूर्ण सृष्टि के लिए मंगल कामना करते हैं तथा मानव मात्र को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने का प्रण दोहराते हैं। भारतीय संस्कृति सदैव उदार, ग्रहण शील एवं समय के साथ परिवर्तनशील रही है। अनेक विदेशी संस्कृतियाँ नष्ट हो गयीं या इसी का अंग बन गयी। यहाँ पर शक, कुषाण, हूण, पठान, मुसलमान, पारसी, यहूदी, ईसाई सभी आए और सभी ने यहाँ की संस्कृति को पुष्ट किया और इसी संस्कृति में धीरे–धीरे विलीन हो गए।

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। भौतिक उन्नति को हम भारतवासियों ने त्याज्य नहीं माना परन्तु उसे आत्मिक जीवन से ज्यादा महत्व भी नहीं दिया। साधु–महात्माओं की पर्ण कुटियों पर सम्राटों ने सदा ही सिर झुकाएँ हैं। ईश्वर में अटल विश्वास रखने वाले अधनंगे फकीरों ने यहाँ के जन–जीवन को सम्राटों की अपेक्षा अधिक प्रभावित किया है। यहाँ का भामाशाह तभी महान बना जब उसने देश सेवा के लिए अपना सम्पूर्ण खजाना महाराणा प्रताप को समर्पित कर दिया। हमारी संस्कृति में त्याग सदा से ही सम्मान पाता रहा है।

4. उपसंहार –

सार अर्थों में हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति सही अर्थों में मानव संस्कृति है, उदार संस्कृति है, अध्यात्म प्रधान व आदर्शपरक संस्कृति है तथा मनुष्य में ईश्वरत्व की प्रतिष्ठा करने वाली संस्कृति है। इसी संस्कृति से प्रभावित होकर शाहजहाँ ने इस पंक्ति को गुदवा दिया था –

गर फिरदौस बर रुए जमींनस्त,
हमींअस्तो, हमींअस्तो, हमींअस्त।

अर्थात् पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहाँ पर है, यहाँ पर है यहीं पर है।

❀ ❀ ❀

एतज्ज्ञेयं नित्यमेवात्मसंस्थं नातः परं वेदितव्यं हि किञ्चित्।
भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा सर्व प्रोक्त त्रिविधं ब्रह्ममेतत्।।

(श्वेताश्वतर० १। १२)

अपने ही भीतर स्थित इस ब्रह्मको ही सर्वदा जानना चाहिये; क्योंकि इससे बढ़कर जाननेयोग्य तत्त्व दूसरा कुछ भी नहीं है। भोक्ता (जीवात्मा), भोग्य (जगत्) और उनके प्रेरक परमेश्वरको जानकर मनुष्य सब कुछ जान लेता है। इस प्रकार यह तीन भेदोंमें बताया हुआ ब्रह्म ही है अर्थात् जीव, जगत् और परमात्मा–तीनों समग्र ब्रह्मके ही रूप हैं।

निबन्ध प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में सांत्वना पुरस्कार

राष्ट्रीय एकता

चन्दन अग्रवाल
दशम 'ग'

रुपरेखा –

1. प्रस्तावना
2. राष्ट्रीय एकता का आधार
3. राष्ट्रीय एकता के विविध रूप
4. राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता
5. राष्ट्रीय एकता में बाधाएँ
6. राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के उपाय
7. उपसंहार

1. प्रस्तावना –

'राष्ट्रीय एकता' का अर्थ है – 'देशवासियों में एकता की भावना' होना। यह एकता सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, नागरिक आदि रुपों में हो सकती है। हमें देशवासियों में एकता स्थापित करने हेतु देशवासियों की सोच को परिवर्तित करना होगा। अगर हम देश में एकता स्थापित करें तो हम अपने देश को विकासशील से विकसित देश बना लेगें। राष्ट्रीय एकता के लिये कहा भी गया है –

"जिनको न निज गौरव और निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर–पशु है निरा और मृतक समान है।।"

2. राष्ट्रीय एकता का आधार –

राष्ट्रीय एकता का आधार उस देश के निवासी हैं। अगर निवासियों में एकता होगी तभी देश में एकता होगी। अगर निवासी एकजुट नहीं हैं तो देश में एकता भी नहीं हो सकती।

3. राष्ट्रीय एकता के विविध रूप –

राष्ट्रीय एकता के बहुत से रूप हैं। जैसे – सांस्कृतिक क्षेत्र में एकता, आर्थिक क्षेत्र में एकता, सामाजिक क्षेत्रों में एकता। यदि देश में एकता हो तो देश का समुचित रूप से विकास हो सकता है यदि व्यक्ति ही व्यक्ति की सहायता नहीं करेगा तो देश में एकता की स्थापना नहीं की जा सकती है। सांस्कृतिक क्षेत्र में यदि व्यक्ति मिल–जुलकर सभी त्योहार मनायें तो खुशी की बात होती है परन्तु खुशी के मौकों पर ही यदि शत्रुता की वजह से झगड़ा हो जाये तो अत्यधिक दुख होता है। अतः एकता अत्यन्त आवश्यक है।

4. राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता –

वर्तमान में देश में विकास कार्य करने हेतु देश के सभी क्षेत्रों में एकता की आवश्यकता है। यदि देश में राजनीतिक क्षेत्र में एकता हो तो देश में भ्रष्टाचार व अन्य अपराध काफी कम किये जा सकते हैं। देश के नेता एक होकर पहले के जैसे भारत को 'सोने की चिड़िया' बना सकते हैं।

5. राष्ट्रीय एकता में बाधाएँ –

राष्ट्रीय एकता के समक्ष देश में कई बाधयें हैं जो देश में राष्ट्रीय एकता के पूर्ण रूप से प्रभाव को बदलती हैं तथा स्थापित होने से रोकती हैं।

(i) **जातिवाद –**

भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है फिर भी भारत में विभिन्न धर्मों के लोग जातिवाद के कारण लड़ते रहते हैं।

(ii) **प्रान्तयीता / क्षेत्रवाद –**

हम स्वयं को भारत का निवासी कहते हैं फिर भी हम आपस में प्रान्तों या क्षेत्रों को लेकर झगड़ते हैं।

(iii) **साम्प्रदायिकता –**

वर्तमान में भारत में साम्प्रदायिकता अत्यधिक फैली हुयी है। भारतीय नेता वोट बैंक बढ़ाने के लिये सम्प्रदायवाद को बढ़ाते हैं।

(iv) **संकीर्ण मनोवृत्ति –**

भारत में राष्ट्रीय एकता न होने का मुख्य कारण अधिकांश भारतीयों का स्वतंत्र रूप से न सोचना है।

6. **राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के उपाय –**

हमें भारत में राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिये निम्न उपाय करने चाहिये–

(i) **सर्वधर्म समभाव –**

हमें सभी धर्मों के प्रति समान भाव रखना चाहिये। इसी से देश में राष्ट्रीय एकता स्थापित की जा सकती है।

(ii) **समष्टि हित की भावना –**

हमें देश के सभी लोगों के प्रति हितैषी होना चाहिये। लोगों के हितों के अनुसार कार्य करना चाहिये।

7. **उपसंहार –**

देश में एकता स्थापित करना अति आवश्यक है। देश व नागरिकों का विकास एकता के माध्यम से ही हो सकता है। हमें अपने देश में एकता के उदाहरण मिल जाते हैं। भारत के वर्तमान राष्ट्रपति हिन्दू, उपराष्ट्रपति मुसलमान, प्रधानमंत्री सिक्ख व रक्षामंत्री ए0के0 एण्टनी इसाई हैं। हम इन तथ्यों से सीख लेकर एकता स्थापित करने में सहायता करनी चाहिये। – कवि इकबाल ने कहा है – "राष्ट्रीय एकता देश प्रेम व सर्वधर्म समभाव का वह पुलिन्दा है जिसके कारण हमारा देश आज भी जिन्दा है।"

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा।।"

निबन्ध प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में सांत्वना पुरस्कार

भारतीय संस्कृति

शगुन गुप्त
दशम 'ख'

भारतीय संस्कृति जो विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। जहाँ कदम कदम में भाषा, पानी, वस्त्र, वेश सभी परिवर्तित हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यदि भारत देश की प्राकृतिक विभिन्नताएँ देखें तो ऐसा अनुभव होता है कि जैसे सम्पूर्ण विश्व का भ्रमण करने निकले हों। यहाँ हिमालय की यदि हिमाच्छादित पहाड़ियाँ देखने को मिलती हैं तो दूसरी ओर गर्म जैसलमेर भी दृष्टिगोचर होता है। यदि मेघालय चेरापूँजी जैसे अतिवृष्टि वाले क्षेत्र हैं–जहाँ चार सौ सेमी0 की वर्षा होती है, तो कुछ ऐसे भी क्षेत्र है जैसे राजस्थान जहाँ दस सेमी0 से भी कम वर्षा होती है। यह संस्कृति उस स्थान पर फली फूली है जहाँ ऐसा कोई अन्न नहीं जो उगाया न गया हो, ऐसा कोई खनिज नहीं जो पाया न जाता हो ऐसा कोई पशु–पक्षी नहीं है जो हमारे यहाँ के जंगलों में क्रीड़ा न करता हो। ऐसा कोई धर्म नहीं है जो यहाँ फला–फूला न हो। ऐसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का यदि कोई विदेशी भ्रमण करे तो वह निश्चित ही यह कहेगा कि वह किसी देश का नहीं अपितु विश्व भ्रमण के लिये निकला हो।

अनेकता में एकता हिन्द की विशेषता

भारतीय संस्कृति जहाँ अहिंसा ही सर्वोत्तम आधार है, हमारे नैतिक मूल्यों में भी सभी स्थान पर अहिंसा ही विराजमान रही है। इसीलिये कहा भी गया है कि –

अहिंसा परमोधर्मः

यदि वैज्ञानिक व ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो हम पाते हैं कि हमारी सृजनात्मक शक्ति कभी भी कम नहीं हुई है। चाहे कितने ही आक्रमण हों सब में हमने अपनी इस चमत्कारी शक्ति के माध्यम से देश का पुनर्निर्माण ही किया है। चाहे वह मोहम्मद गौरी की लूटपाट हो, चाहे विदेशी आक्रमणकारियों की लूटो नीति, चाहे वह औरंगजेब जैसे क्रूर शासक हों, चाहे अंग्रेजों जैसे चालाक व्यापारी रूपी शासक इन लोगों ने अपने स्वार्थ के लिये न जाने कितने शहरों को उजाड़ दिया परन्तु वे शहर पुनः स्थापित हुए। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण वर्तमान में भारत की राजधानी दिल्ली है।

दासता, गुलामी के समय हमने अनेक कर्मठ, महान व्यक्तित्व वाले भारत माँ के सच्चे पुजारियों को जन्म दिया है। चाहे वह गाँधी जी जैसा अहिंसावादी मनुष्य हो, जिसने अपनी जादुई अंहिसावादी छड़ी से अंग्रेजों के मजबूत पैरों को भारत से उखाड़ फेंका या फिर रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे मनीषी हों या फिर अरविन्द जैसे योगी जिनका सिक्का आज भी पूरे विश्व में है।

एक बात और याद आती है जब विश्व की सभी संस्कृतियाँ चाहे वह मेसोपोटामिया की रही हो या चीन की हो, या फिर मिस्त्र की सभ्यताएँ रहीं हों सभी नष्ट होकर इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गयी, तो इस भारतीय संस्कृति में कुछ तो अलग है ही जो इन विश्व की अन्य सभ्यताओं से हमें पृथक् करती

है। वैदिक धर्म का अनुसरण करने वाली यह संस्कृति आज भी अमर है। यद्यपि हमारी संस्कृति में कुछ कुरीतियाँ रही हैं जिन्होंने देश को धर्म, रंग भेद, वर्ग, जाति के नाम पर विभाजित करने की पूर्ण कोशिश की परन्तु हमारी संस्कृति रुपी चैन (कड़ी) को तोड़ने में नाकामयाब रहीं। इसके पीछे तो दो ही कारण हो सकते हैं उस देश के नागरिक या फिर उस देश के नागरिक के हृदय में स्पंदन करती चेतना। यदि हम भारतीय संस्कृति को परिवार के रूप में देखें तो यहाँ का हर नागरिक उस परिवार के सदस्य की भाँति हैं जो अपने परिवार को गाँव में सबसे प्रतिष्ठित व इज्जतदार बनाना चाहता है।

भारतीय संस्कृति सदैव गतिशील रही है। मानव जीवन को सँवारने के लिये वह समय–समय पर ऐसे विचारों को भी स्वीकार करती है, जो उसे नयी शक्ति, चेतना प्रदान कर सके। संक्षेप में कहें तो मानव जीवन का संस्कार करना ही हमारी संसकृति का उद्देश्य रहा है। यहाँ पर दुराग्रह या पूर्वाग्रह की स्थिति नहीं है, इस संस्कृति में वही ग्रहण किया जाता है जो युक्तिसंगत, तर्कसंगत व कल्याणकारी हो। इसकी गतिशीलता का राज मानव जीवन के साश्वत मूल्यों में निहित है, जिनमें सत्य की प्रतिष्ठा, समभाव, विचारों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रमुख है।

हमारी संस्कृति में तो त्याग का भी अत्यन्त महत्व रहा है, यहाँ पर व्यक्ति अपने द्वारा किये गये श्रम से जो प्राप्त होता है उसी का भोग करता है यदि गलती से भी किसी दूसरे का श्रमफल हाथ लग जाये तो उसे भी त्याग देता है। अर्थात् भोग के साथ त्याग की भी प्रमुखता है। अन्त में बस कवि इकबाल की कुछ पक्तियाँ लिखना चाहूँगा –

यूनान मिश्र रोमा सब मिट गये जहाँ से
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा
हिन्दी है हम वतन हैं हिन्दोस्ताँ हमारा

❀ ❀ ❀

हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरक्षिसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नषद्वरदृतसद्व्योमदब्जा गोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतं बृजत्।।

यजुर्वेद १०.२४।।

भावार्थः मनुष्यों को उचित है कि सर्वत्र व्यापक और पदार्थों की शुद्धि करनेहारे ब्रह्म परमात्मा की उपासना करें, क्योंकि उसकी उपासना के बिना किसी को धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्ष से होनेवाला पूर्ण सुख कभी नहीं हो सकता।

तरुण वर्ग की कविता लेखन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान

शहीदों का बलिदान

प्रफुल्लित त्रिपाठी
एकादश 'क'

शहीदों को नमन है जिन्होंने देश को बचाया है,
घर बार का मोह तज निज प्राण भी गँवाया है।।

सीमाओं पर लड़ने वाले वो वीर भारतवासी हैं,
सीमा पर वीरगति ही जिनके लिए शाबासी है।।

क्षण–क्षण, पल–पल जीते हों या मरते।
देश प्रेम में जो प्राण की फ्रिक भी न करते।।

ऐसे वीरों की वीरगति को सम्मान मिलना चाहिए,
न कि पेट्रोल पम्प या अनुदान मिलना चाहिए।।

उस माँ से पूछो जिसका लाल दुनिया से चला गया।
भ्रष्ट नेताओं से क्या पूछें जिनका काला धन स्विस चला गया।

एक प्रेसवार्ता करके शहादत को भुला दिया,
जिसने देशरक्षा हेतु निज घर बार को भुला दिया।।

जिन्होंने देश के लिए रक्षा के लिए सिर कटवाया है,
इन नेताओं ने उनकी लाशों पर अपनी रोटियाँ तक सेंकी हैं।।

उन वीरों की शहादत को नमन करना चाहिए,
और स्वार्थी नेताओं का दमन करना चाहिए।।

यह देश पुनः आजाद हो सकेगा तब ही,
छुआछूत भ्रष्टाचार जब दूर रहेगा तब ही।।

वीरों का बलिदान विकास की आधारशिला बन पाएगा,
जब विदेशों से पढ़ने बालक नालंदा तक्षशिला को आएगा।

भारत को पुनः दुनिया में विश्वगुरु बनाना है,
शांति समरसता संतोषपूर्ण रामराज्य फैलाना है।।

तब ही सफल कहलायेगा वीरों का बलिदान।
जब सोने की चिड़िया फिर से बनेगा हिन्दुस्तान।।

तरुण वर्ग की निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

भ्रष्टाचार की समस्या

अभय द्विवेदी
एकादश 'क'

प्रस्तावना –

आज हमारा देश सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार की समस्या से जूझ रहा है। देश में घोटाले पर घोटाले होते जा रहे हैं। आज लगभग सभी भ्रष्ट हो गये हैं। कोई भी सरकारी कार्य बिना घूस के संभव नहीं हो पाता है। हर सरकारी कर्मचारी घूस के बिना कार्य नहीं करता है। सरकार द्वारा भ्रष्टाचार रोकने के सभी प्रयास विफल सिद्ध हो रहे हैं।

भ्रष्टाचार को रोकने के लिए जनता के द्वारा भी प्रयास किये जा रहे हैं। अन्ना हजारे, अरविन्द केजरीवाल, किरण बेदी, बाबा रामदेव ने भ्रष्टाचार को रोकने तथा लोकपाल बिल पास कराने के लिए आन्दोलन किये तथा अनशन पर भी बैठे मगर पूर्ण सफलता आज भी प्राप्त नहीं हो पा रही है।

भ्रष्टाचार का कारण –

आज देश में कानून में सख्ती नहीं रह गयी है। हर अपराधी जमानत पर छूट जाता है। इस कारण देश के बड़े–बड़े राजनेता व सरकारी कर्मचारी पैसे कमाने के लालच में घोटाले किये जा रहे है। और वे पकड़े जाने के बावजूद डर का अनुभव नहीं करते। भ्रष्टाचार का सबसे प्रमुख कारण कानून में कमियाँ हैं। सरकारी कर्मचारी हर जगह से लाभ कमाने के ही विषय में सोचते रहते हैं।

भ्रष्टाचार में कुछ कारण जनता का भी है। जनता भी अपना कार्य पूर्ण करवाने के लिए घूस दे देती है। तभी आज वाहन की पार्किंग से लेकर दूसरे देशों से लेन–देन तक में भ्रष्टाचार हो रहा है। यदि जनता किसी भी कार्य में माँगे जाने वाले अधिक रुपये देने से मना कर उसका विरोध करे तो भ्रष्टाचार की समस्या में कमी आ सकती है तथा पुलिस की सहायता से उसे सजा दिलवाकर भ्रष्टाचार को समाप्त किया जा सकता है।

प्रमुख घोटाले –

भारत में बहुत से घोटाले हो चुके हैं। कामनवेल्थ खेलों में सुरेश कलमाड़ी द्वारा किया गया। हजार करोड से भी अधिक का घोटाला 2G स्पेक्टम में डी राजा द्वारा किया गया करोड़ों का घोटाला, तथा इंडियन प्रीमियर लीग में ललित मोदी द्वारा किया गया घोटाला प्रमुख है। इसके अलावा अभी इटली से 10 हेलिकॉप्टर खरीदने में भी घोटाला पूरी UPA सरकार द्वारा किया गया है।इसके अलावा हर महीने में प्रायः सरकारी कर्मचारियों के घर से करोड़ों की सम्पत्ति बरामद होती है जबकि उनकी तनख्वाह 40–50 हजार ही होती है। इनकम टैक्स के द्वारा यह प्रायः जब्त की जाती है। इसके अलावा अन्य छोटे–मोटे घोटाले तो हर रोज होते ही रहते है। हर नेता के नाम पर पुलिस में दस–बीस फाइलें तो पड़ी ही रहती है।

भ्रष्टाचार का प्रभाव –

भ्रष्टाचार का सीधा प्रभाव जनता पर पड़ता है। अमीर और अमीर, गरीब और गरीब होता जा

रहा है। सरकारी कर्मचारी तो खूब पैसा कमा रहे है मगर आम जनता गरीब होती जाती है। जनता को छोटे–छोटे कार्यों के लिए घूस देनी पड़ती है। मँहगाई बढ़ती जा रही है जनता को पेट पालने के लिए कई मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। उसे वीजा बनवाने, पासपोर्ट बनवाने, लाइसेंस रिव्यू करने, बनवाने तथा अन्य सरकारी कार्यों के लिए छोटे से बड़े अधिकारी तक सबको घूस देनी पड़ती है तभी उसका काम होता है अगर वह घूस न दे, तो उसका काम अधूरा रह जाता है वह घूस देने के अलावा कुछ नहीं कर सकता। यदि व्यक्ति घूस न दे। तो अधिकारी कोई न कोई कमी बताकर उसका कार्य टाल देते हैं और वह दफ्तर से दफ्तर भटकता रहता है। जनता को भ्रष्ट अधिकारियों के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आज पुलिस अधिकारी भी घूस के बिना कार्य नहीं करता।

भ्रष्टाचार के विरोध में जनता के प्रयास –

अन्ना हजारे के नेतृत्व में बाबा रामदेव, वकील अरविंद केजरीवाल, पूर्व आई०पी०एस० किरण बेदी तथा अनेक आम लोगों द्वारा अनेक आन्दोलन किये गये। ये सभी लोकपाल बिल पास कराने के मत में थे। जिससे हर राज्य में एक लोकपाल अर्थात् जनता का प्रतिनिधि हो जो भ्रष्टाचार को रोक सके। इसके लिए अन्ना हजारे 16 दिन अनशन पर भी बैठे। उनकी माँगे मान कर लोकपाल बिल को पास करने का फैसला किया गया। मगर आज भी मजबूत लोकपाल बिल पास नहीं हो पाया। किसी कारण से लोकपाल बिल में सीबीआई को रखा नहीं जा रहा। अन्ना हजारे के अतिरिक्त बाबा रामदेव भी दिल्ली के जंतर–मंतर पर अनशन पर बैठे पर उन्हें दिल्ली पुलिस ने लाठी चार्ज कर भगा दिया। इस प्रकार आज भी लोकपाल बिल पर बहस जारी है। अब केजरीवाल ने चुनाव में खड़ा होने का फैसला किया है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई आज भी जारी है।

भ्रष्टाचार समाप्त करने के उपाय –

आज देश में बढ़ती भ्रष्टाचार की प्रमुख समस्या का कारण कानून में ढिलाई है। भ्रष्टाचार के निवारण के लिए हमें कानून व्यवस्था में सुधार करना होगा। तथा जनता को भी अपने कर्तव्य का पालन करते हुए घूस देने से बचना होगा। यदि हम घूस देंगे नहीं तो वे लोग घूस नहीं ले पायेंगे और भ्रष्टाचार को बढ़ावा नहीं मिलेगा। और भ्रष्टाचार का अंत हो जाएगा। भ्रष्टाचार का अंत करने के लिए जनता को ही अपनी तरफ से प्रयास करने होंगे। उन्हें एकजुट होकर भ्रष्टाचार का विरोध करना होगा तभी भ्रष्टाचार का अंत हो पाएगा। सरकार को कानून व्यवस्था में सुधार करना होगा। तभी भ्रष्टाचार का समापन हो पाएगा। भ्रष्टाचार सरकार व जनता के एकजुट प्रयास से ही समाप्त होगा।

भ्रष्टाचार खत्म करने में सरकार के प्रयास –

भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए सरकार द्वारा भी प्रयास किये गये हैं। लोकपाल बिल को पारित करने का प्रयास भी किया गया है। सी बी आई द्वारा सुरेश कलमाड़ी, डी राजा पर केस चल रहा है तथा उनको सजा भी सुनाई जानें वाली है। सरकार ने आन्दोलन में जनता की सुरक्षा के लिए पुलिस सुरक्षा भी प्रदान की गई थी। सरकार को और ज्यादा प्रयास कर भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहिए। सरकार इस विषय पर बयान तो देती है मगर उस पर अमल नहीं करती सरकार को पूर्ण प्रयास कर भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहिए। तभी जनता का सरकार पर भरोसा रहेगा। सरकार को उचित

कदम उठाने होंगे तभी भ्रष्टाचार की समाप्ति हो पायेगी।

उपसंहार –

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि भ्रष्टाचार सरकार की जड़ों में फैल चुका है इसे तभी समाप्त किया जा सकता है जब सरकार व जनता दोनों इसका विरोध करे तभी भ्रष्टाचार की समस्या समाप्त हो पाएगी। कि जब आम जनता अन्ना हजारे व रामदेव की तरह आगे आकर इसका विरोध करेगी तथा सही नेता को चुनकर देश का भविष्य सही हाथों में देगी।

❁ ❁ ❁

सोम शर्मा के पिता की कहानी

शिवम शिवहरे
सप्तम 'ग'

एक गाँव में कोई गरीब युवक रहता था। उसका नाम धनपाल था। वह प्रतिदिन भिक्षा के लिए गाँव–गाँव घूमा करता था। भिक्षा में प्राप्त बहुत सारे सत्तू से उसका घड़ा भर गया। वह घड़े को खूँटी पर टाँगकर उसके नीचे चारपाई पर सोया करता था तथा सोते समय लगातार घड़े को एकटक देखा करता था। उसने एक बार रात में इस प्रकार सोचा–मेरा यह घड़ा सत्तू से भरा है। जब अकाल पड़ेगा तब सत्तू बेचकर बहुत–सा धन प्राप्त करूँगा। फिर उस धन से मैं दो बकरियाँ खरीदूँगा। दो बकरियों के बच्चों से मेरे पास बकरियों का समूह हो जायेगा। बकरियों को बेचकर गायों, भैसों और घोड़ों को खरीद लूँगा, उनके बच्चों से बहुत सारे पशु हो जाऐंगे। उन्हें बेचने से मेरे पास बहुत सारा धन आ जाएगा। उस धन से मैं विशाल भवन का निर्माण कराऊँगा। तब मुझे धनी मानकर कोई सुंदर कन्या मुझे प्रदान कर देगा अर्थात् मेरा विवाह किसी सुंदर लड़की से हो जाएगा। उसके बाद मेरा पुत्र होगा। मैं उसका नाम सोमशर्मा रखूँगा। जब कभी खेलता हुआ वह पुत्र मेरे पास आएगा। तब क्रोधित होकर मैं अपनी पत्नी से कहूँगा–"इस बालक को ले जाओ।" घर के काम में व्यस्त वह जब मेरी बात नहीं सुनेगी तो मैं पत्नी के ऊपर पैर से प्रहार करूँगा। इस प्रकार स्वप्न में प्रेरित हुए उसने पैर से प्रहार किया। उस प्रहार से सत्तू से भरा घड़ा जमीन पर गिर पड़ा और टूट गया। टूटे घड़े के साथ ही उसके सभी मनोरथ भी टूट गए अतः कहा गया है–

"परिश्रम से ही कार्य सिद्ध होते हैं, इच्छा करने मात्र से नहीं"

❁ ❁ ❁

तरुण वर्ग की निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान

सीमा पार से आतंकवाद

आशीष कुमार
द्वादश 'क'

आज देश के समक्ष अनेक समस्याएँ मुँह बाये हुए खड़ी हैं, जिसमें से सबसे भयानक समस्या हमारे देश के लिए आतंकवाद ही है। यह आतंकवाद ही देश की बर्बादी का कारण है।

मनुष्य भय के कारण ही निष्क्रिय और पलायनवादी बन जाता है। अपने नीच स्वार्थों की पूर्ति के लिए यह आतंकवादी हिंसापूर्ण साधनों का प्रयोग करते हैं। ये कहीं से उत्पन्न नहीं हुए हैं, ये लोग सीमा पार से घुसपैठ करके देश के अन्दर प्रवेश करते हैं। आतंक, मौत, त्रास ही इनके लिए प्रमुख होता है। लेकिन ये लोग यह नहीं जानते कि –

कौन कहता है कि मौत का अंजाम होना चाहिए।
जिन्दगी को जिन्दगी का पैगाम होना चाहिए।।

आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या –

आज आतंकवाद ने सारे विश्व को घेर रखा है। पूरा विश्व इसकी भयानक आग में जल रहा है। जे0सी0 स्मिथ अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'लीगल कंट्रोल ऑफ इण्टरनेशनल टेररिज्म' में लिखते हैं कि – ' समाज में यह तनावपूर्ण वातावरण देखते हुए कहा जा सकता है कि अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद में तेजी आएगी और एक देश द्वारा दूसरे देश पर आतंक व कोहराम मचवाने की घटनाओं में वृद्धि होगी।'' यह बात सच हुई, ऐसा ही हुआ। कुछ आतंकवादी गुटों ने तो अपने अंतर्राष्ट्रीय संगठन बना लिए हैं। कोई देश चाहें वह आर्थिक दृष्टि या अस्त्र–शस्त्र आदि से मजबूत क्यों न हो, आतंकवाद जैसी घटनाओं से बच नहीं सकता। भरत और श्रीलंका जैसे देश इन आतंकवादी लपटों में जल रहे हैं।

भारत को बर्बाद करने में दूसरा देश चाहे वह पाकिस्तान हो या चीन तनिक देर भी नहीं लगाता। जब पाकिस्तान सन् 1967, 1948, 1971 और् 1999 में हुए युद्धों में हार गया तो सीमा पार से चुपके–चुपके घुसपैठ कराने लगा। वहीं आतंकी लोग ही देश में प्रवेश लेकर, देश को बर्बादी का रास्ता दिखाते हैं। हमने इन युद्धों में आक्रमण का सामना तो किया लेकिन अपने द्वारा किसी पर हमला नहीं किया। क्योंकि सेना को इन नेताओं का आदेश नहीं होता है। आज के नेता यह भूल गए कि इनके प्रति 'शठे शाठ्यम् समाचरेत्' जैसी नीति ही प्रयोग की जानी चाहिए। ये आंतकी लोग देश में मारकाट करते हैं। सीमा पार से जब ये देश में आते हैं, इनके विचार जेहाद में पगे हुए और सिर पर बर्बादी का जुनून लिए हुए कश्मीर को अपना आक्रमण केन्द्र बनाते हैं। ग्रहमंत्रालय के आकड़ों के अनुसार कश्मीर में अब तक 60 हजार लोगों की हत्या की जा चुकी है।

अगर हम कश्मीर की हालात पर नजर डालें तो हमारे शब्दों में यही कहा जा सकता है कि जम्मू की सरजमीं लहू से लाल है। रोजाना किसी का सिन्दूर पोंछ दिया जाता है तो किसी के बुढ़ापे के

सहारे को छीन लिया जाता है। कभी भगवान शिव के दर्शनार्थ गए सैकड़ों भक्तों को गोलियों से भून दिया जाता है। यह सब देखकर मैं बहुत आहत् हूँ।

करा लो दंगे करा लो फसाद।
तुम हो गुण्डे, तुम हो बदमाश।।
तुम्हारे अन्दर जेहादी जुनून।
बहाते हो तुम सज्जनों का खून।।

पवित्र राम मन्दिर गए भक्तों पर हमला हो जाता है। हमारी संसद पर भी हमला हो चुका है। इण्डियन एयरलाइन्स के विमान का अपहरण भी हो गया था। यही सब समस्यायें ही देश की सुरक्षा पर प्रश्न चिह्न लगाती हैं। यह सब देखकर मेरे मानस में राष्ट्रवाद हिलोरें ले रहा है –

आतंकवाद की जड़ जो फैली, विनाश बहुत जरुरी है।
विनाश हुआ न इसका तो सबकी प्रगति अधूरी है।।
इसका बीजारोपण होता कुछ लोगों की गद्दारी से।
इसके पाँव बहुत बढ़ आए, शासन रहा खुमारी में।।
आज देश काले घोर–घनों में घिर आया है।
जाने क्या होने वाला है, अंधेरा देखो छाया है।।
उग्रवाद की लपटों से जनता में कोहराम मचा।
यह ऐसी विनाश शक्ति है, जिससे कोई नहीं बचा।।
इससे लोहा लेना, अब सबके लिए जरूरी है।
आतंकवाद की जड़ जो फैली, उन्मूलन बहुत जरूरी है।।

सीमा पार से पाकिस्तान कश्मीर पर हमला करके अपने अधिकार की घोषणा करता है। अफजल, कसाब आदि आतंकवादी जो आतंक में प्रशिक्षित थे, इसी देश के थे। हमारी सरहदों के पार हिन्दुस्तान को नष्ट करने की साजिशें चल रही हैं। दुनियाँ का स्वर्ग कश्मीर और भारत माता का मुकुट जिसे पाकिस्तान सीमा पार से अपने आतंकवादी भेजकर कब्जाना चाहता है। इसी कारण कश्मीर में लोगों की संख्या कम होती जा रही है। ये आतंकवादी पाकिस्तान में प्रशिक्षित होते हैं और भारत में प्रवेश लेते हैं। इनके लिए बच्चों–बूढ़ों की हत्या करने में कोई फर्क नहीं।

मेंहदी भी सूखी नहीं, जहाँ सिन्दूर खून में बदल गया।
केसर के बागों में, लाशों का सागर मचल गया।।
इन आतंकियों से सारी दुनिया थर्रायी है।
नभ पर काला बादल छाया सारी पृथ्वी डगमगाई है।।

अगर हम अपने देश के पूर्वी राज्यों असम, मिजोरम, मेघालय, बंगाल, आन्ध प्रदेश की बात करें, ये सभी राज्य सीमा पार के आतंकवादियों से त्रस्त हैं। बांग्लादेश की सीमा जो हमारे देश से जुड़ी है, उस पर नजर डालें तो यही देखने को मिलता है कि सीमा पर कड़ी सुरक्षा न होने के कारण माओवादी भारत में प्रवेश कर रहे हैं। अखबारी आंकड़ों के अनुसार एक महीने में पाँच सौ से अधिक माओवादी भारत में प्रवेश कर रहे हैं। वह यहाँ आकर बसते हैं, रहने के लिए जमीन न होने के कारण हिन्दुओं पर अत्याचार करते हैं। भारत और नेपाल की सीमा पर सुरक्षा नहीं है। वहाँ के आतंकी लोग भी भरत में आसानी से प्रवेश पा जाते हैं। आखिर हम कब तक यह सब देखते रहेगें। आजकल के नेता भी पड़े–पड़े आराम कर रहे हैं। हमारे अनुसार लगभग सभी नेता भ्रष्ट हैं। ये नेता वोटों के भूखे होते हैं। आज की इस हालात को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि हमारा देश बर्बादी की राह पकड़ रहा है। आज देश का किशोर भी यह सब देखकर आहत है। उसके मुख से यही शब्द निकलते हैं।

वैसे तो तजुर्बे की खातिर ना काफी है यह उम्र मगर।
हमने तो जरा से अरसे में, मत पूछिये क्या–क्या देखा है।।

सीमा पार से पाकिस्तान अप्रत्यक्ष युद्ध लड़ रहा है। पाकिस्तान की कोख से जन्में खूँखार आतंकवादी कश्मीर में नित नयी आतंकी गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं। आज आतंकवाद का सबसे बड़ा कारखाना पाकिस्तान भी कहा रहा है कि आतंकवादी घटनाएँ मानवता के लिए कलंक हैं, इन्हें खत्म करना चाहिए। जबकि वह आंतकवाद को सहायता दे रहा है। उसके कहने और करने में दोगलापन है। ये सीमा पार के आतंकवादी इतने खूँखार होते हैं, जिनका शिकार देश का आम आदमी ही नहीं हुआ है, महत्वपूर्ण लोग भी हुए हैं। आतंकवाद ने ही इन्दिरा गाँधी और राजीव गाँधी को अपनों से विदा कर दिया। आई.एस.आई. और लश्कर ए तोएबा जैसे संगठन हिन्दुस्तान को बरबाद करने की सोच रहे हैं। आखिर हम कब तक यह सब देखते रहेंगें। आतंकवादी समय–समय पर हमले करते रहते हैं। अति किसी की भी अच्छी नहीं होती है। भारत अधिक समय तक शान्त नहीं रहेगा। एक दिन आतंकवाद के खिलाफ उठ खड़ा होगा और सारा विश्व उसके साथ होगा। तब यही कहना उचित होगा।

चाहे जितनी कोशिश कर लो, वीरत्व रंग दिखलाएगा।
नापाक इरादों का परचम, लहरा न कभी फिर पाएगा।।
हमसे टकराने का हौसला, अगर किसी ने बांधा तो।
इतिहास गवाही देगा, वह मिट्टी में मिल जाएगा।।

जिम्मेदार कौन?

पाकिस्तान को अप्रत्यक्ष रुप से आश्रय देने वाला अमेरिका भी अन्ततः अपने खोदे हुए गड्ढे में गिर गया। राजनैतिक मुखौटे में छिपी हुई उसकी काली करतूत, अविश्वसनीय रूप से उजागर हो

गयी। भारत वर्षों से चीख–चीखकर सारे विश्व के समाने यही कहता आया है कि अमेरिका आर्थिक और अस्त्र–शस्त्र सम्बन्धी सहायता पाकिस्तान को देना बन्द करे और उसे आतंकवादी राष्ट्र घोषित करे क्योंकि पाकिस्तान ली गयी सहायता का प्रयोग भारत के खिलाफ आतंकवादी गतिविधियों के लिए कर रहा है, किन्तु भारतीयों की मृत्यु के लिए अमेरिका के पास उत्तर था –

खत्म होगा न जिन्दगी का सफर,
मौत बस रास्ता बदलती हैं।

जैसे भारतीयों पर होने वाले हमले कोई मायने ही नहीं रखते हैं। अमेरिका ने लादेन को पकड़ने के लिए जबरदस्त मुहिम जताई। हमने उसका समर्थन किया और कहा कि हम भी ऐसा करेगें। परन्तु जब हमारी बारी आयी तो हम अमेरिका का समर्थन पाने की आस में बैठे रहे, आज के नेता तो दूसरों की चिता पर रोटियाँ सेंकना खूब जानते हैं। उन्हें सिर्फ अपने से मतलब है। इससे सिद्ध है कि हिन्दुस्तान के लिए एक दुश्मन अमेरिका भी है। क्योंकि अमेरिका पाकिस्तान को सहायता देकर भारत में घुसपैठ करा रहा है।

हमारा मानस –

अभी हाल ही में अफजल को फाँसी दी गयी उससे पहले कसाब को फाँसी दी गयी, यह जानकर बहुत खुशी हुई। इस आतंकवादी ने सीमा पार से आकर मुम्बई हमले की साजिश रची थी। इनका खात्मा ऐसे ही होगा। अभी जब 26 जनवरी से पहले पाकिस्तान द्वारा जो गोलाबारी की जा रही थी वह इसलिए थी कि भारत इस गोलाबारी से डर जाएगा और हम तुरन्त घुसपैठ करा देगें। वहाँ सीमा के पार सैकड़ों प्रशिक्षित आतंकवादी घुसपैठ के लिए तैयार थे। हमारी आँखों से यह सब देखा नहीं जा सकता अगर देश की रक्षा की बात होगी तो हम प्राण गवाने को तैयार हैं और अन्त में बस हम यूं ही कि –

मैं तो कुछ और लिखूँ लेकिन आँखें नम हो जाती हैं।
हाँथों में कम्पन्न होने से, लेखनी स्वतः गिर जाती है।।

❀ ❀ ❀

आ वायो भूष शुचिपा S उप नः सहस्रं ते नियुतो विश्ववार।
उपो ते S अन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयं वायवे त्वा।
यजुर्वेद ७.७।।

भावार्थः जो योगी प्राण के तुल्य सब को भूषित करता, ईश्वर के तुल्य अच्छे–अच्छे गुणों में व्याप्त होता, और अन्न वा जल के सदृश सुख देता है, वही योग में समर्थ होता है।

तरुण वर्ग की निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान

आरक्षण

अंकित शुक्ल
एकादश 'क'

प्रस्तावना –

हमारे देश में प्राचीन काल से ही वर्णाश्रम व्यवस्था रही है। कालान्तर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब हमारे नेताओं ने देश की तात्कालिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भविष्य की योजनाओं पर विचार किया तो आरक्षण का मुद्दा सामने आया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अपने विचार रखे और कहा कि समाज में पिछड़े वर्ग की आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक स्थिति को सुधारने के लिए एक दसवर्षीय योजना की आवश्यकता है। जिसके अनुसार पिछड़े वर्ग के लोगों को उच्च वर्ग के समकक्ष करने के लिए उन्हें सेवाओं तथा नौकरियों में आरक्षण प्रदान करने की बात कही गई। यह प्रस्ताव दस वर्ष के लिए स्वीकार कर लिया गया। दस वर्षों के पश्चात भी समाज की स्थिति में अधिक सुधार नहीं हुआ और यह योजना भविष्य में सुधार आने तक बढ़ा दी गई। आरक्षण आज भी हमारे देश की नौकरियों एवं प्रशासनिक सेवाओं में लागू है।

आरक्षण के पक्ष एवं विपक्ष में तर्क –

आरक्षण के समर्थक एवं विरोधी प्रायः दो आधारों पर आरक्षण के सन्दर्भ में अपनी बात की पुष्टि करते हैं –

(i) जाति व्यवस्था के आधार पर –

पक्ष में–आरक्षण के समर्थक अपना पक्ष रखते हुए कहते हैं कि –

(क) संविधान में पिछड़े वर्गों के लिए विशेष सुविधाओं एवं नियमों की व्यवस्था की गई है। अतः आरक्षण एक विधिसम्मत प्रक्रिया है।

(ख) समाज में पिछड़े वर्ग की स्थिति अभी भी अच्छी नहीं है अतः आरक्षण की आवश्यकता अभी भी है।

(ग) प्रतिभा केवल ऊँचे कुल के लोगों में ही नहीं होती यह तो किसी भी व्यक्ति में हो सकती है अतः हमें भी बराबर अवसर मिलना ही चाहिए।

(घ) देश में पिछड़े वर्ग की स्थिति का जिम्मेदार समाज है अतः उसी की जिम्मेदारी है कि वह पिछडे वर्गों को भी अवसर दे।

विपक्ष में– आरक्षण के विरोधी कहते हैं कि–

(क) आरक्षण के कारण अयोग्य व्यक्ति उच्च पद पहुँच जाते हैं परन्तु योग्य एवं उच्च कुल के व्यक्ति सफल नहीं हो पाते हैं अतः आरक्षण की अवधारणा अव्यवहारिक है।

(ख) आरक्षण के कारण निम्न कुल के अयोग्य व्यक्ति शासकीय कार्यों में पहुँच जाते हैं और कार्यों की गति को प्रभावित करते हैं।

(ग) उच्च वर्ग के योग्य व्यक्ति भी अपनी योग्यतानुसार उच्च पदों पर नहीं पहुँच पाते हैं।

(ii) आर्थिक आधार पर –

पक्ष में – इस प्रकार के आरक्षण के समर्थकों के अनुसार सामाजिक असमानता आर्थिक असमातना के साथ ही आती है। अतः सामाजिक संतुलन के लिए आर्थिक दृष्टि से संतुलन अत्यधिक आवश्यक है। अतः यह आरक्षण समाज के हित में है। गरीब एवं कमजोर लोग किसी भी वर्ग में हो सकते हैं अतः आर्थिक आधार पर आरक्षण लागू होने से समाज में बनी गरीबी और अमीरी की खायीं को पाटा जा सकता है।

विपक्ष में –आरक्षण के विरोधियों के अनुसार यह आरक्षण भी समाज के हित में नहीं होगा। अतः यदि निम्नवर्गीय लोग उच्च पदों पर आएँगे तो गरीबों और अमीरों के बीच परस्पर द्वेष बढ़ता जाएगा।

संवैधानिक आधार पर –

संविधान के अनुसार समाज की स्थिति को सुधारने के लिए आरक्षण आवश्यक है। परन्तु स्वतंत्रता के इतने वर्षों के पश्चात् भी आरक्षण अमीरों एवं गरीबों के बीच द्वेष का कारण भी बन सकता है। संविधान के अनुच्छेद 14–18 में समानता के अधिकारों का विशद् विवेचन किया गया है। संविधान के द्वारा ही पिछड़े लोगों के लिए विशेषाधिकारों एवं आरक्षण की व्यवस्था की गई। नारी की दशा सुधारने के लिए उन्हें 33% आरक्षण तथा पिछड़े वर्ग के लिए 27% आरक्षण की व्यवस्था की गई है।

राजनीति का प्रभाव –

भारतीय राजनीतिज्ञों ने आरक्षण के मुद्दे को अपने स्वयं के हित के लिए प्रयोग किया है। विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने अपने–अपने अनुसार इस मुद्दे का प्रयोग अपना वोट बैंक बढ़ाने में किया है। जब बिहार में सर्वप्रथम आरक्षण की घोषणा हुई तो जनता ने इसका विरोध किया तो कुछ ने इसे समर्थन भी दिया। इस प्रकार लोगों के बीच जातिवाद को बढ़ावा मिला।

उपसंहार –

स्वतंत्रता के इतने वर्षों के पश्चात् भी आरक्षण के मुद्दे का आखिर क्या उद्देश्य है? आरक्षण के विरुद्ध आंदोलन में कई उच्चवर्गीय युवकों ने आत्मदाह तक कर लिया। अतः यह योजना अपने मूल कल्याणकारी उद्देश्य से पूर्णतः भटक चुकी है और इस पर निष्पक्ष पुनरावलोकन की आवश्यकता है।

❀ ❀ ❀

तरुण वर्ग की कविता लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

मैं बेटी हूँ

दिव्यांशु कश्यप
एकादश 'ख'

सुना जब मैं थी गर्भ में
कह रहे थे पिता मेरे सन्दर्भ में
है सुता तुम्हारी कोख में
नहिं सुत समान लोक में
दो तुम इसे गर्भ में मिटा
है मेरा आदेश मैं हूँ इसका पिता
सुन ये कटु बाण बोली मेरी माता
भेद पुत्र–सुता में तुम्हे न भाता
नहीं चाहिए मुझे पुत्र की रौनक
बेटी ही है मेरी असली दौलत
हुई उदित जब मैं धरा पर
बेमन सा चूँमा पिता ने मेरा सर
कहते थे इसने मेरा बुझा दिया कुल दीप
करते है फक्र जब नाम हुआ उनका प्रतिदीप्त
जिससे बनायी उन्होने वर्षों दूरी
है वो अब दो सदनों की धुरी
बेटा–बेटी में क्या है अन्तर
बनाती बेटी सुखी निरन्तर
बेटा–बेटी से करो प्रेम समान
मूल रहस्य यह, जग का इसमें ही कल्याण

पुष्प की कली

दिव्यांशु कश्यप
एकादश 'ख'

पुष्प की कली खिल रही है
ऋतु वसंत के गले मिल रही है।
समेटे भीतर धूप की छाया
कहती बंसत दिवा बहुत भाया
पुष्प को करती समर्पित काया।
खिल–खिल कर कहती बसंत अब आया–बसंत अब आया
सीख लेना मेरी पंखुड़ियों से
न टूटना तुम सर्द की बेड़ियों से
जब तोड़े तुम्हें कोई अंगुलियों से
कहना न तोड़ पाया कोई मुझे सदियों से
सदी का पहर गया मैं खड़ी रही
अब्द का जहर गया मैं अड़ी रही
न तोड़ो मुझे, तुम न तोड़ पाओगे
बसंत जो गया न तुम मुझे भूल पाओगे
देखो उधर कली पुष्प बन गयी है।
कली की जगह रिक्त हो गयी है।
छोड के मुझे तुम भी कली बन जाओ
और तुम भी मेरे संग मिलकर गाओ।
पुष्प की कली खिल रही है।
ऋतु बसंत के गले मिल रही है।

तरुण वर्ग की कविता लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान

चुनाव और नेता

गौरव शुक्ल
एकादश 'ख'

आ गयी चुनावी की बेला
प्रत्याशी फिर बने रौमॉ रोला
शुरू हुई फिर दौड़ कानपुर से लखनऊ
दबंग नेता भी बन गया आज गऊ।

अब याद आ गये कल्लू चाचा,
साल भर पहले नहीं कोई नाता,
अब गली–गली घूमें है धूप में
उतरते नहीं थे कार से पहले इस रुप में।

आ गयी चुनावी बेला।
प्रत्याशी फिर बने रौमॉ रोला।।

आज दुश्मन भी बन गया दोस्त,
क्या त्योहार है चुनाव का मस्त
जनता की सब समस्या अब इनकी अपनी,
पहले था अतंर इनकी कथनी और करनी में।

चुनाव का मौसम है बसंत की तरह,
लालू प्रसाद यादव आज ही बाजपेयी जी की तरह,
चुनाव स्थल पर ले जाने हेतु देंगे अपनी कारें
बाद में अगर मरते भी है तो हम हैं बेकार

आ गयी चुनावी की बेला।
प्रत्याशी फिर बने रोमॉ रोला।

राष्ट्रीय एकता

मानस मिश्र
दशम 'ग'

प्रस्तावना –

राष्ट्रीय एकता का भावात्मक अर्थ है राष्ट्र के सभी व्यक्तियों के द्वारा एक साथ मिल–जुलकर अपने राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना। राष्ट्र तब ही उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है जब उस राष्ट्र के निवासी एक साथ मिल–जुलकर अपना योगदान दें। भारत में अनेकता मे एकता है। भारत एक विविधताओं का देश है। जब किसी राष्ट्र के निवासी एकजुट होकर के अपना योगदान देश को उन्नति के मार्ग पर लाने के लिये करेगें तब ही यह सम्भव है कि वह राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो जायेगा।

जिनको न निज गौरव निज देश पर अभिमान है।
वह नर नहीं पशु निरा है और मृतक समान है।।

अर्थात् जिस व्यक्ति को अपने देश की समृद्धि तथा गौरव पर अभिमान नहीं है वह व्यक्ति नर नहीं है पशु की तरह हैं तथा वह व्यक्ति मृतक अर्थात् भावनाहीन है जिसको अपने देश से कोई लगाव नहीं है वह व्यक्ति अपने आप को व्यक्ति नहीं कह सकता तथा वह मृतक के सदृश है।

राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय –

भारत एक विशाल देश है। विकासशील देशों के अन्तर्गत आता है। राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय है कि किसी राष्ट्र के व्यक्तियों का सामूहिक रूप से अपने देश को विकास के पथ पर अग्रसर करना। राष्ट्रीय एकता के कारण ही देश सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सकता है लेकिन अगर किसी राष्ट्र के व्यक्तियों में आपस में एकता नहीं है तो वह राष्ट्र अवनति के मार्ग पर भी अग्रसर हो सकता है इसलिये अगर राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर बढ़ाना है तो राष्ट्र के सभी व्यक्तियों को एकजुट होकर प्रयास करना चाहिये।

अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत ते सब बन्दे।
एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले कौन मन्दे।।

गुरू नानक जी ने कहा है कि ईश्वर ने ही सभी व्यक्तियों का निर्माण किया है इसी नूर से पूरे संसार का निर्माण हुआ है तथा उसको पता है कि कौन पुरुष कुशल बुद्धि के हैं तथा कौन मन्द बुद्धि के हैं।

राष्ट्रीय एकता का आधार –

राष्ट्रीय एकता का प्रमुख आधार इसलिये माना गया है क्योंकि राष्ट्रीय एकता न होने पर देश किसी भी मार्ग पर आगे नहीं बड़ सकता है। राष्ट्रीय एकता का प्रमुख आधार एकता है। एकता के

कारण ही देश में सभी व्यक्ति एक साथ मिलकर रहकर भ्रष्टाचार का समूल नाश कर सकते हैं। एकता के कारण ही राष्ट्र के व्यक्तियों में विश्व बन्धुत्व की भावना से आपस में प्रेम से रहकर राष्ट्रीय एकता को प्रेरित कर सकते हैं। अगर राष्ट्र के व्यक्तियों में विश्व बन्धुत्व की भावना हो तो वह पूरे संसार के व्यक्तियों को अपने भाई के सदृश मानकर सभी व्यक्तियों के साथ भाई चारे का भाव रखता है।

राष्ट्रीय एकता से लाभ –

किसी भी राष्ट्र के उन्नति के मार्ग पर बढ़ने के लिये राष्ट्रीय एकता सबसे महत्वपूर्ण है। बिना राष्ट्रीय एकता के देश या राष्ट्र का उन्नति के मार्ग पर बढ़ना असंभव है। राष्ट्रीय एकता वह शक्ति है जिसके कारण किसी भी भारी शक्ति वाले राष्ट्र से आमना–सामना कर सकते हैं तथा उनसे विजय भी प्राप्त कर सकते हैं। हम संगठित होकर किसी भी कठिनाइ का हल निकाल सकते हैं। राष्ट्रीय एकता के उत्पन्न होने से हमें अपने देश के प्रति प्रेम भी उत्पन्न होने लगता है। अपने राष्ट्र के प्रति एकता के साथ अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये। जिसके कारण की हमारे राष्ट्र का उत्थान होना प्रारम्भ हो जायेगा।

उपसंहार –

राष्ट्रीय एकता एक महत्वपूर्ण तत्व है जिसके बिना राष्ट्र का उत्थान कर पाना संभव न होगा। इसलिये राष्ट्र को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिये राष्ट्रीय एकता का उपस्थित होना बहुत ही आवश्यक होता है। यदि देश के नागरिक सुनागरिक बनें तो उनमें राष्ट्र प्रेम की भावना कूट–कूटकर भरी होती है।

साधनों की मुट्ठियों में धरतियाँ सिमटी हुईं।
और फिर भी फाँसला ही फाँसला चारो तरफ।।

उपर्युक्त बातों से सिद्ध होता है कि राष्ट्र की उन्नति के लिये राष्ट्रीय एकता बहुत महत्वपूर्ण है।

❀ ❀ ❀

स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्य ऽ इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा।
त्वा सुभव सूर्याग्य देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्य ऽ उदानाय त्वा।।

यजुर्वेद ७.६।।

भावार्थ: मनुष्य जबतक श्रेष्ठाचार करने वाला नहीं होत, तब तक ईश्वर भी उसको स्वीकार नहीं करता। जब तक उस को ईश्वर स्वीकार नहीं करता है, तब तक उसका आत्मबल पूरा–पूरा नहीं हो सकता और जब तक आत्मबल नहीं बढ़ता, तब तक उसको अत्यन्त सुख भी नहीं होता।।

राष्ट्रीय एकता

अर्पित सचान
दशम 'ग'

रुपरेखा –

1. प्रस्तावना
2. राष्ट्रीय एकता का आधार
3. राष्ट्रीय एकता के विविध रूप
4. राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता
5. राष्ट्रीय एकता में बाधाएँ
6. राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के उपाय
7. उपसंहार

1. प्रस्तावना –

'राष्ट्रीय एकता' का अर्थ है – 'राष्ट्र की एकता'। अर्थात् उस राष्ट्र में रहने वाले लोगों के बीच एकता (एक होना) का भाव। एकता का भाव ही एकमात्र ऐसा भाव है जो राष्ट्र को कुशल, विकसित व अग्रगण्य बनाता है। राष्ट्रीय एकता देश में व्याप्त राजनीतिक, सांस्कृतिक, साम्प्रदायिक व अन्य कई प्रकार के दोषों से देश की रक्षा करता है। भारत विभिन्नताओं का देश है। यहाँ जगह–जगह पर बोलियों व धर्म में अंतर है परन्तु यहाँ पर अनेकता होते हुये भी लोगों में एकता का भाव व्याप्त है। यदि कोई आतंकवादी किसी देश पर आक्रमण करता है तो वहाँ की सबसे पहली बात यह होती है कि उस देश में एकता है या नहीं। यदि उस देश में एकता का भाव है। तो अवश्य ही वह देश उन आतंकियों से छुटकारा पा लेगा। यह बात जरुरी नहीं होती कि देश कितना बड़ा है जबकि मायने यह बात रखती है। उस देश के लोगों में एकता है या नहीं। यह जरुरी नहीं कि एकता केवल अच्छे लोगों में ही हो। एकता किसी भी प्रकार के मनुष्यों में हो सकती है।

2. राष्ट्रीय एकता का आधार –

भारत देशों का देश है। भारत के प्रत्येक भाग में विभिन्न–विभिन्न बोलियाँ, जाति, धर्म, वेशभूषा आदि की मान्यता है। यदि कोई अनजान व्यक्ति भारत आये और भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण करे तो वह यही कहेगा कि "भारत एक देश नहीं, बल्कि देशों का देश है।" भारत उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। जहाँ पर अनेक प्रकार के पर्वत, नदियाँ, तापमान आदि चीजों में भी विभिन्नतायें हैं यहाँ लेह में तापमान $-45^{\circ}C$व जेसलमेर में तापमान $+50^{\circ}C$ है। असम में 300cm. के लगभग वर्षा होती है तो जेसलमेर में 3cm. भी नहीं होती है। इसी कारण भारत विभिन्नताओं का देश है और भारत में अनेकता होते हुये भी एकता है।

"कोस–कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी"

3. राष्ट्रीय एकता के विविध रूप –

हमारे देश की एकता का आधार दर्शन और साहित्य है। ये हमारे देश की विभिन्नताओं और असमानताओं को समाप्त करने के पक्षधर है। किसी भी देश की राष्ट्रीय एकता का मुख्य आधार वहाँ के लोग होते हैं। यदि वहाँ के लोगों के विचार अच्छे हैं तो वहाँ के लोगों में राष्ट्रीय एकता की भावना

अवश्य ही कूट–कूट कर भरी होगी। हमारे देश में भी राष्ट्रीय एकता का भाव भरा है।

"राष्ट्रीय एकता जोश, जज्बा, जुनून का वह पुलिंदा है,
जिसके कारण आज हमारा देश जिंदा है।"

4. राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता –

किसी भी देश के विकास में राष्ट्रीय एकता का बड़ा ही महत्व है। राष्ट्रीय एकता ही देश को गौरवशाली राष्ट्र बनाती है। हमारे देश में हम राष्ट्रीय एकता का प्रमाण कुछ उदाहरण देकर बता सकते हैं जैसे कि हमारे देश में किसी भी जाति धर्म के साथ भेदभाव नहीं किया जाता है। जैसे डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम जैसे कई व्यक्ति उच्च पद पर नियुक्त हो चुके हैं।

किसी भी देश की उन्नति का सर्वोत्तम मार्ग राष्ट्रीय एकता है। यदि किसी देश में राष्ट्रीय एकता का भाव उन्नति नहीं कर सकता जबकि अवनति के मार्ग पर वह जरूर अग्रसर होगा। कई देशों में तो लोग अपने ही देश को बर्बाद करने में लगे रहते रहते हैं। यह बात प्रमाणित करती है कि वहाँ के लोगों में राष्ट्रीय एकता की भावना नहीं व्याप्त है। हाल ही में पाकिस्तान के कुछ लोगों ने पाकिस्तान के ही किसी शहर में बम विस्फोट कर दिया था। जिससे वहाँ के लगभग 200 लोग मारे गये हैं। आज तक पाकिस्तान के कोई भी राष्ट्रपति ने आज तक पूरा कार्यकाल समाप्त नहीं किया है। वे कहीं इस घोटाले में पकड़े गये तो किसी दूसरे घोटाले में। हम किसी दूसरे देश की बात ही क्यों करें। हमारे अपने देश में राष्ट्रीय एकता की भावना समाप्त होती जा रही है।

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नही, नर पशु है निरा व मृतक समान है।"

5. राष्ट्रीय एकता बनाये रखने के उपाय –

राष्ट्रीय एकता बनाये रखने के कई उपाय हो सकते है। सर्वप्रथम हमें अपने विचार बदलने होंगे व सभी लोगों को रोजगार प्रदान करना होगा व भ्रष्टाचार चोरी तथा डकैती जैसे दोषों को खत्म करना होगा। हमें अपने देश के कानून को बदलना होगा। इस प्रकार के कार्य करने वाले लोगों के लिये कड़ी से कड़ी सजा की व्यवस्था करनी होगी। देश का अहित चाहने वाले लोगों के विरूद्ध आन्दोलन चलाना होगा। शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना भी अनपढ़ व्यक्ति नहीं रहेगा और उनके विचार उच्च होंगे तो कोई भी राष्ट्रीय एकता से दूर भागने का प्रयास नहीं करेगा और हमारा देश राष्ट्रीय एकता में अग्रगण्य होगा।

" अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे
एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले कौन गंदे।"

6. उपसंहार –

राष्ट्रीय एकता की भावना श्रेष्ठ भावना है। इस भावना को जागृत करने के लिये सर्वप्रथम मनुष्य को समझना होगा। एकता की भावना मनुष्यों को भी श्रेष्ठ बनाती है। अतः हमें एकता की भावना का संचार करना होगा।

आस्था का महाकुंभ

प्रदीप कुमार भारती
दशम 'ग'

कुंभ एक सामाजिक पर्व है। यह पर्व लोग बड़ी आस्था के साथ मनाते है। कुंभ के मनाये जाने के पीछे यह मान्यता है कि अमृत कंभ की उत्पत्ति जो समुद्र मंथन के समय हुयी थी। उस अमृत कुंभ को राक्षसों से बचाने के लिये देवताओं ने जिन 12 स्थानों पर अमृत कुंभ को रखाा वो स्थान ही ऐसे स्थान हैं जहाँ पर कुंभ का आयोजन होता है। जैसे इलाहाबाद, हरिद्वार आदि। कुंभ का आयोजन प्रत्येक पाँचवे वर्ष होता है। कहा जाता है कि राजा हर्ष वर्धन प्रत्येक पाँचवे वर्ष कुंभ मेले का आयोजन करते थे। तथा अपना सारा धन जनता को दान दे देते थे। यहाँ तक कि उन्होंने अपना सब कुछ दान दे दिया। एक बार प्रयाग में सब कुछ दान करने के पश्चात एक बूढ़ा आदमी शेष बच गया था। राजा के पास दान देने के लिये कुछ भी शेष नहीं बचा था। तब उन्होंने अपने वस्त्र दान कर अपनी बहन राज्यश्री द्वारा दिये हुये कपड़े को पहना। अर्थात महाराजा हर्ष एक दानी राजा थे।

कुंभ की तैयारियाँ कुंभ मेले के आयोजन के महीनों पहले शुरू हो जाती है। बड़े ही उत्साह से उसकी तैयारियाँ की जाती हैं।

यहाँ गंगा, यमुना, सरस्वती तीनों नदियों का संगम होता है। तथा लोग यहाँ पर डुबकी लगाकर अपनी आत्मा का शुद्धीकरण करते हैं।

कुंभ एक सामाजिक पर्व है तथा यह विश्व बन्धुत्व, सामाजिक सरोकार का पर्व है। हमारी सनातन परंपरा रही है कि सामाजिक सरोकार विश्व बंधुत्व को जोड़कर विश्व को समृद्धि की ओर अग्रसर करना और विश्व बंधुत्व के आधार पर विश्व का कल्याण करना। यह एक ऐसा पर्व है किं लोग देश–विदेश से इस पर्व को मनाने आते हैं।

गंगा नदी के तट पर कुंभ की रात को रोशनी जगमगा उठती है तथा उसको कुंभ नगरी के नाम से जाना जाने लगता है। यह एक आस्था का पर्व है। जिसे मनाने के लिये देश–विदेश के अनेकों साधु, संत, साध्वी आते हैं तथा आस्था के साथ स्नान करते हैं। यह विश्व बन्धुत्व की भावना को प्रेरित कराने वाला पर्व है। इस कुंभ मेले में जाने के लिये लोग पहले से ही बहुत उत्साहित हो उठते हैं तथा अपनी आस्था के कारण अपनी टिकटें और अन्य सामग्री अर्थात कुंभ नगरी में जाने की सारी व्यवस्थाएँ करते हैं और बहुत उत्साह से उस शुभ दिन के आगमन का इंतजार करते हैं तथा आस्था के साथ स्नान करते हुये अपनी आत्मा का शुद्धिकरण करते हैं।

न जाने क्या बात है इस जल में,
जितना डूबता हूँ, उतना उबरता हूँ।

इस भावना के साथ लोग कुंभ नगरी में स्नान करते हैं तथा उनका ये कहना होता है। कि उसके स्नान से उनकी आत्मा की शुद्धि होती है।

कुंभ की तैयारियों में लोग उत्साहित तो होते ही हैं। प्रयाग के तट पर उनके प्रकार के बिजली के लैंप तथा झालर, लगाये जाते हैं। जिससे कुंभ नगरी रोशनी से जगमगा उठती है तथा देश–विदेश से आये लोगों की कुंभ नगरी में अनके व्यवस्थाएँ भी जी जाती हैं। अनेक प्रकार के कैंप लगाये जाते हैं। कपड़े के भवन निर्माण किये जाते है। उपचार की व्यवस्थाएँ भी की जाती हैं। अर्थात आगन्तुकों के लिये सभी प्रकार की व्यवस्थाएँ कर दी जाती हैं। अनेक होटलों का निर्माण किया जाता है। खाद्य सामग्री के लिये अनेक दुकानें भी लगायी जाती हैं। अचानक दुर्घटना होने पर दुर्घटना ग्रस्त लोगों के लिये तुरंत उपचार की व्यवस्थाएँ की जाती हैं। अर्थात मेले के दिन कुंभ नगरी एक गाँव से समान प्रतीत होती है। जहाँ लोग बिना किसी भेदभाव के विश्वबंधुत्व की भावना से स्नान करते हैं।

परन्तु खेद का विषय है कि जहाँ लोग अपनी आत्मा के शद्धिकरण के लिये पवित्र गंगा, यमुना सरस्वती नदियों में स्नान करते हैं। वहीं गंगा नदी को आज दूषित किया जा रहा है। अर्थात पहले तो सिर्फ छोटी–छोटी नदियाँ ही प्रदूषित होती थी। परन्तु आज हमारी पवित्र गंगा नदी को भी दूषित किया जा रहा है। अभी हाल ही में कुंभ मेले के आयोजन के पूर्व अनेकों साधु संतो ने इसके खिलाफ विद्रोह किया था। क्योंकि सन्तों द्वारा गंगा नदी में पॉलीथीन आदि का देखा जाना इस बात का प्रतीक था। कि गंगा नदी प्रदूषित है। अतः उन्होंने इसके खिलाफ विद्रोह किया। तब उनकी विद्रोह की आवाज को सुनकर गंगा नदी की यथा संभव सफाई करायी गयी।

गंगा नदी का भी जल दूषित किया जा रहा है। अनेक पॉलीथीन, तथा कारखानों से निकले अपशिष्ट को अब तालाबों नदियों की बजाय गंगा नदी में डाला जा रहा है। जिससे हमारी पवित्र गंगा नदी दूषित हो रही है। और यह प्रतिदिन दूषित होती जा रही है इससे लोगों की आस्था ठेस पहुँचती है।

आज कल के दैनिक समाचार पत्र को उठाकर देखें तो कोई न कोई खबर नदी प्रदूषण की जरूर होती है। तथा गंगा नदी में जाता हुआ नाले का चित्र अवश्य मिलता है। यह अत्यंत चिंताजनक विषय है। अगर इन नालों को नदी में जाते हुये न रोका गया तो हमारी पवित्र गंगा नदी दूषित हो जायेगी और हमारी आस्था, जो कुंभ मे स्नान करके शुद्धिकरण की है। उसको ठेस पहुँच सकती है।

❀ ❀ ❀

राष्ट्रीय एकता

अनुज शुक्ल
दशम 'ग'

प्रस्तावना

राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय है राष्ट्र में एकता अर्थात राष्ट्र के लोगों के साथ एकसमान रूप से रहना। राष्ट्रीय एकता के अंतर्गत सभी लोगों को एक समान भाव से रहना चाहिये। राष्ट्र के हित में होने वाले कार्यों के प्रति प्रेम होना चाहिये। हमारा राष्ट्र एक गुट निरपेक्ष राष्ट्र है। जहाँ पर सभी वंश, जाति एक साथ रहें फिर चाहे वह मुसलमान या इसाई ही क्यों न हो।

"अव्वल अल्लाह नूर ऊपाया,
कुदरत दे सब बन्दे।
एक नूर ते सब जग उपज्या,
कौन भले कौन मंदे।।"

राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय है देश का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक, धार्मिक व साहित्यिक ढंग से एक होना। इस प्रकार भारत में अनेकता दृष्टिगोचर होती है। किन्तु बाह्य रूप से दिखाई देने वाली इस अनेकता के मूल में अन्तः रूप में तनिक भी एकता अब शेष नहीं रही है।

राष्ट्रीय एकता के पक्ष में या सहायक

कुछ ऐसी भावनायें होती है। जो राष्ट्र की एकता को बनाये रखती है।

(i) धर्म समभाव

किसी भी या जाति धर्म के मनुष्यों में अपनी जाति या धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है। ऐसा भाव नहीं होना चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से अपने पक्ष में अभिमान बढ़ता है।

(ii) समानभाव

मनुष्यों में राष्ट्र के लोगों के प्रति एक समान भाव होना चाहिये। ये गरीब या अमीर है। ऐसा भाव नहीं लाना चाहिये। इस कारण से मनुष्यों में एक दूसरे के प्रति नफरत का भाव पैदा होता है।

3. भारत में अनेकता के विविध रूप

भारत एक विशाल देश है। अतः उसमें अनेकता होना स्वाभाविक है। धर्म के क्षेत्र में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, जैन पारसी आदि विविध धर्मावलम्बी लोगों के मन में एकता का भाव अवश्य होना चाहिये। क्योंकि सभी धर्म एक समान ही हैं। भारत के लोगों में एकता एक समाजिक भावना ही बन चुकी है। सामाजिक दृष्टि से विभिन्न जातियाँ, अजातियाँ या गोत्र आदि बटे हुये हैं। जबकि धार्मिक रूप में देखा जाय तो भारत वर्ष में विभिन्न धर्म के लोग भी पाये जाते है। सांस्कृतिक रूप में विभिन्न

प्रकार की भाषायें, वेशभूषा आदि भारत में विभिन्न राज्यों में अलग–2 पायी जाती हैं। यह जरूरी नहीं है। कि राष्ट्रीय एकता केवल राष्ट्र के लोगों में ही हो बल्कि यह तो सभी जगह हमारे लिये आवश्यक है।

4. एकता में बाधाएँ

जिस तरह से किसी भी कार्य को करेने में कुछ बाधाएँ आती है। उसी तरह राष्ट्रीय एकता में भी बाधाएँ आती है। जो निम्न हैं।

1. प्रान्तीयता या क्षेत्रीयता

राष्ट्र के अलग–2 राज्यों के व्यक्तियों में अपने प्रांत को लेकर अभिमान भरा होता है। वे लोग अपने ही प्रांत को श्रेष्ठ बनाने में तुले होते है। जबकि वे लोग ये नहीं जानते कि सारे प्रान्तों के प्रति एकता का भाव होना चाहिये।

2. भाषावाद

अधिकतर राज्यों के लोग अपनी राज्यभाषा को ही मानते है। ठीक है मानना भी चाहिये। लेकिन किसी दूसरे की भाषा का अपमान भी नही करना चाहिये।

3. सांप्रदाकियता

सांप्रदायिकता का आशय धर्म के संकुचित दृष्टिकोण से है। संसार के विभिन्न प्रकार के धर्मों में जितनी बातें या विचार बताये गये हैं। उनमें से अधिकतर समान हैं। प्रेम, सेवा, परोपकार, सच्चाई, सत्य उपासना, पूजा आदि। सच्चा धर्म भी किसी दूसरे धर्म से घृणा करना नहीं सिखाता। वह तो सभी से प्रेम करना, सभी की सहायता करना ही सिखाता है।

एकता का आधार

हमारे देश की एकता का आधार दर्शन व साहित्य है। ये सभी प्रकार की भिन्नताओं व असमानताओं को समाप्त करने वाले हैं। भारतीय धर्म तो प्रारम्भ से ही सर्वधर्म समभाव का पोषक रहा है। अर्थात सभी धर्म के लोगों के साथ एकता का आधार है। जिसको राष्ट्रीय एकता देश की विभिन्न जातियों, धर्म आदि के लोगों को एक सूत्र में बाँधने वाली होती है।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता

सभी धर्म या जाति के लोगों में राष्ट्रीय एकता की भावना होती है। इसी को ध्यान में रखकर किसी रचयिता ने शायद सत्य ही कहा है कि –

"हिन्दू, मुस्लिम–सिक्ख, ईसाई।
आपस में सब भाई–भाई।।"

कुछ इसी तरह की भावना सभी लोगों में एक समान होती है।

राष्ट्र की आंतरिक शान्ति, सुरक्षा व सुव्यवस्था आतंरिक व बाह्य सुरक्षा आदि के लिये एकता की भावना का होना अत्यंत आवश्यक है। प्रारंभ से ही मनुष्य हमेशा मनुष्य का साथ देता रहा है। कुछ यही भावना लेकर चलने वालों के साथ ही एकता अर्थ सार्थक सिद्ध होता है।

उपसंहार

राष्ट्रीय एकता की भावना अर्थात लोगों में एक समान भावों का होना। यह मानव जाति के लिये एक अत्यंत आवश्यक वस्तु है। क्योंकि इसी के कारण मनुष्यों में नफरत व घृणा का विनाश होकर आपस में प्रेम भावना में वृद्धि होती है।

❀ ❀ ❀

'मस्तक नवाकर देखिए'

आशीष कुमार सिंह
नवम 'ग'

मस्तक नवाकर देखिए,
अभिमान मर जाएगा।
आँखें झुकाकर देखिए,
पत्थर दिल पिघल जाएगा।
दाँतों को आराम देकर देखिए,
स्वास्थ्य सुधर जाएगा।
हाथों को काम देकर देखिए,
चहुँ ओर उजियारा पसर जाएगा।
जिह्वा को विराम लगाकर देखिए,
क्लेश का कारवाँ गुजर जाएगा।
ख्वाहिशों को घटाकर देखिए,
खुशियों का संसार नजर आएगा।

❀ ❀ ❀

तरुण वर्ग की निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान

कालजयी कवि तुलसीदास

शीतांशु भदौरिया
एकादश 'ख'

रूपरेखा

प्रस्तावना, तत्कालीन परिस्थितियाँ, जीवन परिचय, तुलसीदास कृत रचनाएँ, तुलसी एक लोकनायक के रूप में, तुलसी के राम, तुलसी की निष्काम भक्ति भावना, तुलसी की समन्वय साधना (i) सुगण–निर्गुण का समन्वय (ii) कर्म, ज्ञान एवं भक्ति का समन्वय (iii) युगधर्म समन्वय, तुलसीदास एक उपदेशक के रूप में, उपसंहार

प्रस्तावना

यद्यपि मैंने तुलसीदास जी को इतना अधिक नहीं पढ़ा है फिर भी मैंने अनेक कवियों जैसे मीरा, कबीर, तुलसी, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद आदि अनेक कवियों की कविताएँ पढ़ी हैं। उनमें मुझे सबसे अच्छे कवि तुलसी लगे। उन्होंने रामभक्ति रूपी गंगा बहाकर जन–जन को कृतार्थ किया है। वे राम भक्ति शाखा के सगुणोपासक कवि हैं।

तत्कालीन परिस्थितियाँ

जिस समय तुलसीदास जी का जन्म हुआ था, उस समय देश में भीषण अत्याचार हो रहा था। मंदिर तोड़े जा रहे थे। लोगों का तलवारों के बल पर धर्म–परिवर्तन किया जा रहा था। लोग व्याकुल हो रहे थे। उस समय तुलसीदास जी ने राम के गुणों को गाकर लोगों के जीवन को कृतार्थ किया। देश में विदेशी लोग आकर अत्याचार कर रहे थे। लोगों को लूटते थे, मारते थे।

जीवन–परिचय

संवत् पन्द्रह सौ चौवन, जागा, राजापुर का भाग।
हुलसी ने तुलसी को जाया, जो हिन्दी का अमर सुहाग।।
नाम 'रामबोला' था, राम नाम जन्मत तत्काल।
पिता आत्माराम देखकर, बालक को हो गये निहाल।।
पर जब पाया जन्म मूल में, उपजा मन में कुछ आभास।
त्यागा सौंप दिया चुनिया को चुनिया दीन्हा नरहरिदास।।
पालित, पोषित शिक्षत होकर, शेष सनातन से पा ज्ञान।
निज पत्नी रत्नावली से पा, राम स्नेह का सौरभ मान।।
काशीवास किया होकर के तब, राम भक्ति सागर में लीन।
लाकर के तब अखिल विश्व को रामचरित मानस में लीन।।
आज विश्व के अखिल रसिक जन, कर मानस में स्नान विलास।
मुक्त कण्ठ से कह उठते।, जय तुलसी जय तुलसी दास।।

तुलसीदास जी के जन्म स्थान के विषय में तीन मत प्रचलित हैं

(i) उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले का राजा पुर ग्राम

(ii) गोण्डा जिले का सूकर क्षेत्र

(iii) एटा का सोरों नामक स्थान

पन्द्रह सौ चौवन विशे, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धरयो शरीर।।

तुलसीदास जी का जन्म 1532 ई० में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे था। इनकी माता का नाम हुलसी था। इनके बचपन का नाम रामबोला था। इन्हें अपने माता–पिता का स्नेह प्राप्त नही हो सका। इनका पालन पोषण बाबा नरहरिदास ने किया। इसके बाद इन्होंने शेष सनातन से ज्ञान प्राप्त किया। इनका विवाह पं० दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ। ये अपनी पत्नी से अत्यन्त प्रेम करते थे। एक बार इनकी पत्नी इन्हें बिना बताये नैहर चली गई। इन्हें पता चलने पर वे रात में ही वहाँ पहुँच गये। इनकी पत्नी ने इन्हें उपदेश देते हुए कहा

लाज न आवत आपको, दौरे आयहु साथ।
धिक–धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहौ मैं नाथ।।
अस्थि–चर्म मय देह मम, तामें ऐसी प्रीति।
होति जो कहुँ राम महँ, होति न तौ भवभीति।।

इन्हे अपनी पत्नी का आपेक्षयुक्त उपेदश सुनकर वैराग्य हो गया। ये प्रयाग अयोध्या गये। अयोध्या में इन्होंने 2 वर्ष 7 माह 26 दिन में रामचरितमानस जैसे महाग्रंथ की रचना की। इनकी मृत्यु 1623 में हुई थी।

संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण स्यामा तीज शनि, तुलसी तज्यो शरीर।।

तुलसीदास कृत रचनाएँ

1.	रामचरित मानस	2.	गीतावली
3.	दोहावली	4.	श्रीकृष्ण गीतावली
5.	बरवै रामायण	6.	रामज्ञा प्रश्नावली
7.	वैराग्य संदीपनि	8.	पार्वती मंगल
9.	जानकी मंगल	10.	कवितावली
11.	विनय पत्रिका	12.	रामलला नहछू
13.	हनुमान बाहुक		

तुलसी एक लोकनायक के रूप में

तुलसी एक लोकनाय के रूप में थे। उन्होंने जन–जन को सँवारने का कार्य किया। उन्होंने लोगों में रामभक्ति की भावना जाग्रत की।

उनके विषय में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि "लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय समाज में अनेक प्रकार की परस्पर विरोधी संस्कृतियाँ, साधनाएँ और विचार पद्धतियाँ प्रचलित हैं। गीता ने समन्वय की चेष्ठा की है और तुलसीदास जी भी समन्वयकारी थे।"

तुलसी के राम

तुलसी उन राम के उपासक थे जिन्होंने इस धरती पर अत्याचार को खत्म करने के लिए अवतार लिया था।

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

तुलसीदास जी ने सभी देवताओं की स्तुति की है। उन्होंने कहा है

माँगत तुलसीदास कर जोरे। बसहिं रामसिय मानस मोरे।।

उन्होंने सबसे अनन्य भक्ति राम के प्रति दिखाई है। वे कहते हैं

कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई।।

तुलसी की निष्काम भक्ति भावना

तुलसीदास जी कहते हैं कि जो भक्त निष्काम भाव से भक्ति करता है वह ही भक्ति का आनन्द प्राप्त करता है।

मो सम दीन न दीन हित, तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंस मनि, हरहु विषम भव भीर।।

तुलसी की समन्वय साधना

तुलसीदास की रचनाएँ उसमें निहित समन्वय के लिए ही प्रसिद्ध हैं। उसके कुछ उदाहरण निम्न है–

(i) **सगुण निर्गुण का समन्वयः** जब देश में सगुण–निर्गुण में युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। उस समय तुलसीदास जी ने कहा–

सगुनहि अगुनहि नहिं कहु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।।

(ii) **कर्म–ज्ञान एवं भक्ति का समन्वयः** तुलसी जी कहते हैं कि राम के समान अपने आप को पवित्र करने के लिए हमें राम के आचरणों का ही पालन करना चाहिए।

भगतहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा।
उभय हरहिं भव संभव खेदा।।

(iii) **युगधर्म समन्वयः** भक्ति की प्राप्ति के लिए जिन साधनों का उपयोग किया जाता है। वे युग धर्म कहलाते हैं। ये प्रत्येक युग के साथ बदलते रहते हैं।

कृतजुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरू जोग।
जो गति होई सो कलि हरि, नाम ते पावहिं लोग।।

तुलसी एक उपदेशक के रूप में

उन्होंने वैष्णव धर्म को इतना वृहद् रूप प्रदान किया कि उसमें शैव, पुष्टिमार्गी भी सरलता से समा गये। वे स्वयं को राम का सेवक मानते हैं तथा राम को अपना स्वामी मानते है।

सूधे मन, सूधे, वचन, सूधी सब करतूति।
तुलसी सीधी सकल विधि, रघुवर प्रेम प्रसूति।।

उपसंहार

संक्षेप में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि महाकवि तुलसीदास हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि, पहुँचे हुए भक्त एक समाज सुधारक थे। उनके विषय में "हरिऔध" ने कहा है

कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला।।

जन–जन उनकी इस भक्ति से गद्‌गद् है। उन्होंने बहुत ही मनोरम कविताएँ लिखी हैं।

हुलसी ने तुलसी दिया, तुलसी ने श्रीराम।
ऐसे तुलसीदास को बारम्बार प्रणाम।।

❀ ❀ ❀

अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यनतर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम्।
सजूर्देवेभिरवरैः परैश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व।।

यजुर्वेद ७.५।।

भावार्थ : ईश्वर का यह उपदेश है कि ब्रह्माण्ड में जिस प्रकार के जितने पदार्थ हैं, उसी प्रकार केही ज्ञान में वर्तमान हैं। योगविद्या को नहीं जाननेवाला उन को नहीं देख सकता, और मेरी उपासना के बिना कोई योगी नहीं हो सकता है।।

तरुण वर्ग की निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार

आस्था का संगम : कुम्भ मेला

रजत कटियार
एकादश 'क'

क्या तीन नदियों की अजस्त्र धाराओं के संगम में स्थान की एक डुबकी ब्रह्म और जीव के अस्तित्व का एकाकार करा सकती है? क्या तीर्थराज प्रयाग की धरती की धूल मस्तक पर चढ़कर भव–बाधाओं से निस्तार कर सकती है? इन सारे प्रश्नों के उत्तर आपको मिल सकते हैं गंगा–यमुना के विस्तृत कछार में मीलों–मील तक आकार ले चुके दुनिया के सबसे विशाल आध्यात्मिक समागम महाकुंभ में, जहाँ ऐसे सवाल आस्था व श्रद्धा की कसौटी पर कसे जाने के बाद स्वयं ही घुटने टेक जाते हैं। अनुभूतियों का स्पर्श ऐसा ही संदेही शंकाओं का चोला अपने आप उतर जाता है।

सभी को अमरत्व की तलाश –

एक अगल ही दुनिया एक अलग ही अहसास! मानों तीन नदियों का नहीं, देश की विविध संस्कृतियों, संस्कारों और सनातन परंपराओं का संगम हो रहा हो। क्या कर्नाटक, क्या बिहार, क्या यू0पी0 और क्या महाराष्ट्र। गठरी–मोटरी वाले, बंगला–कोठरी वाले, अक्षर ज्ञान के नाम पर फटी पोटली वाले देश दुनिया के चक्कर लगाते हैं। इन सभी राज्यों के लोगों को इसी स्थान पर आने की तलाश रहती है। एक ओर वीतराग सन्यासी तो दूसरी ओर दुनियादारी के झमेलों से दो–दो हाथ कर रहे कल्पवासी। सभी को तलाश अमरत्व की मोक्ष के बाद भी निःशेष रह जाने वाले मूल तत्व भी हैं।

विश्वास से भरें यह कुंभ –

भूमापीठ के अधिपति स्वामी अच्युतानंद तीर्थ बताते हैं "शंकाओं का पिटारा लेकर नहीं, अटल विश्वास से भरा कुंभ लेकर आइए महाकुंभ में। समाधान हर कदम होगा।" विश्वास के यह कुंभ लाखों की भीड़ में नजर आते हैं कभी संतों के शिविर में चल रहे प्रवचन, सन्तों में कथा सुनने, तो कभी रातभर प्रवचन सत्रों में चलने वाले भजन सन्तों की प्रस्तुतियों में समर्पण भाव के साथ भक्ति की रेशमी चादर बुनते हैं। इनमें से कई ऐसे हैं जो खेत और गहना गुरिया रेहन रखकर कुम्भ नहाने आते है मौका फिर बारह साल बाद आयेगा तब तक कौन रहेगा, कौन जायेगा, क्या ठिकाना। सो कुटुंब के साथ चले आए हैं। सर्द मौसम की ठिठुरती रातें उनकी हिम्मत नहीं डिगा पायीं। गठरी के साथ सैकड़ों मील की यात्रा उनको नहीं थकाती। त्रिवेणी की धार में एक डुबकी के वास्ते परिस्थितियों से कठिन संघर्ष का माद्दा ही महाकुंभ जैसे आयोजन पृष्ठ की जमीन को पवित्र करते हैं।

जात–पाँत पूँछे नहिं कोई – आर्ट ऑफ लिविंग के शिविर में श्रद्धालुओं की पंगत में प्रसाद वितरित कर रहे बंगलूर से आए स्वामी दिव्यानन्द कहते हैं "कुंभ सिर्फ आध्यात्मिक समागम नहीं, एक विशाल राष्ट्रीय संगम भी है। हमारी पंगत को देखिए। बंगाली, गुजराती, मराठी आदि सभी जगहों से आए श्रद्धालु एक साथ भोजन कर रहे हैं। परोसने वाले भी स्वतः सेवाएं दे रहे हैं। किसी ने न्योता नहीं

भिजवाया, न ही हाथ पकड़कर सहायता देने की माँग की, किसी की जाति नहीं पूँछी, यही है भारत। अमीर भारत, गरीब भारत वैष्णव–भारत। कल का भारत आज का भारत! अलग भाषा, अलग वेश फिर भी अपना एक देश।

सन्तों की लग्ज़री कारें – पौराणिक मान्यताओं के अनुसार महाकुंभ जैसे विराट धर्म समागमों में साधु–संतों की महत्ता नरेशों जैसी होती है। इसीलिए, वैभव प्रदर्शन के क्रम में सिंहासन और सुसज्जित रथों की दौड़ का क्रम प्राचीन समय से चला आया है। रथ तो अब रहे नहीं, लिहाजा अब महंतों का स्टेटस लेबल बहुत बढ़ गया है। अब संत लग्ज़री कारों से चलना पसंद करते हैं महामंडलेश्वर पायलट बाबा का जिनकी सबसे अच्छी 'क्यू सेवेन कार'' की कीमत 65 लाख रुपए है तथा स्वामी दिव्यानंद जी के पास टोयोटा फार्च्यूनर कार है।

दुनिया की चिंता भी – कुंभ नगरी में रात होती ही नहीं है। किसी शिविर के मंच पर रामलीला के प्रसंग का पटाक्षेप होने तक सुप्रभात की स्वर लहरियाँ कुंभ नगरी की गलियों को गुँजा चुकी है। रात के तीसरे पहर कदम बिल्कुल शान्त हो जाते हैं। सतुआ बाबा पीठ के शिविर में हलचलों को भाँपकर। यहाँ कंबलों में लिपटे संत पर्यावरण की सुरक्षा के मुद्दे पर बहस करते हैं। अब तक हुई बहस में यह सामने आया है कि उसके मुताबिक संत ध्यान योग, जप–तप के अलावा पर्यावरण संरक्षण, गंगा की अविरलता तथा कन्याभ्रूण हत्या जैसी समस्याओं के समाधान में भी अपनी भूमिका सुनिश्चित करने को लेकर गंभीर है।

प्रमुख घाटों के नाम –

इस बार कुंभ पर्व पर स्नान करने के लिए कुल 19 घाट हैं इनके नाम क्रमशः इस तरह से हैं –

1. संगम घाट, 2. गंगा–यमुना घाट, 3. सरस्वती घाट, 4. नेहरू घाट, 5. मनकामेश्वर घाट, 6. मिंटो पार्क घाट, 7. किला घाट, 8. राम घाट, 9. हनुमान घाट, 10. समुद्र कूपघाट, 11. छतनाग घाट, 12. अरैल घाट, 13. गजिया घाट, 14. महेवा घाट, 15. दशाश्वमेध घाट, 16. नागवासुकी घाट, 17. सलोरी घाट, 18. गऊ घाट, 19. बलुआ घाट

महाकुंभ का प्रबंधन –

आठ हजार बीघे में फैले कुंभ क्षेत्र को व्यवस्थित करने के लिए इसे चौदह सेक्टरों में बाँटा गया है। यहाँ के लिए एक डीएम और एक एएसपी भी नियुक्त है। इसी तरह अन्य विभागों में कर्मचारी तैनात हैं। प्रत्येक सेक्टर में प्रशासनिक और पुलिस व्यवस्था की जिम्मेदारी मजिस्ट्रेट व एएसपी रैंक के अधिकारी करते हैं। इसी तरह बिजली के लिए हर सेक्टर में एक एसडीओ की तैनाती की गयी है। स्वास्थ्य, पेयजल, सिंचाई और खाद्य आपूर्ति संभालने के लिए भी प्रशासनिक अधिकारियों की तैनाती की गयी है।

1. 38 अस्पताल, 500 डाक्टॅर, 2. दो लाख राशन कार्ड, 3. अखाड़ों पर एस0पी0, 4. 30 फायर स्टेशन, 5. 24 फायर वॉच टावर, 6. 129 घोड़ा पुलिस, 7. 99 पार्किंग स्थल, 100 गोताखोर

छात्र जीवन में अनुशासन का महत्त्व

अमित कुमार
नवम 'ख'

प्रस्तावना –

अनुशासन ही देश को महान बनाता है। कोई भी क्षेत्र जैसे राष्ट्र की बात हो, खेल का मैदान हो, बैंक हो, यातायात व्यवस्था हो और न जाने कितने क्षेत्र हैं, इनमें से कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो अनुशासन के बिना चलता है या चलाया जा सकता है। हम यहाँ पर जीवन की पहली सीढ़ी की ही बात करें तो वह है – छात्र जीवन। छात्र जीवन में तो अनुशासन का इतना महत्त्व है कि इसके बिना कोई भी छात्र अपनी मंजिल तो क्या, जीवन की दूसरी सीढ़ी भी नहीं पार कर सकता है। हमारा इतिहास साक्षी है कि जितने भी महान लोग हुए हैं उनको इस मंजिल को पाने में अनुशासन की मुख्य भूमिका है। वे कुछ महापुरुष हैं – महात्मा गाँधी, सचिन तेंदुल्कर, अब्राह्मलिंकन, पं0 नेहरू, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि। अगर हम बात करें डाकू, आतंकवादी या तानाशाहें की तो उन्होंने भी अनुशासन को अपने कार्यों के लिए अपनाया है।

जर्मन का था जो हिटलर,
या जो था इटली का शासक।
दोनों की सोच यही थी 'शासन',
किन्तु दोनों ने भी अपनाया 'अनुशासन'।

छात्र जीवन में अनुशासन का महत्त्व –

छात्र जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। अनुशासन के बिना छात्र जीवन संभव नहीं है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में छात्रों का मुख्य योगदान होता है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य वहाँ के छात्रों पर निर्भर करता है।

यदि अनुशासन नहीं अपनाया तुमने,
तो तुम निश्चित ठोकर खाओगे।
एक बार धरती पर गिरकर,
मिट्टी में तुम मिल जाओगें।

छात्रों के अनुशासनहीन होने के कारण

नैतिक व व्यवहारिक शिक्षा का अभाव – आज की जो शिक्षायें है वो केवल डिग्री प्राप्त करने भर की है। छात्रों को स्कूलों, कॉलेजों में नैतिकता की बातें, व्यवहार के बातें नहीं सिखाई जा रही है।

आज की परीक्षा – आधुनिक परीक्षा ठीक नहीं है। इससे छात्रों के पूरे वर्ष का मूल्यांकन नहीं हो पा रहा है। इससे उसके मन में क्रोध के विकार उत्पन्न हो रहे हैं और इसके साथ वे गलत दिशा में भटकते जा रहे हैं।

आधुनिक शिक्षक – आज के शिक्षक भी छात्रों की प्रतिभा को निखारने की कोशिश नहीं कर रहे हैं।

आज के युग में शिक्षकों का वेतन बहुत कम है अतः वे स्कूल से अधिक ट्यूशन पर ध्यान देते हैं और स्कूल के छात्र अनुशासनहीन हो जाते हैं।

अशिक्षित अभिभावक – बहुतेरे अभिभावक हैं, जो अशिक्षित हैं। जिस कारण वे अपने प्रतिभा संपन्न बच्चों को भी नहीं पढ़ाते हैं। न ही उन बच्चों को शिक्षा मिल पाती हैं। और धीरे–धीरे वे आगे चलकर गलत दिशा में भटक जाते हैं। गलत चीजों का सेवन करने लगते हैं।

अनुशासन एक जलता दीप है।
क्योंकि जीवन की यह नींव है।
हे छात्रों! इसे तुम न बुझने देना।
यही आपके लिए "अमित" की सीख है।

उपसंहार –

अनुशासित रहोगे तो आगे का मार्ग मिलेगा।
जीवन में सुख अपार मिलेगा।
यदि अनुसरण इसका नहीं किया तुमने,
तो दुःख से भरा संसार मिलेगा।
अनुशासन के बिना नहीं इसे पार कर पाओगे तुम।
और हमेशा इसी में डूबते रह जाओगे तुम।

चाहे जीवन का कोई क्षेत्र हो वह क्षेत्र अनुशासन के बिना नहीं चल सकता है। छात्र जीवन को अनुशासति करने के लिए हम सभी को अर्थात् पूरे राष्ट्र को उपर्युक्त बातों पर विशेष ध्यान देना होगा। और उसे शक्ति से पालन करना होगा। कोई भी प्राणी हो उससे प्यार से बोलो तो वह सीखेगा। तभी हमारा राष्ट्र उन्नति कर सकता है। हमारा समाज भी सुधर जायेगा। छात्रों की आवश्यकता पर भी विशेष ध्यान देना होगा। चूंकि छात्र ही राष्ट्र का निर्माता होता है।

❀ ❀ ❀

इयदस्यायुरस्यायुर्मयि धहि युङ्ङसि वर्चोऽसि वर्चो मयि धेह्यूर्गस्यूर्ज मयि धेहि।
इन्द्रस्य वां वीर्यकृतो बाहूऽअभ्युपावहरामि।। यजुर्वेद १०.२५।।

भावार्थ : जो मनुष्य अपने हृदय में ईश्वर की उपासना करते हैं, वे सुन्दर जीवन आदि सुखों को भोगते है, और कोई भी पुरुष ईश्वर के आश्रय के बिना पूर्ण बल और पराक्रम को प्राप्त नहीं हो सकता।

परोपकार

दीपांकर चौरसिया
नवम 'क'

वह शरीर क्या जिससे जग का कोई उपकार न हो।
वृथा जन्म उस नर का जिसके मन में दया विचार न हो।

प्रस्तावना –

कभी किसी वृद्ध को ठण्ड में कंबल दान करते समय क्या आपने उसके मुख को देखा है? क्या किसी बुखार से पीड़ित युवक को दवा देने से समय उसके ज्वर को कम होते देखकर आपने कभी अपने अंर्तमन में मिलने वाली शांति को महसूस किया है। परोपकार करने से करने वाले को महसूस होने वाली शांति ही महत्त्वपूर्ण है।

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

– मैथिलीशरण गुप्त

परोपकार के उदाहरण

परोपकार के उदाहरणों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। इन परोपकारियों में महर्षि दधीचि श्रेष्ठ हैं जिन्होंने देवासुर संग्राम के समय परहित के लिए स्वयं की अस्थियाँ वज्र बनाने के लिए दे दी थीं। जिससे अत्यंत उत्पात मचाने वाले वृत्तासुर जो देवताओं का सेनापति था, का नाश हो सके। महर्षि दधीचि ने प्रणायाम के द्वारा स्वयं की अस्थियों को देवताओं के राजा इन्द्र को दे दिया जिससे बाद में देवशिल्पी विश्वकर्मा ने वज्र बनाया व इन्द्र ने उस अस्त्र से वृत्तासुर का नाश किया। इसी प्रकार वीर कर्ण ने इन्द्र के माँगने पर अपना कवच व कुण्डल दान कर दिया। महाराजा शिवि ने एक कबूतर के प्राणों की रक्षा के लिए अपना माँस भी दान में दे दिया।

क्षुधार्त रन्तिदेव ने दिया करस्थ थाल भी।
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया।
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर चर्म भी दिया।।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

– मैथिली शरण गुप्त

परोपकार के लाभ –

परोपकार करने से यश वृद्धि होती है। परोपकारी व्यक्ति का समाज में बहुत सम्मान होता है। परोपकारी व्यक्ति हर जगह आदर की दृष्टि में देखा जाता है। परोपकारी व्यक्ति के लिए इस संसार में

कुछ भी कठिन नहीं है। कहा भी गया है।

परहित बस जिनके मन माँही, तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाही।

– तुलसीदास

परोपकार से हमारे अंतर्मन को शांति मिलती है। हमें सुख का अनुभव होता है। हमारा अंतर्मन शुद्ध होता है। कहा भी गया है –

रहिमन यों सुख होत है, उपकारी के संग।
बाटनवारे को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग।।

– रहीम

कहा गया है कि ईश्वर हमारे सम्पूर्ण कर्मों को देखता है व हम जैसा कर्म करेंगे ईश्वर हमें वैसा ही फल देगा। इसलिए हमें अपने द्वारा सभी कर्मों को दूसरे की भलाई के लिए करना चाहिए। कहा भी गया है –

चार वेद छह शास्त्र में, बात लिखी यह दोय।
सुख दीन्हें सुख होत है, दुःख दीन्हें दुःख होय।।

सभी मनुष्य समान हैं –

सभी मनुष्य समान हैं इसलिए हमें सबकी भलाई के लिए कार्य करना चाहिए। ईश्वर ने हमें जो दिया है वह हमें दूसरों के उपकार के लिए व्यय करना चाहिए, यही परोपकार है। परोपकार का अर्थ है पर + उपकार अर्थात् दूसरों का बिना किसी प्रतिफल की इच्छा के भला करना। हमें दूसरों की सदैव मदद करनी चाहिए। कभी भी किसी के साथ धोखे वाला व्यवहार नहीं करना चाहिए। कभी भी किसी को पीड़ा नहीं पहुँचानी चाहिए। कहा भी गया है –

परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्।

उपसंहार –

हमें प्रतिफल की कामना के बिना सभी जरुरतमंद लोगों का उपकार करना चाहिए। परोपकार कभी भी व्यर्थ नहीं जाता। हमें इस सिद्धान्त पर काम करना चाहिए कि परोपकार से बढ़कर कोई पुण्य व दूसरों को पीड़ित करने से बड़ा कोई पाप नहीं है। भारतीय साहित्य व धर्म ग्रन्थ यही कहते हैं। कहा भी गया है कि –

परहित सरिस धरम नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।

हमें सदैव दूसरों की मदद करनी चाहिए व बहुजन हिताय बहुजन सुखाय इस सिद्धान्त को अपनाना चाहिए।

सब्जी मण्डी में डॉक्टर

हर्ष यादव
नवम 'ग'

एक बात,
समझ में नहीं आई श्री मान,
सब्जी मण्डी
और उसमें डॉक्टर की दुकान।।
सब्जी की दुकान पर
इक्का दुक्का
और डॉक्टर की दुकान पर
भीड़ भड़क्का
हमने डॉक्टर से पूछा
"इसका कारण बताओ" ?
वह बोला 'आइए'
विस्तार से समझायेंगे।
यह पहला मरीज,
अपने आप ही
मौत से जूझ लिया था,
राह चलते–चलते
भिण्डी का भाव पूँछ लिया था।
भाव सुनते ही भुन्न हो गया,
इसका आधा मस्तक
सुन्न हो गया
अब यह पूरी तरह बीमार है,
फालिस का शिकार है।
और दूसरे ने,
सब्जी मण्डी में आकर
अपनी जान की आफत लगाई है,
सब्जियों के भाव से ज्यादा
अब इस का ब्लड प्रेशर हाई है।
तीसरा यह जन्मजात लोभी
स्वाद–स्वाद में खा गया,
आधा किलो गोभी
अब सत्तर रुपये का भाव सुनकर
सुबक रहा है
आधा किलो गोभी
सुबह से हुबक रहा है।
चौथा यह सरकारी बाबू,
सब्जी मण्डी में अपनी
दादागीरी दिखा रहा था,
जब माँगने पर
धनियाँ नहीं मिली,
तो जबरन उठा रहा था।
कुछ दुकानदारों ने मिलकर
इसे कपड़े की तरह निचोड़ दिया
जिस हाथ से धनियाँ उठाया था,
वो हाथ ही तोड़ दिया।
पाँचवाँ वो पागल जिसके हाथ में दुनाली है,
उसके बेटे से किसी ने सात सौ रुपये की
सब्जी छुड़ा ली है।
तब से वह बन्दूक लिए घूम रहा है,
अंत में डाक्टर बोला पता नहीं इस दुनिया
में कैसे–कैसे लोग है जो जरा सी महंगाई
तक भी नहीं झेल पाते और मरने के लिए
यहाँ चले आते हैं, अगर इनका सब्जी मण्डी
में आना इतना जरूरी है तो डाक्टर की
दुकान खोलना हमारी मजबूरी है।

मन शांत रखने के दस सूत्र

आशीष कुमार सिंह
नवम 'ग'

1. उतना ही काटें जितना चबा सकें अर्थात् उतना ही काम हाथ में लें, जितना पूरा कारने की क्षमता हो।
2. किसी के काम में तब तक दखल न दें, जब तक कि आपसे पूँछा न जाए।
3. किसी भी काम को टालें नहीं और ऐसा कोई काम न करें, जिससे बाद में आपको पछताना पड़े।
4. माफ करना और कुछ बातों को भूलना सीखें।
5. रोजाना ध्यान करें।
6. पहचान पाने की लालसा न रखे।
7. जलन की भावना से बचें।
8. जो कभी बदल नहीं सकता उसे सहना सीखें।
9. स्वयं को माहौल के अनुकूल बनाना सीखें।
10. दिमाग को खाली न रहने दें।

अपना कर्त्तव्य

प्रदीप पाल
एकादश 'क'

मन में रखे भलाई की भावना,
पूरी हो हम सबकी कामना।
सारे जग को है जगाना,
सभी कष्टों का करेंगे सामना।
माता–पिता की सेवा कर
हम जीवन को सफल बनाये।
भूले–भटको को मार्ग दिखाकर,
उनको अपना कर्त्तव्य बतायें।
असहाय, निर्बलों की बात हम सुनें,
उत्तम मार्ग को ही चुनें।
पाप, अन्याय से दूर रहें सदा,
वह शक्ति हमें दो हे जगदंबा।
परहित समझ करें हम सेवा।
मिलेगा हमको मीठा मेवा।
मात–पिता की करे हम पूजा,
इनके समान नहीं कोई दूजा।
मात–पिता का करे जो कीर्तन,
मिले उसको चारो धामों का दर्शन।
यही परम कर्त्तव्य है हमारा अपना।
पूर्ण होगा हम सबका अपना सपना।।

मानव की आशा के पुष्प

ऋषभ तिवारी
नवम 'ग'

धनी और निर्धन के शिशु का,
दिखता है समान ही रूप।
जननी का वात्सल्य एक सा,
पिता अकिंचन हो या भूप।।

सब को लख कर मुस्काता है
शिशु सहृदयता का आदर्श।
शिशु को सभी प्यार करते हैं,
शिशु हित में मानव उत्कर्ष।

सुखकर आशा पुष्प मनुज का,
भावी युग की छवि साकार
नन्हा शिशु सब का है प्यारा,
अनुज मात्र का स्नेहागार।।

बीज रुप में है प्यारा शिशु,
गाँधी गौतम सन्त महान।
सारा विश्व कुटुम्ब तुम्हारा,
भर दो इसमें यह सद्ज्ञान।।

विषय

हर्ष यादव
नवम 'ग'

जिसे कहते हम हिन्दी,
परीक्षा में मिलती है बिन्दी।
जिसका नाम है विज्ञान
पढ़ते–पढ़ते मर गया इन्सान।
जिसका नाम हे इतिहास,
पेपर देख लगे प्यास,
जिसे कहते हैं भूगोल,
चीटिंग करो, खुले पोल।
जिसे कहते हैं संस्कृत,
पढ़ने के लिए रखना पड़े व्रत।
जिसका नाम है कला,
विद्यार्थी का करता है भला

जीवन एक गणित है

हर्ष यादव
नवम 'ग'

जीवन एक गणित है
दोस्ती का जोड़ करो।
दुश्मनी को घटा दो,
खुशियों का गुणा करो,
दुःखो का भाग दो
पर कभी निराश मत हो
ऐसा करने पर अपने आप ही
जिंदगी का वर्गमूल निकल आएगा।

पितृभक्त

दिव्या
अष्टम 'ख'

हाँरू रसीद बहुत नामी बादशाह थे। वह बगदाद का बादशाह था। एक बार किसी कारण से वह अपने वजीर (मंत्री) पर नाराज हो गया। उसने वजीर और उसके लड़के फजल को जेल में डलवा दिया।

वजीर को ऐसी बीमारी थी कि ठंडा पानी उसे हानि पहुँचाता था। उसे सबेरे हाथ मुँह धोने को गरम पानी आवश्यक था। लेकिन जेल खाने में पानी कहाँ से आवे? वहाँ तो कैदियों को ठंडा पानी ही दिया जाता था। फजल रोज शाम को लोटे में पानी भरकर लालटेन के ऊपर रख दिया करता था। रातभर में लालटेन की गरमी से पानी गरम हो जाता था। उसी से उसके पिता हाथ मुँह धोते थे।

उस जेल का जेलर बहुत निर्दयी था। जब उसको पता लगा कि फजल अपने पिता के लिए लालटेन पर पानी गरम करता है तो उसने वहाँ से लालटेन हटवा दी।

अब फजल के पिता को ठंडा पानी मिलने लगा जिससे उनकी बीमारी बढ़ने लगी। फजल से पिता का कष्ट देखा नहीं गया। अब वह शाम को लोटे में पानी भरकर अपने पेट पर लगा लेता था। जिससे लोटे का पानी शरीर की कुछ गरमी पाकर गरम हो जाता था। लेकिन नींद आने पर लोटे का पानी गिर जाने के कारण फजल सो नहीं सकता था।

जब जेलर को बालक फजल की इस पितृभक्ति का पता चला तो उसका निर्दयी हृदय दया से पिघल गया और उसने फजल के पिता को गरम पानी देने की व्यवस्था कर दी।

महाभारत के कुछ तथ्य

- अर्जुन के शंख का नाम क्या था – **देवदत्त**
- भीमसेन के शंख का नाम क्या था – **पौण्ड्र**
- अर्जुन के रथ का नाम क्या था – **नंदिघोष**
- उस मणि का नाम जिसकी चोरी का आरोप श्रीकृष्ण पर लगा था – **स्यामंतक**
- वो कौन सा बाण था जिससे अर्जुन ने कर्ण का मस्तक काटा था – **अंजलिक**
- भगवान शिव द्वारा अर्जुन को प्रदान किया गया अस्त्र कौन सा था – **पाशुपत**
- श्रीकृष्ण के खड्ग का क्या नाम था – **नंदक**
- कौन से पर्वत पर आचार्य परशुराम का आश्रम है – **महेंद्र पर्वत**
- कृपाचार्य की माता कौन थी – **जानपदी**
- शांतनु की माता कौन थी – **सुनंदा**

बचपन

प्रस्तुतिः— रुद्रप्रताप सिंह
अष्टम 'ग'

उम्र की सीढ़ियों पर जाने कहाँ खो गया,
जिन्दगी की राह में ढूँढ़ता रह गया।
यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, देखूँ चहुँ ओर
चलो लौट चले, चलो लौट चलें, बचपन की ओर।

पढ़ाई की चिन्ता न कमाई की सोंच,
कोई नहीं दुश्मन बस दोस्त ही दोस्त।
गली आँगन में खेलें मचाएँ खूब शोर
चलो लौट चलें, चलो लौट चलें, बचपन की ओर।

गुड्डे, गुड़ियों की शादी कबड्डी का खेल,
खूब बजे ताली, जब दिख जाए रेल।
कटी पतंग की पकड़े तब डोर,
चलो लौट चलें, चलो लौट चलें, बचपन की ओर।

दादी माँ के किस्से व नानी की कहानी,
वो कागज की नाव व बारिश का पानी।
चुराएँ जवानी इन्हें बन के चोर,
चलो लौट चले, चलो लौट चले, बचपन की ओर।

वो बाबुल का आँगन, वो पीहर की गलियाँ,
तो अम्मा की देहरी, बचपन की सखियाँ
विदाई की धुन तोड़े सब डोर,
चलो लौट चले, चलो लौट चले, बचपन की ओर।

कागज की कश्ती थी, पानी का किनारा था,
खेलने की मस्ती थी, दिल आवारा था।
कहाँ आ गए हम इस समझदारी भरी दुनिया में,
वो नादान बचपन कितना प्यारा था।

शतकों का शरताज : शतकवीर सचिन

आलोक कुमार
सप्तम 'ख'

- विश्व में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय मैचों में सबसे महानतम् व सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी मास्टर ब्लास्टर सचिन तेन्दुलकर, जो अब एकदिवसीय मैचों से सन्यास ले चुके हैं और टेस्ट मैच खेल रहे हैं।
- ये अपने कैरियर में 100 शतक लगा चुके हैं। जिनमें 49 शतक वनडे में और 51 शतक टेस्ट में शामिल है। इनके 100 शतक 7891 दिनों में लगाये गये हैं।
- इन्होंने टेस्ट में 6 बार दोहरा शतक तथा एक बार वनडे में दोहरा शतक 200 दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ग्वालियर में फरवरी 2010 में लगाया था।
- इन्होंने वनडे मैच में 62 बार मैन ऑफ द मैच, 16 बार मैन ऑफ द सीरीज तथा टेस्ट मैच में 14 बार मैन ऑफ द मैच, 5 बार मैच ऑफ द सीरीज बनें। सचिन तेन्दुलकर 15 बार टेस्ट में शतक लगाने के बाद नाबाद रहे हैं। इन्होंने 188 मैचों में 15470 रन, सर्वाधिक 248 रन एवं 51 शतक लगाए है (टेस्ट मैच में प्रदर्शन)
- सचिन तेन्दुलकर को 1997 ई0 में विस्डन क्रिकेटर ऑफ द ईयर, 1997/98 ई0 में राजीव गाँधी खेल रत्न, 1994 ई0 में अर्जुन पुरस्कार, 1999 ई0 में पद्मश्री 2008 ई0 में पद्मविभूषण तथा 2010 ई0 में आईसीसी प्लेयर ऑफ द ईयर से सम्मानित किया गया है।
- इनके द्वारा लगाए गए 100 शतकों में 53 बार जीते, 25 बार हारे, 20 बार ड्रा, 01 बार टाई और 01 बार रद सम्मलित हैं। सचिन के द्वारा लगाए गए सर्वाधिक शतक आस्ट्रेलिया के खिलाफ 20 शतक हैं।

महाशतक की महागाथा

- दुनिया का पहला बल्लेबाज जिसके अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में 100 शतक का आँकड़ा हुआ।
- कुल 26 बार 90–90 स्कोर के बीच आउट हुए। (वनडे में रिकॉर्ड 18 बार, टेस्ट में 8 बार)
- टेस्ट में 150–199 का स्कोर, रिकॉर्ड 20 बार।
- कैलेंडर वर्ष में सर्वाधिक शतक : 1998 में। (9 वनडे शतक)।
- पहला वनडे शतक (1994, कोलम्बो में आस्ट्रेलिया के खिलाफ) वनडे कैरियर की शुरूआत के पाँच साल बाद लगाया।
- वर्ल्ड कप में 6 शतक तथा सबसे ज्यादा रन इन्हीं के नाम हैं।

ए०टी०एम० कार्ड से सुरक्षा

रोहित आनन्द
नवम 'क'

अगर कोई व्यक्ति आपके ए०टी०एम० कार्ड से रुपए चुराना चाह रहा है और उसे आपके कार्ड का नम्बर (कोड) पता नहीं है और वह अगर ए०टी०एम० कार्ड के साथ आपका अपहरण कर ले और आपसे कहे कि इस ए०टी०एम० मशीन में कार्ड डालकर रुपए निकाल दो, तो कृपया उसका विरोध नहीं कीजिए। उसके कथनानुसार ए०टी०एम० कार्ड को मशीन में लगाइए फिर आप अपना पासवर्ड रिवर्स में डालिए, जैसे – अगर आपका पासवर्ड 1234 है तो 4321 डालिए इससे मशीन पैसा तो निकाल देगी पर जब आप उसमें रिवर्स कोड डालेंगे तो वो खतरे को भाँपकर आपका ए०टी०एम० कार्ड पूरा बाहर निकलने नहीं देगा बल्कि आधा कार्ड मशीन में ही फँसा रह जाएगा। और वह ए०टी०एम० मशीन इस खतरे की सूचना पास के पुलिस स्टेशन और उस बैंक को देगी और ए०टी०एम० मशीन वाले रुम का गेट ऑटो लॉक हो जाएगा जिससे अपराधी को बिना भनक लगे आप अपने रुपए बचा लेंगे और अपराधी को पकड़वा सकेंगे।

हमारी हिन्दी

ऋषभ तिवारी
नवम 'ग'

हिन्दी, हिन्दी, हिन्दी, हिन्दी है माथे की बिन्दी।
क्या बिन्दी को तुम फेंकोगे, हिन्दी को नहीं सीखोगे।
हिन्दी बिन तेरी शान नहीं, हिन्दी बिन तेरा मान नहीं।
फेंक नहीं सकते हम बिन्दी, फिर छोड़े कैसे हम हिन्दी।
मेरे दिल का है अरमान, हिन्दी का हो मान सम्मान
क्या मान बिना तुम रह सकते हो? फिर अपमान कैसे सह सकते हो?
हिन्दी, हिन्दी, हिन्दी
माँ की ममता में जो प्यार है, वही ममता है इस भाषा में,
अपनों को जो रस मिलता है, यह वही रसीली हिन्दी है।

❀ ❀ ❀

माँ

रोहित आनन्द
नवम 'क'

दुनिया का पहला प्रेम – माँ
सबसे कीमती वरदान – माँ
धरती पर ईश्वर की कहानी – माँ
खुशियों की बाग में बागवाँन – माँ
प्रकृति के सौंदर्य का पहला उपहार – माँ
काँटो भरी राह में फूलों का अहसास – माँ
खुशियों के अनमोल खजाने की राह – माँ
प्यार और डाँट का खट्टा मीठा स्वाद – माँ
गैरों की दुनिया में अपनों का विश्वास – माँ
कुदरत की संपूर्ण व्यवस्थित व्यवस्था – माँ

❀ ❀ ❀

जो करो शान्त और एकाग्र मन से करो

अनुकृति शुक्ला
नवम 'क'

उन दिनों विवेकानन्द जी देश में ही भ्रमण कर रहे थे। साथ में उनके एक गुरु भाई भी थे। जहाँ कहीं कोई अच्छे ग्रन्थ मिलते वे उनको पढ़ना नहीं भूलते। किसी नई जगह जाने पर उनकी सबसे पहली तलाश किसी अच्छे पुस्तकालय की रहती। इस भ्रमण में एक स्थान पर एक पुस्तकालय ने उन्हें बहुत आकर्षित किया। उन्होंने सोचा क्यों न यहाँ थोड़े दिनों तक डेरा जमाया जाए। उनके गुरुभाई उन्हें पुस्तकालय से नई–नई किताबें लाकर देते थे। स्वामी जी उन्हें पढ़कर अगले दिन लौटा देते।

रोज नई किताबें, वह भी पर्याप्त पृष्ठों वाली इस तरह से देते व वापस लेते हुए पुस्तकालयाध्यक्ष बड़ा हैरान हो गया। उसने स्वामी जी के गुरुभाई से पूछा –"क्या आप इतनी सारी नई–नई किताबें केवल देखने के लिए ले जाते हैं?" इस बात पर उत्तर मिला – "ऐसा कुछ भी नहीं है। हमारे गुरुभाई इन सभी पुस्तकों को पूरी गम्भीरता से पढ़ते है, फिर वापस कर देते हैं।" इस बात से आश्चर्यचकित होकर लाइब्रेरियन ने कहा – "मैं उनसे मिलना चाहूँगा।" अगले दिन विवेकानन्द जी उससे मिले और उन्होंने कहा – "महाशय, आप हैरान न हो। मैंने न केवल उन पुस्तकों को पढ़ा है बल्कि याद भी कर लिया है।" इतना कहते हुए उन्होंने वापस की गई कुछ पुस्तकें उसे थमाई और उनके कई महत्त्वपूर्ण अंशों को शब्दशः सुना दिया। पुस्तकालयाध्यक्ष के लिए यह किसी चमत्कार से कम न था। उसने विनम्रता से इस चमत्कारी याद्दाश्त का रहस्य पूछा। "स्वामी जी मुस्कराकर बोले – "इसमें न तो कोई चमत्कार है, न रहस्य। यह तो बस एक मानसिक तकनीक है। इस तकनीक का पहला चरण है कि जो कुछ पढ़ा जाए, वह बड़े ही शान्त, स्थिर व एकाग्र मन से हो।"

❀ ❀ ❀

समय

कृतिका वाजपेयी
सप्तम 'ख'

समय होता है बलवान।
समय का रखना पड़ता ध्यान।।
समय से होते जग में कार्य।
समय ही माना गया प्रधान।।
चला जो समय के प्रतिकूल।
मिलेंगे पथ में अगणित शूल।।
न जाना अपने पथ को भूल।
रहो समय के अनुकूल।।
समय होता है बलवान।
समय का रखना पड़ता ध्यान।।

❀ ❀ ❀

भ्रष्टाचार

रोहित यादव
दशम 'ग'

भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार भरा है इस देश में,
काम बनता नहीं, जब तक हो न कुछ सूटकेस में।
भविष्य क्या होगा उस देश का,
जहाँ मर्दों को भागना पड़े नारी के वेश में।
हमने जमाने का बदलता रंग देखा है,
सबल कानूनों को होते बेबस, अपंग देखा है।
जनता का लोकपाल तो आकर ही रहेगा,
अभी तो सरकार ने आंदोलन का एक ही ढ़ंग देखा है।
ये दुनिया बड़ी बेईमान हो गयी है,
हवा में हाँकना अब हमारी शान हो गयी है।
बंद लिफाफों के भीतर की बातें जान लेते हैं अब,
हमें भी हर एक आदमी की पहचान हो गयी है।

❀ ❀ ❀

कर्त्तव्य

रोहित यादव
दशम 'ग'

देश की खातिर मर मिटने की आशाएँ थी मन में,
नैनों में अंगारे थे, ज्वालायें थीं तन में।
सौभाग्य हमारा भी होता यदि,
ऐसे कुर्बानों के दर्शन, मिल पाते इस जीवन में।
देश भक्ति का अतुल भार सौंप हमारे कंधों को,
अस्त हुए वो सूर्य नव, चूमा फाँसी के फंदों को।
कर्तव्य हमारा बस शेष यही कि इस अनमोल तिरंगे को,
ले जायें उच्च शिखरों पर, नीचा कर दें स्तम्भों को।
उनके सपनों के भारत का अब निर्माण करें हम,
तन नहीं कर पाये तो क्या?
मन तो दान करें हम।
पिछड़ा है जो दुनिया की गलियों में,
फिर से उस भारत को महान् करें हम।
देश की खातिर दुनियाँ छोडें, यह कर्त्तव्य हमारा है,
दुनियाँ भी तो देखे, यह भारत कितना हमको प्यारा है।

❀ ❀ ❀

जगदीश चन्द्र बसु की जीवनी

विक्रांत कुमार
सप्तम 'क'

भारतीय विज्ञान के क्षितिज पर चमकते नक्षत्रों में से एक जिनकी प्रतिभा का लोहा सारे संसार ने माना, उनमें एक प्रमुख व्यक्ति महान् वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु हैं। जगदीश चन्द्र बसु का जन्म 30 नवम्बर 1858 ई0 को बंगाल के मैमन सिंह जिले के फरीदपुर गाँव में हुआ। जगदीश चन्द्र बसु का बचपन देहाती वातावरण में, हरे–भरे खेतों और बगीचों में गुजरा। बसु की आरंभिक शिक्षा गाँव के स्कूलों में ही हुई। कॉलेज की पढ़ाई उन्होंने कोलकाता के सेन्टजेवियर कॉलेज से की। मैट्रिक की परीक्षा उन्होंने प्रथम श्रेणी से पास की। कॉलेज में उन्हें बेहतरीन अध्यापक मिले। एक अध्यापक फादर लाफाँ ने जगदीश चंद्र के जीवन को नई दिशा दी। जगदीश चन्द्र बसु आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड जाना चाहते थे।

यद्यपि उनके परिवार के कुछ सदस्यों का दबाव था कि वे आई0सी0एस0 की तैयारी करें। अन्ततः बसु लंदन गए जहाँ उन्होंने चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन शुरू किया। वहाँ उनकी तबीयत ठीक नहीं रहती थी। खासकर मुर्दे की चीर–फाड़ करने वाले कमरे में जाने से उन्हें अक्सर बुखार हो जाता था। डॉक्टरों की सलाह पर उन्होंने चिकित्सा शास्त्र की पढ़ाई छोड़ दी। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय के क्राईस्ट चर्च कॉलेज से भौतिकी, रसायन, वनस्पति शास्त्र विषय के साथ बी0एस0सी0 की पढ़ाई की। स्वदेश लौटने पर बसु मात्र 25 वर्ष की आयु में कोलकाता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में अस्थाई प्रोफेसर नियुक्त हुए। वास्तव में यह ठीक वैसा ही है, जैसा कि बाद में गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में किया था। सन् 1892 ई0 में अपने 34 वें जन्मदिन पर उन्होंने संकल्प लिया कि मैं अपना सारा जीवन विज्ञान की सेवा में लगा दूँगा। वे शोध कार्य में जुटे रहे। अपने खर्च पर देशी मिस्त्रियों की सहायता से उन्होंने प्रयोगशाला तथा उपकरण बनवाए। सबसे पहले उन्होंने बेतार के तार पर शोध शुरू किया। 1895 ई0 में बसु ने इस प्रयोग का पहली बार प्रदर्शन प्रेसीडेन्सी कॉलेज, कोलकाता में किया। उन्होंने अपने क्लासरुम से रेडियेटर की सहायता से तरंगे प्रवाहित की।

उनके इस प्रयोग से पूरे विश्व में खलवली मच गई। लंदन विश्वविद्यालय ने उसी समय बसु को "डॉक्टर" की उपाधि दी। डॉ0 बसु को बचपन से ही पेड़–पौधों तथा जीव–जंतुओं से गहरा लगाव था। उन्होंने वनस्पतियों के स्वभाव का अध्ययन करने के लिए "क्रेस्कोग्राफ" नाम का एक बहुत ही अदभुत यंत्र बनाया। जिससे वनस्पतियों के जीवन एवं स्वभाव के बारे में छोटी से छोटी जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है। इस खोज से पूरे संसार में तहलका मच गया। तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने उन्हें "सर" की उपाधि से अलंकृत किया। सन् 1917 ई0 में कोलकाता के सर्क्यूलर रोड पर "बसु विज्ञान मंदिर" की स्थापना की। इसके लिए डॉ0 बसु ने अपना सारा धन लगभग 5 लाख रुपये लगा दिए। 23 नवम्बर 1934 ई० के दिन इस महान् भारतीय वैज्ञानिक का देहान्त हुआ। डॉ0 मेघनाथ साहा उन्हीं के शिष्य थे। बसु द्वारा स्थापित विज्ञान मंदिर अब भी उनकी परंपरा को बढ़ा रहा है।

❀ ❀ ❀

फ्लोरैन्स नाइटिंगेल

कृतिका वाजपेयी
सप्तम 'ख'

बहुत समय पहले, इंग्लैण्ड में, फ्लौरैंस नाइटिंगेल नामक एक महिला एक बहुत प्रसिद्ध नर्स (परिचारिका) बनी। उसने बीमार लोगों को अच्छा करने में बहुत सहायता की।

फ्लौरैंस एक अच्छे परिवार में जन्मी। उनको अपना नाम इटली के उस शहर से मिला जहाँ उसका जन्म 12 मई 1820 में हुआ था। फ्लौरैंस इंग्लैण्ड में बड़ी हुई। उसके पिता ने उसे घर पर पढ़ाया। उसने अंग्रेजी, इटालवी, लैटिन, जर्मन, फ्रैंच, इतिहास और दर्शनशास्त्र सीखा। फ्लौरैंस दूसरे लोगों की मदद करना चाहती थीं। वह एक नर्स बनना चाहती थी। परन्तु उसके माता–पिता और बहन नहीं चाहते थे कि वो नर्स बने। उसके माता–पिता उसकी शादी किसी धनी व्यक्ति से करना चाहते थे और उसे आराम से बसाना चाहते थे।

उन दिनों अच्छे परिवारों की स्त्रियाँ नर्सें नहीं बनती थीं। उन्हें बहुत कम धन मिलता था। उन्हें किसी से बहुत कम आदर भी मिलता था। उन दिनों के अस्पताल भी कुछ बेहतर नहीं थे। वे गन्दी जगहें थीं। पलंग की चादरें कभी बदली नहीं जाती थीं, और मरीजों को कभी नहलाया नहीं जाता था। नर्सों को रोगी कक्ष के दरवाजे के बाहर लकड़ी के पिजरों में सोना पड़ता था। फ्लौरैंस इसे बुरा नहीं मानती थी। उनकी नर्स बनने की गुप्त योजना थी। उन्हें पहला अवसर तब मिला जब उसकी दादी बीमार हो गयी।

फ्लौरैंस उनके साथ रही और उनका ध्यान रखा। धीरे–धीरे वह पास के गाँव के लोगों की मदद करने लगीं। फ्लौरैंस को शीघ्र पता चला कि वह अपना कार्य ठीक प्रकार से नहीं कर सकती। उसको अपना कार्य करने का प्रशिक्षण नहीं था। तब उसने दवाई की पुस्तकें पढ़नी शुरु की। कुछ साल बाद उसे जर्मनी जाने का और वहाँ के एक अस्पताल में नर्स का कार्य सीखने का अवसर मिला।

1854 में जब क्रीमिया का युद्ध छिड़ गया। सरकार ने 'फ्लौरैंस नाइटिंगल' को तुर्की के सेन्टारी नामक स्थान पर भेजा। उसे चालीस नर्सों की टोली का प्रभारी बनाया गया। सेन्टारी का अस्पताल युद्ध में घायल योद्धाओं से भरा था। फ्लौरैंस ने उन्हें सही करने में इतनी मेहनत की कि वह बीमार पड़ गयी। परन्तु उसने इंग्लैण्ड वापस जाने से इंकार कर दिया। 1860 में उसने नाइटिंगेल स्कूल फॉर नर्सिज शुरु किया। उसके प्रयत्नों के कारण ही पूरे देश में नर्सों को आदर मिलने लगा। फ्लौरैंस नाइटिंगेल की मृत्यु 13 अगस्त 1910 को लन्दन में हुई। नर्सिंग के इतिहास में वे सबसे महानतम व्यक्तित्व है।

❀ ❀ ❀

कालजयी कविः तुलसीदास

अभिषेक सिंह चौहान
एकादश 'ख'

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में बहुत से महान कवि व लेखक हुए हैं। जिन्होंने हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान देकर भारतीय संस्कृति को महान बनाया। हिन्दी साहित्य को आगे ले जाने का श्रेय भी इन्हीं कवियों व लेखकों को जाता है। जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं से सभी को परिचित कराकर उच्च स्थान की प्राप्ति की। इन्हीं कवियों व लेखकों में एक नाम आता है सगुण भक्ति काव्य की रामाश्रयी शाखा के श्रेष्ठ कवि **'तुलसीदास'** का। जिन्होंने अपनी श्रेष्ठ व उत्कृष्ट रचनाओं से हिन्दी साहित्य को महान रत्न दिये। तुलसीदास जी भगवान श्री राम जी के अनन्य भक्त हैं। इन्होंने भगवान श्री राम जी के जीवन पर रामचरित मानस नामक महाकाव्य की रचना की जो उच्चकोटि की है और जन–जन के मन को पवित्र कर गई है।

तुलसीदास का जीवन

संवत् पंद्रह सौ चौवन, जागा राजापुर का भाग।
हुलसी ने तुलसी को जाया, जो हिन्दी का अमर सुहाग।।

तुलसीदास जी का जन्म बाँदा जिले के राजापुर नामक गाँव में सन् 1523 ई० में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम व माता का नाम हुलसी था। तुलसीदास जी के बचपन का नाम रामबोला था। माना जाता है कि तुलसीदास जी के जन्म के उपरान्त ही इनके मुख में 32 दाँत थे और मुख खोलते ही इन्होंने सबसे पहले राम शब्द बोला था। जिसके कारण ही इनका नाम रामबोला पड़ गया। इनका बाल्यकाल बड़ी कठिनाइयों से व्यतीत हुआ।

पिता आत्माराम दुबे, माता जिनकी हुलसी थी।
राजापुर के कवि तुलसी थे, मन में भक्ति राम की था।।

इन्होंने घर में ही गुरू से शिक्षा प्राप्त की। इनका पालन पोषण इनके गुरु नरहरिदास ने किया था। जिन्होंने तुलसीदास को वेद, पुराण, उपनिषद, आदि का अध्ययन कराया। इनके जीवन पर विद्वानो में कई मत भेद है।

संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ल सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।।

तुलसीदास जी का विवाह दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली से हुआ था। ये अपनी रूपवती गुणवती पत्नी से असीम प्रेम करते थे। एक बार जब इनकी पत्नी अपने घर जा रही थी तो तुलसीदास जी भी उनके साथ पीछे–पीछे चल दिये। इससे उनकी पत्नी अत्यधिक क्रोधित हो गयी और तुलसी दास जी को कटु वचन कह डाले–

लाज न आवत आपको, दौरे आयहु साथ।
धिक–धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहौं मैं नाथ।।

ज्ञान की प्राप्ति

अपनी पत्नी के मर्मभेदी इस प्रकार के उपदेश से इनका मन सांसारिक चीजों से विमुख हो गया

तथा ये काशी आ गए तथा वहाँ काशी मे आचार्य शेष सनातन से पन्द्रह वर्षों तक वेद–वेदांग का अध्ययन किया। इन्होंने अनेक स्थानों का भ्रमण किया परन्तु मुख्य रूप से इनका समय काशी, अयोध्या, चित्रकूट में व्यतीत हुआ।

अपनी पत्नी के उपदेश के कारण ही इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। इस के उपरान्त इन्होंने अयोध्या में 'रामचरित' मानस की रचना की।

हिन्दी साहित्य में योगदान

तुलसीदास जी का हिन्दी साहित्य में बहुत योगदान है। जिस प्रकार से तुलसीदास जी ने हिन्दी साहित्य को परिभाषित किया है उसकी कल्पना करना अतुलनीय है। तुलसीदास जी ने अयोध्या में 'रामचरित मानस' की रचना संवत् 1631 वि0 में 2 वर्ष 7 माह 26 दिन में पूरी की। रामचरित मानस जो कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन कराती है। यह सदाचार की शिक्षा देने वाला उत्कृष्ट नीति ग्रन्थ, भक्तों के गले का कण्ठहार तथा ज्ञान, कर्म और भक्ति का विलक्षण संगम है। रामचरित मानस एक ऐसा ग्रन्थ है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिशा निर्देश देता है।

तुलसी की रचनाएँ

तुलसीदास जी की 12 प्रमाणिक रचनाएँ मानी जाती है। जो निम्न लिखित हैं–

1. रामलला–नहहू
2. वैराग्य संदीपनी
3. रामज्ञा–प्रश्नावली
4. जानकीमंगल
5. पार्वती मंगल
6. गीतावली
7. विनय पत्रिका
8. श्री कृष्ण गीतावली
9. दोहावली
10. कवितावली
11. बरवै रामायण
12. रामचरितमानस

तुलसीदास जी हिन्दी साहित्य के महान कवि हैं। उन्होंने अपनी सबल और समर्थ लेखनी से निराशा घुटन और दासता के युग में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शों। को जन–मानस के समक्ष प्रस्तुत कर जन–जन को कृतार्थ कर दिया।

तुलसीदास का हिन्दी साहित्य में ही नहीं विश्व साहित्य में स्थान अद्वितीय है। हरिऔध के शब्दों में –

" कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी पा तुलसी की कला।।

उपसंहार

सचमुच कविता से तुलसी नहीं, तुलसी से कविता गौरवान्तिव हुई। उनकी समर्थ लेखनी से भारतीय समाज में नाना प्रकार की परस्पर, विरोधी संस्कृतियों, जातियों तथा धार्मिक विषमताओं को दूर किया है।

हुलसी ने तुलसी दिया, तुलसी ने श्री राम।
ऐसे भक्त कवि तुलसी को, मेरा बराम्बार प्रणाम।।

स्वदेश प्रेम

आयुष शाही
नवम 'ख'

रूपरेखा –

1. प्रस्तावना
2. स्वदेश प्रेम की स्वाभाविकता
3. स्वदेश प्रेम का क्षेत्र
4. स्वदेश प्रेम का प्रमाणिक इतिहास
5. उपसंहार

भरी नही जो भावों से, जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश से प्यार नहीं।।

प्रस्तावना –

जिस मनुष्य के हृदय में स्वदेश प्रेम की भावना न हो अर्थात् जो मनुष्य अपने देश के प्रति कर्तव्यपरायण व समर्पित नहीं है उसका हृदय पत्थर के समान है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश पर गर्व करना चाहिये व अवसर आने पर अपने देश प्रेम का प्रमाण भी देना चाहिये। मनुष्य को अपना देश प्रेम प्रमाणित करने के कई अवसर कई क्षेत्रो में प्राप्त होते हैं। मनुष्य राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा शरीरिक रूप से समर्थन कर सकता है। स्वदेश प्रेम का सर्वोचित उदाहरण हमारा इतिहास व ऐतिहासिक घटनायें हैं, प्राचीन काल में कई भारतीय सपूतो ने कर्मयुद्ध में अपने प्राणों की आहूति दी तथा स्वयं को अपनी जन्म भूमि हेतु बलिदान कर दीर्घकाल हेतु अमर हो गये व स्वयं को मरणोपरांत भी प्रसिद्ध कर दिया।

स्वदेश–प्रेम की स्वाभाविकता –

स्वदेश प्रेम की स्वाभाविकता से तात्पर्य है कि मनुष्य में ही नहीं पशु पक्षियों व पेड़े पौधों तक में स्वदेश प्रेम की भावना विद्यमान होना। पं0 माखनलाल चतुर्वेदी की थे पंक्तियाँ इस बात का प्रमाण देती हैं।

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीष चढ़ाने, जिस पथ पर जाये वीर अनेक।।

पं० माखनलाल चतुर्वेदी की ये पंक्तियाँ पुष्प के अंतः भावों का वर्णन करती हैं जिसमें पुष्प की यह चाह है कि उसे मातृभूमि पर जन्में वीरो के पथ पर न्योछावर होना किसी सुंदरी के सजावट का सामान बनने व देवता के शीष पर चढ़ाये जाने से अधिक प्रिय होगा। पुष्प ही नहीं जीव–जंतुओ में भी अपनी मातृभूमि के प्रति सेवाभाव की भावना विद्यमान रहती है। प्रत्येक मनुष्य में स्वदेश के प्रति प्रेम होना चाहिये तथा स्वदेश के प्रति समर्पित होने की भावना होनी चाहिये।

स्वदेश प्रेम का क्षेत्र –

स्वदेश प्रेम के क्षेत्र का विस्तार अत्यंत व्यापक है। प्रत्येक क्षेत्र के कण–कण में स्वदेश प्रेम की भावना होती है। स्वदेश अर्थात् अपना देश अर्थात् हमारा जन्मस्थान हमारी कर्मभूमि। अतः जो भूमि हमारी जन्मभूमि व कर्मभूमि हो उसके प्रति समर्पण भाव स्वाभाविक है। यह स्वाभाविकता ही स्वदेश प्रेम है। स्वदेश की रक्षा व कर्तव्यपारायणता का वर्णन इन पंक्तियों द्वारा किया जा सकता है –

आग लगी इस वृक्ष में, जलते इसके पात।
तुम क्यों जलते पक्षियों, जब पंख तुम्हारे पास।
फल खाये इस वृक्ष के, बीट लथेड़े पात।
यही हमारा धर्म है, जलें इसी के साथ।

यह एक पक्षी के भाव हैं जो अपने जीवन का त्याग कर सकता हैं परंतु अपने जन्म क्षेत्र जो उसका गृह है उसको अंतिम समय तक छोड़ने के लिये तैयार नहीं है। इस आधार से मनुष्य को तो अपने देश को स्वयं से ज्यादा महत्त्व देकर अपने स्वदेश के हित में यदि मृत्यु भी स्वीकार करनी पड़े तो करनी चाहिये।

स्वदेश प्रेम का प्रमाणिक इतिहास –

हमारा इतिहास स्वदेश प्रेम का जीता जागता प्रमाण है, यह प्रमाण है उन वीरों का जिन्होंने इस भूमि को अपने रक्त से सींचा है, यह प्रमाण है उन माताओं का जिन्होंने अपने लालों को अपनी आँखो के समक्ष कुर्बान होते देखा है यह प्रमाण है उन स्त्रियों का जिन्होने अपने सुहाग को अपने देश के लिये न्योछावर कर दिया। अंतः हमारा इतिहास हमारी धरोहर, हमारी संस्कृति, हमारी समर्पण भावना, हमारे त्यागी सन्यासियों व देशभक्तों का विवरण प्रदान करता है अर्थात् प्रमाणित करता है। कि हमारे देश में पुरुषों ने ही नहीं अपितु महिलाओं ने भी अपने देश प्रेम को प्रमाणित किया है इनमें महारानी लक्ष्मीबाई शीर्ष पर है तथा उनकी वीरता का वर्णन 'सुभद्रा कुमारी चौहान' ने अति सुंदर ढंग से किया है –

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

झाँसी की वीरांगना लक्ष्मीबाई ने भी युद्धक्षेत्र में उतरकर यह दिखा दिया कि महिला अबला नहीं बल्कि सबला होती है। इसी कतार में हमारे देश को अन्य भी कई देशभक्त मिले जिसमें महात्मा गांधी, सरदार पटेल, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद, पं0 नेहरू, सुभाष चंद्र बोस व अन्य भी कई शामिल हैं। इन्होंने विभिन्न क्षेत्रों द्वारा अपनी देशभक्ति व देशप्रेम दिखाया था।

देश प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है, अमल असीम त्याग के विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें, देश प्रेम होता है विकसित।।

उपसंहार

देश प्रेम मनुष्य को श्रेष्ठता का मार्ग दिखलाता है। प्रत्येक मनुष्य अमरता हेतु देश प्रेम का मार्ग चयनित कर सकता है। जिस मनुष्य में देश प्रेम की भावना नहीं वह गृतक समान है –

जिसमें न निज गौरव, न निज देश का अभिमान है।
वह मनुष्य नहीं है, है पशु, निरा और मृतक समान है।

स्वदेश प्रेम मनुष्य को पशुता से मानवता की ओर ले जाता है तथा गनुष्य को उचित अनुचित का बोध कराता है। जिस मनुष्य में गौरव तथा देश का अभिमान नही है वह पशु तथा मृतक के समान है। हममें अपने देश का हर प्रकार से हित करने की चेष्टा होनी चाहिये। अपने देश पर गर्व करना चाहिये।

जिये तो सदा इसी के लिये, यही रहे आजीवन हमारा हर्ष।
निछावर कर दे हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारवर्ष।।

हमारे जीवन का एक मात्र लक्ष्य स्वदेश प्रेम व देश की सेवा होनी चाहिये हम किसी भी क्षेत्र से अपने स्वदेश प्रेम की व्याख्या कर सकते हैं। स्वदेश प्रेम का उदाहरण कारगिल का युद्ध भी है जिसमें लाखो वीरों ने अपने प्राणों की आहूति दे दी थी उनके लिये देश से बढ़कर कुछ नहीं था। उनसे सीख लेकर प्रत्येक भारतवासी को अपने देश के प्रति समर्पित होना चाहिये व सभी प्रकार के मतभेद जैसे – जातिवाद, संप्रदायिकता आदि का त्याग करना चाहिये।

❁ ❁ ❁

भगवान्ने ज्ञानयोग और कर्मयोगको समकक्ष कहा है–

साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्।।
यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।
एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।।

(गीता ५। ४–५)

'बेसमझ लोग सांख्ययोग और कर्मयोगको अलग–अलग फलवाले कहते हैं, न कि पण्डितजन; क्योंकि इन दोनोंमेंसे एक साधनमें भी अच्छी तरहसे स्थित मनुष्य दोनोंके फलरूप परमात्माको प्राप्त कर लेता है।'

'सांख्ययोगियोंके द्वारा जो तत्व प्राप्त किया जाता है, कर्मयोगियोंके द्वारा भी वही प्राप्त किया जाता है। अतः जो मनुष्य सांख्ययोग और कर्मयोगको फलरूपमें एक देखता है, वही ठीक देखता है।'

पर्यावरण प्रदूषण

उत्कर्ष तिवारी
नवम 'ग'

पर्यावरण प्रदूषण

आज पर्यावरण प्रदूषण से सारा संसार चिंतित है। प्रदूषण आज के समय में एक चिन्तनीय विषय है जिस पर हमें विचार कर उसे कम करने के उपाय सोंचने चाहिये। प्रकृति और वायुमंडल एक शुद्ध निर्मल पर्यावरण का निर्माण करता है यदि किसी कारण से इनमें असंतुलन हो जाता है तो उसे प्रदूषण कहते हैं। आज मनुष्य, विशेषकर विज्ञान जगत इसे लेकर अधिक चिंतनीय और इनके उपाय के लिये अधिक से अधिक संभव प्रयास कर रहा है।

प्रदूषण कई प्रकार के होते हैं जैसे–

1. **ध्वनि प्रदूषण**
2. **वायु प्रदूषण**
3. **जल प्रदूषण**
4. **मृदा प्रदूषण**
5. **नाभिकीय प्रदूषण**

आज के युग में औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण के अंधाधुन्ध विस्तार ने मानव जगत को खतरे में डाल दिया है।

पर्यावरण–प्रदूषण के कारणः

वर्तमान समय मनुष्य जितनी तीव्रता से विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है उतनी ही तेजी से प्रदूषण के क्षेत्र में भी वृद्धि कर रहा है। अंधाधुंध पेड़ों की कटाई से प्रदूषण का स्तर भी बढ़ रहा है मशीनीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण जो प्रदूषण फैल रहा है वह मनुष्य को उसकी मारक स्थिति तक पहुँचा सकता है। कल–कारखानों से निकले अपशिष्ट को या तो जला दिया जाता है या तो उसे भराव के काम में उपयोग किया जाता है। इससे पहले इन सबके ढेर लगाए जाते हैं जिनसे से अनेक प्रकार के कीटाणु, गन्दगी और अनेक हानिकारक तत्व वायुमण्डल में मिलकर वातावरण को दूषित कर देते हैं। जिससे अनेक प्रकार की बीमारियाँ पनपती हैं। कल कारखानों से निकले अपशिष्ट को नालों और नदियों में बहाया जाता है। और उन्हीं नदियों के पानी से खेतों को सींचा जाता है जिससे फल–सब्जियाँ आदि तत्वहीन हो जाते है और विषैले हो जाते हैं। गंगा–यमुना जैसी पवित्र नदियाँ भी इस प्रदूषण से नहीं बच सकी। प्रदूषण ने मनुष्य को मारक स्थिति में पहुँचा दिया है।

रेल के इंजनों से निकला धँआ 'मोटर, गाड़ियों से निकली गैसें व धुँआ 'स्टोव से निकला कैरोसिन' 'घरों में इस्तेमाल होनले वाला कोयला' और चिमनियों और भट्टियों में जलने वाले हाईकोक' का धुँआ बहुत हानिकारक होता है। मोटर गाड़ियों से निकली हाइड्रोकार्बन गैसें जो अनेक प्रकार के श्वास रोग, फेफड़ों में साँस की कमी होने के कारण मृत्यु दर को बढ़ावा दे रही हैं। कल–कारखानों से अपशिष्ट जब नदियों में जाता हैं तो पानी में ऑक्सीजन की कमी, कीटाणुओं की वृद्धि और पानी को विषैला कर देता हैं जिस कारण से अनेक जलीय–जन्तु, मछलियाँ मर जाती हैं और पानी में विषाक्त उत्पन्न होता है। वायु में धुँए और हानिकारक गैसें जैसे **'कार्बन–डाई–ऑक्साइड, नाइट्रोजन, नाइट्रिक ऑक्साइड, सल्फ्यूरिक एसिड** आदि उत्पन्न

होती हैं जिससे प्रदूषण तो संभव ही है। वर्तमान समय में ओंजोन परत की क्षति को लेकर बहुत चिंता जतायी जा रही है। इसलिये वैज्ञानिक इसकी क्षति कम करने के उपाय ढूँढ रहे हैं। नाभिकीय प्रदूषण वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या है। आपने 'नागासाकी' और 'हिरोशिमा' की घटना सुनी ही होगी। जिसमें उसका असर आज तक दिख रहा है। जिससे वहाँ की वंशानुगत क्रम को क्षति पहुँची है जिससे वहाँ की संताने आज भी विकलांग पैदा होती हैं। और भोपाल की गैस त्रासदी ने मनुष्य और विज्ञान जगत को झकझोर कर रख दिया है।

प्रदूषण से उत्पन्न बीमारियाँ

प्रदूषण के कारण बहुत सी बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। जैसे–दमा, क्षय, जुकाम, बुखार, टीवी और श्वसनी शोध, फेफड़ो के श्वसन की कमी, अनेक प्रकार के चर्म और श्वसन रोग उत्पन्न हो रहे हैं। और बहुत से ज्ञात–अज्ञात रोग भी जन्म ले रहे हैं। वर्तमान समय में 'स्वाइन फ्लू' नामक बीमारी के झोंके ने सम्पूर्ण विश्व को ग्रसित कर दिया परन्तु विज्ञान के वरदान ने इसका इलाज निकाल लिया है। कैंसर के उपचार बड़े ही महँगें होते हैं जिसके कारण बहुत से लोग आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण इसके शिकार हो जाते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के नियंत्रण के उपाय

पर्यावरण प्रदूषण के निरंतर प्रयास चल रहे हैं। पर इसके लिये किसी एक व्यक्ति या समुदाय को नहीं बल्कि सम्पूर्ण देश को जागरूक होना चाहिये। आधुनिक समय में मनुषय को पड़ों की कटाई पर रोक लगानी चाहिये और अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने चाहिये। इसीलिये सरकार ने पेड़ों की अत्यधिक कटाई पर रोक लगा दी है। फिर भी कुछ स्वार्थी लोग अपने हित के लिये सम्पूर्ण संसार को विनाश की ओर ले जा रहे हैं।

मशीनीकरण, औद्योगिकीकरण और भट्टियों को नगरों और महानगरों से दूर लगाने के कड़े आदेश सरकार ने दे दिये हैं ताकि नगरों में प्रदूषण कम हो। सर्वाधिक औद्योगिकीकरण करने वाले महानगरों में दिल्ली, मुम्बई और कोलकाता आदि शामिल है। दिल्ली सर्वाधिक मशीनीकरण करने वाले नगरों में एक है। और अन्य नगरों महानगरों जहाँ तेजी से औद्योगिकीकरण बढ़ रहा है वह भी इसके शिकार होते जा रहे हैं।

पर्यावरण दिवस

इन आलोकों के तथ्य में 5 मई सन् 1977 को सरकार ने 'पर्यावरण दिवस' मनाने का निश्चय किया जिसमें प्रदूषण के निवारण करने का उपाय निश्चय किया। कहा जा रहा यदि इस पर जल्द ही कोई उपाय न निकाला तो हिम ग्लेशियर पिघलकर बाढ़ का रूप ले सकते हैं या सम्पूर्ण विश्व को डुबा सकते हैं इसलिये यह बहुत आवश्यक है कि पृथ्वी का संतुलन बनाए रखना होगा। यह एक महत्वपूर्ण विषय है जिस पर सम्पूर्ण विश्व को अपाना द्वेष छोड़कर इसके बारे में उपाय निकालना होगा। वरना हमारी आने वाली पीढ़ी अपनी जिन्दगी जीने को विवश हो जाएगी। और अपने पूर्वज अर्थात हम लोगों पर दोष देगी। इसलिये अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी हमारी है।

प्रेरक प्रसंग

नैना सिंह
अष्टम 'ख'

गीता सबका आधार है

स्वामी विवेकानन्द जी अपने अमेरिका प्रवास के काल में एक महिला के यहाँ रूके हुए थे। इस महिला ने स्वामी जी से मिलने के लिए अपने पुरुष महिला मित्रों को बुलाया। जिस कक्ष में इन सबके साथ स्वामी जी की मीटिंग थी–

उस कक्ष को उस महिला ने बड़े ही उत्तम ढंग से सजाया। सारी सजावट वह स्वामी जी को दिखा रही थी ..... तथा आने वालों से परिचय करा रही थी। धीरे–धीरे यह महिला स्वामी जी के लिए निर्धारित बैठने के स्थान पर खड़ी हो गयी। अचानक उस महिला ने कहा स्वामी जी यह स्थान तो रह गया, महिला ने एक कोने में रखीं पुस्तकों की ओर संकेत किया स्वामी जी उधर बढ़े–महिला ग्रन्थों का परिचय कराने लगी। उसने कहा सबसे नीचे गीता..... इसके ऊपर यह .....। आगे उसने कहा क्योंकि क्रिश्चियन धर्म सबसे श्रेष्ठ है इसलिए बाइविल को मैंने सबसे ऊपर रखा है। उसके इस कथन पर सभी आगन्तुक तालियाँ बजाने लगे। स्वामी जी मौन थे। कुछ क्षण बाद वह आगे बढ़े ..... और उन्होंने नीचे से गीता को खींच लिया। परिणामतः ऊपर से सभी ग्रन्थ गिर गये। स्वामी जी बोले–देखो गीता सभी ग्रन्थों का आधार है। अगर गीता नहीं होगी तो सारे धर्म ग्रंथ इसी प्रकार गिर पड़ेंगे। तुमने यह सराहनीय काम किया।

महिला एवं सभी श्रोता स्तब्ध थे। महिला स्वामी जी को नीचा दिखाना चाहती थी। इस मर्म को स्वामी जी ने समझा और अपने देश के धर्म ग्रन्थों की श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया।

❀ ❀ ❀

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

काजल
सप्तम 'ख'

बेटा तुम यहीं भारत में ही रहकर काम क्यों नही करते,आखिर यहाँ पर भी तुम्हें कई अच्छी नौकरियों के आफर हैं। फिर तुम उन्हें ठुकराकर विदेश में ही क्यों रहना चाहते हो। "अरे डैड इंडिया में रखा ही क्या है, इंडिया ने तरक्की तो बड़ी कर ली पर वह विदेशों का मुकाबला तो कभी नहीं कर सकती जो सुविधाएँ तथा वेतन वहाँ मिलता हैं, यहाँ कोई सोच भी नहीं सकता। एक बार जो यहाँ से गया वह फिर कभी वापस आना चाहता है क्या? अच्छा मैं चलता हूँ प्लेन का टाइम हो रहा है। कबीरन ने सामान टैक्सी में रखा और रवाना हो गया। एक महीने बाद ही उस देश में खूनी संघर्ष होने के कारण वहाँ रहने वाले हजारों विदेशियों को जान का खतरा हो गया। भारत सरकार ने दो दिन में सभी फँसे भारतीयों को कई विशेष विमानों द्वारा सुरक्षित स्वदेश पहुँचा दिया। मुम्बई लौटने पर पत्रकारों ने सब को घेर लिया। एक ने कबीर के मुँह के आगे माइक लगा दिया, कबीर बड़े जोश में बोल रहा था "विदेशो में चाहे जितनी भी सुविधाऐं मिले पर अपना वतन आखिर अपना ही होता है। फिर चाहे वह जैसा भी हो वह मुट्ठी तानकर बोला" सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।

❀ ❀ ❀

स्वामी विवेकानन्द

अनमोल तिवारी
सप्तम 'ग'

जीवनवृत्त

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी सन् 1863 को कलकत्ता में हुआ था। उनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाई कोर्ट के प्रसिद्ध वकील थे। उनकी माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचारों की महिला थी।

सम्मेलन और भाषण

मेरे अमरीकी भाइयों और बहनों! आपने जिस सौहार्द और स्नेह के साथ हम लोगों का स्वागत किया। उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से पूर्ण हो रहा है। संसार में सन्यासियों की सबसे प्राचीन परम्परा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ धर्मों की माता की आरे से धन्यवाद देता हूँ।

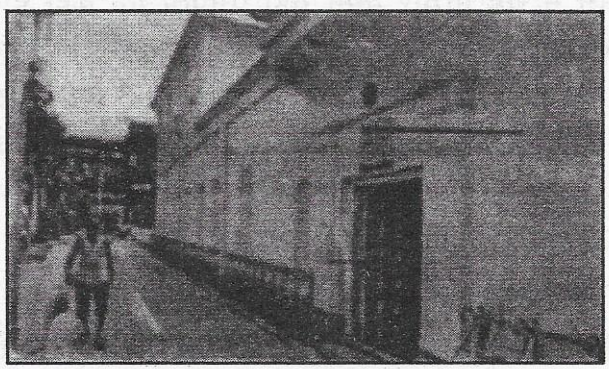

गौड़ महोन मुखर्जी स्टीट ,कोलकत्ता स्थित
स्वामी विवेकानन्द के जन्मस्थान का चित्र

गुरु के प्रति निष्ठा

एक बार किसी शिष्य ने गुरुदेव की सेवा में घृणा और निष्क्रियता दिखाते हुए नाक–भौं सिकोड़ीं। यह देखकर विवेकानन्द को क्रोध आ गया। वे अपने उरा गुरु भाई को सेवा का पाठ पढ़ाते हुए और गुरुदेव की हर वस्तु के प्रति प्रेम दर्शाते हुए उनके बिस्तर के पास रक्त,कफ आदि से भरी थूकदानी उठाकर फेंकते हुये बोले गुरु के प्रति ऐसी अनन्य भक्ति और निष्ठा के प्रताप से ही वह अपने गुरु के शरीर और उनके दिव्यतम आदर्शों की उत्तम सेवा कर सके। और आगे चलकर समग्र विश्व में भारत के अमूल्य अध्यात्मिक भण्डार की महक फैला सके। ऐसी थी उनके इस महान व्यक्तित्व की नींव में गुरु भक्ति,गुरु सेवा और गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा, जिसका परिणाम सारे संसार ने देखा।

पहली गुरु है माँ

श्रुति गुप्ता
नवम 'क'

अज्ञातवास के समय यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न किया था पृथ्वी से भारी क्या है ? तो युधिष्ठर ने तुरंत जवाब दिया–पृथ्वी से भारी माँ होती है। यह बिल्कुल सही उत्तर था। कारण, पृथ्वी तो सिर्फ दुनिया भर के भार को वहन करती है, लेकिन माँ अपने बच्चों के दुःख दर्द, इच्छाओं और अनिच्छाओं उनकी भूँख प्यास और उनके हर क्रिया कलापों को न सिर्फ वहन करती है। बल्कि बच्चे को जरा सी चोट लगती है, तो दर्द माँ को होता है। वहीं बच्चा खुश होता है, तो माँ भी खुश हो जाती है।

महर्षि दयानंद ने कहा था 'जिस तरह माता संतानों को प्रेम देती है और उनका हित करना चाहती है उस तरह और कोई नहीं करता।' माँ ममता से परिपूर्ण है जीवनदायिनी है। वह विशाल हृदय वाली और परोपकारी है। माँ शब्द में न जाने कैसा माधुर्य है वह जिस शब्द से जुड़ जाता है उसी में अपूर्व सरलता का तथा हृदय को छू जाने का भाव उत्पन्न हो जाता है। जैसेः– धरती माँ, भारत माँ आदि। माँ की सेवा से बच्चा कभी उऋण नहीं हो सकता। माँ का प्यार निःस्वार्थ होता है। बच्चे की सेवा करते वक्त उसके मन में यह विचार कभी नहीं पनपता कि बड़ा होकर उसका प्रतिफल उसे मिलेगा। माँ बच्चे को संस्कारशील बनाने के लिए पूरा प्रयास करती है। उसमें स्नेह, वात्सल्य, त्याग ममता और सेवाभाव अपने चरम पर होता है। वह अपने बच्चे पर सर्वस्व निछावर कर देती है। वह उसे पाने के लिए अत्यंत कष्ट का सामना करती है, पर वह इस अपार कष्ट को भी प्रसन्नतापूर्वक सहन कर लेती है। उसकी सभी पीड़ाएँ अपने बच्चे के मुख पर एक मुस्कान देखकर छू मंतर हो जाती है। माँ सिर्फ देना जानती है, लेना नहीं।

लोगों के अनुसार माँ का स्थान ईश्वर के बराबर है। क्योंकि ईश्वर ने मानवता के सृजन का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व माँ को ही दिया है। जहाँ तक मेरा मानना है यह बात पूर्णतया यथार्थ साबित होती है।

माँ की महिमा शब्दों में व्याख्यायित नहीं हो सकती। हम ईश्वर की वंदना करते हैं तो सबसे पहले उसे मातृ रूप में देखते हैं

त्वमेव माता च पिता त्वमेव .....

यह एक सामान्य सी बात है परन्तु फिर भी गौर करने लायक है कि जब भी हम कष्ट में होते हैं तो मुँह से एक शब्द निकलता है "माँ" बच्चे का पहला विद्यालय घर होता है व उसकी पहली गुरु माँ होती है, जो उसके भीतर संस्कारो के बीज डालती है। हमें यह समझ लेना चाहिए कि माँ के ऋण से हम कभी उऋण नहीं हो सकते है। अंत में मैं। बस इतना ही बताना चाहूँगी कि भले ही हम माँ का ऋण चुका न सकें, लेकिन तन मन से उसकी सेवा तो कर ही सकते है। अगर आज देश का प्रत्येक व्यक्ति ऐसा प्रण अपने मने में कर ले तो वह दिन दूर नहीं होगा जब हमारा यह भारत देश अनेकों महापुरूषों के सपनों के भारत के समान दिखने लगेगा।

मेरी प्रिय पुस्तक राम चरितमानस

श्रुति गुप्ता
नवम 'क'

रूपरेखा

प्रस्तावना, रामचरितमानस का परिचय, उत्तम काव्य, सामाजिक एवं साहित्यिक महत्त्व, धार्मिक महत्व, उपसंहार।

प्रस्तावना

पुस्तक हमारी सबसे बड़ी और सर्वोत्कृष्ट मित्र है। यह मेरा हर समय (सुख में दुःख में) साथ देती है। मेरे किसी भी कष्ट का इनमें समाधान अवश्य होता है जिससे वह समस्या शीघ्र ही सुलझ जाती है। वर्तमान समय तक रचित सभी पुस्तकों में "रामचरितमानस" मेरी प्रिय पुस्तक है। उसमें सब कुछ विद्यमान है। जब भी मैं उसे पढ़ती हूँ तो मुझे अलग ही आनंद की अनुभूति होती है। खाली होने पर मुझे पुस्तक पढ़ना पसंद है। जिससे मैं अपने समय को नष्ट होने से बचा सकती हूँ।

रामचरितमानस का परिचय

यह महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित काव्य है। तुलसीदास ने इसकी रचना सं० 1631 से 1633 वि० में की थी। रामचरितमानस में भगवान श्रीराम के जीवन चरित का दोहा व छन्द शैली में भावपूर्ण वर्णन किया है। यह काव्य सात खंडो में विभाजित हैं। वे हैं बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड, तथा उत्तमकाण्ड। इसकी अनुपम शैली अवर्णनीय है। इसकी चौपाई का एक उदाहरण निम्न है:–

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरूचि सुबास सरस अनुरागा।।
अमिय मूरिमय चूरन चारू।
समन सकल भव रूज परिवारू।।

उत्तम काव्य

यह हर दृष्टि से एक श्रेष्ठ तथा उत्तम काव्य है। इसका वर्णन जितने शब्दों में किया जाए वह कम है। इसमें राजा प्रजा, पति–पत्नी, भाई–भाई, पिता–पुत्र का ऐसा अनूठा रिश्ता प्रदर्शित किया गया है जो आज के समाज द्वारा अनुकरणीय है। इसमें राम एक आदर्श पुत्र है आदर्श राजा है, आदर्श पति है। राम में ऐसे सभी गुण विद्यमान हैं जो आज के साधारण मनुष्य को अपने में ढालने का प्रयास करना चाहिए। तभी हमारा देश सुचारू रूप से संचालित हो पाएगा। भरत एक आदर्श भाई, लक्ष्मण एक उत्तम सेवक है, सीता एक पतिव्रता स्त्री है, हनुमान एक उच्चकोटि के भक्त है, दशरथ एक वचनबद्ध पिता हैं, सुग्रीव एक सच्चा मित्र है। काव्यों की दृष्टि में यह सर्वोत्तम काव्य है। इसकी चौपाई का एक उदाहरण निम्नवत् है–

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा।
देखि विभीषन भयऊ अधीरा।।
अधिक प्रीति मन मा संदेहा।
बंदि चरन कह सहित सनेहा।।

सामाजिक एवं साहित्यिक महत्त्व

यह सामाजिक व साहित्यिक दोनों की दृष्टि में महत्वपूर्ण है। इसको पढ़ने से मन में आनंद का तथा शरीर में स्फूर्ति का संचार हो जाता है। आज कल समाज में घट रही घटनाओं का यह एक मात्र समाधान है। यदि मनष्य इसका नियमित पाठ करें तो सामाजिक द्वेष भाव, छुआछूत आदि भावनाओं को अपने मन से निकाल पाएगा। पढ़ने मात्र से ही नहीं अपितु उसके अर्थ को भी हमें समझना होगा।

साहित्यिक दृष्टिकोण से इस काव्य की भाषा शैली बहुत ही सुन्दर है। इसकी चौपाइयों को आसानी से गान किया जा सकता है। यह एक क्रमबद्ध काव्य है। इसमें क्रमबद्ध रूप से घटनाएँ चलती रहती हैं।

धार्मिक महत्व

यह एक धार्मिक काव्य है। यह काव्य इतना अच्छा है कि हर अमीर से मध्यम वर्ग व गरीब वर्ग और महल से झोपड़ी तक यह पवित्र पुस्तक अवश्य पायी जाती है। स्वयं महाकवि तुलसीदास का कहना है कि यह काव्य विविध प्रकार के पुराणों शास्त्रों का सार है। मेरी यह प्रिय पुस्तक समस्त हिन्दू धर्मावलम्बियों के साथ–साथ अन्य धर्मों के अनुयायियों के लिये भी अनुकरणीय व शिक्षाप्रद है।

उपसंहार

मेरे विचार से पुस्तक पढ़ना एक सबसे अच्छा आनन्द है। रामचरितमानस में राम जी तथा श्री हनुमान का चरित्र सर्वाधिक प्रिय लगता है। अंत में मेरा बस यही कहना है कि यदि आज इस वर्तमान समय में मनुष्य की स्वार्थलिप्सा, धनपिपासा, भ्रष्टाचार तथा समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करना है तो इसका एक मात्र सर्वश्रेष्ठ साधन है– रामचरित मानस।

"जथा सुअंज न अंजि दृग, साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखत सैलिबन, भूतल भूरि निधान।।

क्रिकेट स्टार सचिन

सत्यम सचान
नवम 'ख'

प्रस्तावना

सचिन तेन्दुलकर का जन्म मराठा परिवार में 24 अप्रैल 1973 ई० को मुम्बई में हुआ था। सचिन का पूरा नाम सचिन रमेश तेन्दुलकर है। इनके पिता का नाम रमेश तेन्दुलकर है। सचिन जब 3 साल के थे तब से ही उनके अन्दर क्रिकेट का जुनून पैदा हो गया था, और उन्होंने अपने लक्ष्य क्रिकेट तक पहुँचने के लिए तैयारी शुरू कर दी। जब उनसे यह पूँछा जाता था कि तुम आगे चलकर क्या बनोगे तो उनके हृदय से बस एक ही आवाज दूसरों के कानों में गूँजती थी वह बात है मैं आगे चलकर अपने देश को विश्व में नम्बर 1 का ताप पहनाऊँगा। वह शुरू से ही अनुशासन में रहते थे।

सचिन का प्रारम्भिक जीवन

जब उनकी उम्र 10 साल की थी तब वह रोज सुबह 2 या 3 बजे के बीच में जग जाते थे और सबुह उठकर थोड़ा फ्रेस होकर टहलते थे और 5 बजे से 7 बजे तक क्रिकेट का अभ्यास करते थे यही उनका प्रतिदिन का नियम था फिर वह अपने स्कूल जाते थे और जब विद्यालय का अवकाश होने के बाद 3 से 5 बजे तक जमकर अभ्यास करते थे और जब वह 12 वर्ष की आयु में हुए तब वह अपने स्कूल की तरफ से मैच खेलने दूसरे स्कूल गये। जब इनकी बारी मैच में आयी तो इन्होंने इतने अनुशासन और धैर्य के साथ प्रतिभा का संचालन किया कि वहाँ बैठे अतिथि ने भी उठकर ताली बजाकर उनका स्वागत किया और वह मैच खेलकर वापस आये तो वहाँ बैठे लोगों ने उन्हें अपने गले लगा लिया। फिर धीरे–धीरे उम्र बढ़ती गई तो उनके अन्दर और जुनून दिखने लगा। फिर यह अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए मुम्बई की तरफ से खेले उसमें भी इन्होंने धैर्य पूर्वक अच्छा प्रदर्शन किया। इसलिए उन्हे अन्तर राष्ट्रीय क्रिकेट टीम में 16 वर्ष की आयु में खेलने का मौका मिला।

सचिन की उपलब्धियाँ

सचिन को क्रिकेट का भगवान उनके रिकार्ड बनाते हैं। सचिन ने एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट में 463 मैच खेले हैं जिसमें इन्होंने 18625 रन बनाये तथा 44.63 की इस्ट्राइक रेट से बनाये हैं। उन्होंने अब तक एकदिवसीय मैच 2016 चौके तथा 199 छक्के, 154 कैच लपके हैं इन्होंने 463 मैचों में 49 शतक तथा 96 अर्द्धशतक शामिल हैं यह बात रही उनके खेलने की अब उनकी गेंदबाजी की बात करते हैं उन्होंने 463 मैचों में 154 विकेट चटकाएँ हैं और उन्होंने दो बार 5–5 विकेट लिये हैं जब बात टेस्ट मैच की करते हैं जिसमें इनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 248 रन है इन्होंने टेस्ट मैचों में 6 बार दोहरे शतक बनाये हैं इनका एकदिवसयी मैचों का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 200 नाबाद रन का है जो 24–8–2010 को ग्वालियर में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बनाये गये थे यह रिकार्ड पूरे विश्व में सचिन ने पहली बार करके दिखाया था यह सब रिकार्ड सचिन के हैं जो दुनिया के नम्बर 1 खिलाड़ी हैं इन्होंने भारतीय टीम के कप्तान का भार सम्भाला लेकिन यह सफल नहीं हो सके। इन्होंने रणजी ट्रॉफी में अपने राज्य मुम्बई को 40 बार खिताब जिताया है यह IPL में मुम्बई इण्डियंस के कप्तान का भार सम्भालते हैं

इन्होंने IPL में भी 90 रन नाबाद इनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

सचिन को 1997 ई0 में डिस्टन क्रिकेट ऑफ द ईयर सम्मान किया गया इसके बाद 1997–98 ई0 में राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार, 1999 ई0 में पद्मश्री से तथा 2008 ई0 में पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया। सचिन ने एकदिवसीय मैचों में 65 मैन ऑफ द मैच प्राप्त हुए हैं। सचिन जब मैदान में खेलने आते हैं तो वहाँ बैठे हजारों दर्शक उनका खड़े होकर सम्मान करते हैं जब वह मैदान में खेलते हैं तो उनके अनुशासन तथा धैर्य को देखते बनता है। वह अब तक 4 विश्वकप खेलने वाले विश्व के नम्बर 1 खिलाड़ी हैं, उन्होंने 2003 विश्वकप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करके अपनी टीम को फाइनल तक पहुँचाया और सचिन ने उस विश्वकप में सबसे अधिक रन बनाकर सोने का बैट हासिल किया लेकिन वह जब भी कोई बड़ा या छोटा मैच जीतते हैं या फिर हार जाते हैं लेकिन उसमें उत्साह बराबर रहता है, उनके जीवन का एक ही सपना था कि मैं एक बार विश्वकप अपने देश को जरुर जिताऊँगा। जिसका हौसला बुलन्द होता है उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती है यहीं उन्होंने 2012 विश्वकप में कर दिखाया। उन्होंने विश्वकप को जिताया और अपने सपने को साकार किया इसमें इन्होंने दूसरे नम्बर पर सर्वाधिक रन बनाये जिसमें इनके 2 शतक और 3 अर्द्धशतक शामिल थे उन्होंने शतक ही नहीं शतकों का महाशतक बनाया है उनका आखिरी शतक बांग्लादेश के खिलाफ ढाका में 114 रन बनाये। इसके बाद सचिन ने 24 दिसम्बर 2012 को एकद्विवसीय मैच को अलविदा कह दिया।

"इसीलिए सचिन को क्रिकेट का भगवान कहा जाता है।"

❀ ❀ ❀

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
नास्तित्युद्यमं समं मित्रं यं कृत्वा न सीदति।।

मनुष्यों के शरीर में सबसे बड़ा शत्रु आलस्य है। परिश्रम के समान कोई अच्छा मित्र नहीं है। जिसको कर के कोई भी दुःख नहीं पाता है।

अप्रियाण्यापि पथ्यानि ये वदन्ति नृणामिह।
त एव सुहृदः प्रोक्ता अन्ये स्युर्नामधारकाः।।

इस लोक में जो मनुष्य अप्रिय लगने वाले (परन्तु) हितकर वचन कहते हैं वे ही सच्चे मित्र कहे जाते हैं – और लोग तो नाममात्र के मित्र होते हैं।

राष्ट्रीय एकता

गोविन्द सचान
दशम 'ख'

रूपरेखा –

1. प्रस्तावना
2. राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय
3. भारत में अनेकता के विविध रुप
4. राष्ट्रीय एकता का आधार
5. राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता
6. राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधाएँ
7. राष्ट्रीय एकता के सहायक तत्व

प्रस्तावना –

राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय : –

एकता एक भावात्मक शब्द है जिसका अर्थ है – 'एक होने का भाव' इस प्रकार 'राष्ट्रीय एकता' का भाव है – देश का सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक और साहित्यिक दृष्टि से एक होना। इन दृष्टिकोणों से भारत में राष्ट्रीय एकता दृष्टिगोचर होती है। किन्तु बाह्य रुप से दिखाई देने वाली इस अनेकता के मूल में वैचारिक एकता निहित है। जिस व्यक्ति को अपने राष्ट्रीय गौरव पर अभिमान नहीं होता, वह मनुष्य नहीं है –

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नरपशु है निरा और मृतक समान है।।

भारत में अनेकता के विविध रुप –

भारत एक विशाल देश है उसमें अनेकता होनी जरुरी है भारत में अनेक धर्म है तथा भिन्न–भिन्न धर्मों के लोग निवास करते हैं धर्म के क्षेत्र में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, जैन, बौद्ध, पारसी इत्यादि धर्मों के लोग निवास करते हैं इतना ही नहीं, बल्की एक–एक धर्म में भी कई प्रकार के अन्तर हैं। यदि हम सामाजिक, दृष्टि से देखें तो हमारे देश में कई जातियाँ, उपजातियाँ नीच जाति तथा उच्च जाति के लोग भी निवास करते हैं भारत में अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग भाषाओं जैसे – हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, उर्दू इत्यादि भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। भारत में अलग–अलग राज्यों में विभिन्न प्रकार का खान–पान, रहन–सहन होता है।

कोस–कोस पर पानी बदले।
चार कोस पर बानी।।

राष्ट्रीय एकता का आधार –

हमारे देश की एकता के आधार दर्शन और साहित्य हैं। ये सभी प्रकार की विभिन्नताओं और

असमानताओं को समाप्त करने वाले हैं। भारतीय दर्शन समानता का पक्ष पोषक है। यह किसी एक भाषा में नहीं लिखा गया है। अपितु यह देश की विभिन्न भाषाओं में लिखा गया है इसी प्रकार हमारे देश का साहित्य भी विभिन्न क्षेत्र के निवासियों द्वारा लिखे जाने के बावजूद क्षेत्रवादी तथा प्रान्तवादी भावों को उत्पन्न नहीं करता है। वरन् सबके लिए भाई–चारे, मेल–मिलाप और सद्भावना का सन्देश देता है।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता –

राष्ट्रीय एकता जोश, जज्बा तथा जुनून का वह पुलिन्दा है जिसके कारण आज हमारा देश जीवित है। देश की आन्तरिक सुरक्षा तथा देश के कार्यक्रमों को सुचारु रूप से चलाने के लिए राष्ट्रीय एकता जरुरी है। भारत के सज्जन पुरुषों ने सभी पुरुषों को एक समान माना है और वह मनुष्यों को एक सूत्र में बाँधने के पक्षधर रहे हैं।

अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब वन्दे।
एक नूर ते सब उपज्या, कौन भले कौन मन्दे।।

राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधक तत्त्व –

राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्व निम्न इस प्रकार हैं –

(क) **साम्प्रदायिकता** – संसार में बहुत सी बातें हैं उनमें से कई समान हैं। जैसे – प्रेम, सेवा, परोपकार, सच्चाई, समता, नैतिकता, पवित्रता, अहिंसा आदि। सच्चा धर्म कभी भी दूसरे धर्म को घृणा करना नहीं सिखाता है। वह तो सभी से प्रेम करना, सहायता करना तथा सभी को समान समझना सिखाता है।

(ख) **भाषावाद** – भारत में अनेक प्रकार की भाषाएँ प्रचलित हैं। जैसे – हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत इत्यादि। प्रत्येक व्यक्ति अपनी–अपनी मातृभाषा को श्रेष्ठ समझता है। फलतः द्वेष और ईर्ष्या का प्रचार होता है जिससे हमारी राष्ट्रीय एकता को खतरा होता है।

(ग) **जातिवाद** – पुराने काल में जातिवादी स्वरुप में जो कट्टरता आयी थी, उसने सभी व्यक्तियों में विद्वेष और घृणा का भाव विकसित कर दिया था।

राष्ट्रीय एकता के सहायक तत्त्व –

वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्रीय एकता को सुदृण करने के लिए निम्न तत्व हैं –

(क) **सर्वधर्म सम्भाव** – विभिन्न धर्मों में जिनती भी बातें हैं यदि उनकी तुलना अन्य धर्मों से की जाए तो उनमें अद्भुत समानता दिखाई देती है। अतः हमें सभी धर्मों का आदर एवं सम्मान करना चाहिए। किसी धर्म को ऊँचा या नीचा दिखाने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

(ख) **शिक्षा का प्रसार** – छोटी–छोटी व्यक्तिगत ईर्ष्या एवं विद्वेष की भावना देश को कमजोर बनाती हैं इसलिए हमें आने वाली पीढ़ियों में शिक्षा का अधिकाधिक प्रसार करना चाहिए। जिससे उनमें विद्वेष एवं ईर्ष्या की भावनाएँ उत्पन्न न हो।

राष्ट्रीय एकता

अंकित गुप्त
दशम 'ख'

राष्ट्रीय एकता का अभिप्रायः है कि "समाज में रहने वाले लोग जो चाहे जिस धर्म, को मानने वाले हों, चाहे जिस भाषा का प्रयोग करते हों, चाहे जिस प्रदेश के वासी हों सभी में एक राष्ट्र भारत के निवासी होने का गर्व हो, और सभी बिना किसी भेदभाव के राष्ट्रीय उन्नति में संलग्न हों।" राष्ट्रीय एकता तभी सम्भव हो सकती है जब सभी राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत हों।

यद्यपि भारत एक विविधताओं का देश है। यहाँ विविधता के सर्वत्र दर्शन होते हैं उदाहरण के लिये जहाँ एक ओर लेह में 10 सेमी. से भी कम वर्षा होती है तो दूसरी ओर चेरापूँजी में 1400 सेमी0 से भी अधिक वर्षा होती है। भारत में भाषायी विविधता, मानसूनी विविधता, खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा में भी विविधता पाई जाती है। इसी भाव से प्रेरित होकर भारत रत्न से सम्मानित डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है –

"कोस–कोस में पानी बदले
चार कोस में बानी।।"

भारत में तो धर्म जैसा पवित्र क्षेत्र भी इस अनेकता से अछूता नहीं रह गया है। इन सभी विविधताओं के होते हुये अनेकता में एकता। हमारी विशेषता है। यही कारण है कि संविधान द्वारा 22 क्षेत्रीय भाषाओं को मान्यता प्राप्त है परन्तु 'हिन्दी' को राष्ट्रभाषा के रूप में नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदेश विशेष की नागरिकता न देकर एक राष्ट्र भारत की नागरिकता दी गई है। हमारे पूर्वजों ने भी राष्ट्रीय एकता के लिये अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया है। शिवाजी ने मराठों में राष्ट्रीय एकता की भावना भरकर औरंगजेब जैसे मुगलों को लोहे के चने चबवा दिये थे। गांधी जी ने एकता की भावना को प्रसारित करने के लिये निम्न वर्ग के लोगों के लिये हरिजन शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ है 'ईश्वर के लोग'। राष्ट्रीय एकता के कारण ही भारत को आजादी मिली।

आज का परिदृश्य हम देखें तो हमें राष्ट्रीय एकता का अभाव सर्वत्र दिखाई देता है। राष्ट्रीयता की भावना मानो इसका कोई उपयोग ही नहीं है। यही कारण है 26/11 जैसे हमले को आतंकवादी अंजाम देकर चले जाते हैं। ये तभी सम्भव हो सकता है जब कोई आन्तरिक नीतियों को चन्द रुपयों के लिये देश विरोधी तत्त्वों को बता देता है। इसका जीता जागता उदाहरण है कि हाल में पुंच्छ में दो भारतीय सैनिकों की हत्या होना। अगर हम आपसे पूँछे कि अमेरिका में 2001 में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर में हमले के बाद क्यों हमला नहीं हुआ तो इसका मुख्य कारण है कि वहाँ के नागरिक राष्ट्रीय एकता से परिपूर्ण हैं।

राष्ट्रीय एकता में अभाव आज भारत की बड़ी समस्याओं में एक है लोग 'मैं' की परिधि तक ही सीमित हैं। विश्व बन्धुत्व की भावना मानो विलुप्त ही हो गई हो। हमें इस समस्या से निपटने के लिये

एकजुट होकर कार्यरत होना चाहिये

राष्ट्रीय एकता के प्रचार–प्रसार के उपाय –

1. विद्यालय स्तर पर इस विषय से सम्बन्धित शिक्षा दी जानी चाहिये ताकि विद्यार्थी देश की एकता को बनाये रखने के महत्त्व को समझे क्योंकि वही देश की अग्रिम पीढ़ी है।
2. लोग साम्प्रदायिकता की भावना से मुक्त होकर, राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत हों।
3. पत्र–पत्रिकाओं, समाचार–पत्रों में समय–समय पर इस विषय पर लेख निकलने चाहिये ताकि लोगों के मन में इस भावना का विकास हो।
4. प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री आदि को समय–समय पर उद्‌बोधन के माध्यम से जनता को प्रेरित करना चाहिये।
5. विद्यालय स्तर पर इस विषय पर वाद–विवाद, निबन्ध लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन होना चाहिये।
6. राष्ट्रीय एकता विरोधी तत्त्व जैसे आतंकवाद, नक्सलवाद आदि के विरूद्ध सरकार द्वारा कड़े नियम–कानून बनाने चाहिये।
7. सर्वधर्मभाव, हिन्दी का प्रचार–प्रसार, शिक्षा का प्रसार होना चाहिये।

किसी देश के विकास एवं उन्नति में राष्ट्रीय एकता अत्यन्त आवश्यक है। इसके बिना एक देश की तुलना बिना ब्रेक की गाड़ी से की जा सकती है। सर्वधर्मसमभाव, शिक्षा का प्रसार, राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार से हम राष्ट्रीय एकता में वृद्धि कर सकते हैं। प्रारम्भ से हमारे देश की विशेषता रही है "अनेकता में एकता" इस भावना को अपने दिल में बनाये रखना हमारा प्रमुख कर्तव्य है। भारतीय नगारिकों के मन में इस भावना का संचार कूट–कूट कर भरा होना चाहिये –

"हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं।
रंग रूप वेश–भाषा चाहे अनेक हों।।"।

❁ ❁ ❁

जीवनमात्र का स्वरूप चिन्मय सत्तामात्र है। वह सत्ता सत्–रूप, चित्–रूप और आनन्द–रूप है। वह सत्ता नित्य–निरन्तर ज्यों–की–त्यों निर्विकार, असंग रहती है। इस स्वरूप को अर्थात् अपने–आपको जब मनुष्य भूल जाता है, तब उसमें देहाभिमान उत्पन्न हो जाता है अर्थात् वह अपने को शरीर मान लेता है। **शरीर से माना हुआ यह सम्बन्ध तीन प्रकार का होता है –**
1. मैं शरीर हूँ, 2. शरीर मेरा है और 3. शरीर मेरे लिए है।

राष्ट्रीय एकता

संतोष कुमार गुप्त
दशम 'ख'

प्रस्तावना –

राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय एक होना है। राष्ट्रीय एकता हमारे देश को एक सूत्र में बाँधकर प्रगति के मार्ग पर अग्रसित करती है।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता –

राष्ट्र की आन्तरिक शान्ति, सुव्यवस्था और बाहरी दुश्मनों से सुरक्षा आदि के लिए राष्ट्रीय एकता अत्यन्त आवश्यक है। यदि हम भारतवासी किसी प्रकार छिन्न–भिन्न हो गये तो अन्य देश हमारी पारस्परिक फूट देखकर हमारी स्वतंत्रता को हड़पने का प्रयास करेंगे 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में बोलते हुए हमारी तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने कहा था "जब–जब भी हम असंगठित हुए हमें आर्थिक और राजनैतिक रूप में इसकी कीमत चूकानी पड़ी। जब–जब भी विचारों में संकीर्णता आई, आपस में झगड़े हुए। जब भी नये विचारों से अपना मुख मोडा, हानि ही हुई और हम विदेशी शासन के आधीन हो गए।"

एकता में बाधक तत्त्व –

हमारी राष्ट्रीय एकता में बाधक अनेक तत्त्व हैं जो देश की रक्षा के लिए बुरे संकेत हैं। जिन्हें हमें अतिशीघ्र दूर करना चाहिए नहीं तो देश प्रगति के मार्ग से दूर हो जायेगा।

जब–जब हमारी एकता भंग हुई तब–तब हमारी सुरक्षा अर्थात् भारत माता की आत्मा पर हमला हुआ। देश का विभाजन, पंजाब का आतंकवाद कश्मीर की समस्या, दिल्ली और मुम्बई के आतंकवादी हमलों के लिए हमारे वैचारिक मतभेद अर्थात् एकता की दरार ही कहीं–न–कहीं जिम्मेदार रही है। यदि हमें अपनी सुरक्षा को दृढ़ करना है तो हमें राष्ट्रीय एकता को विस्तृत अर्थ में ग्रहण करके उसके पोषण का भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

राष्ट्रीय एकता की भावना का अर्थ मात्र यह नहीं है कि हम एक राष्ट्र से सम्बद्ध हैं। एकता के लिए एक–दूसरे के प्रति भाई चारे की भावना आवश्यक है। स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात् हमने सोचा था कि पारस्परिक भेदभाव की खाई पट जाएगी किन्तु साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता, जातीयता, अज्ञानता और भाषागत अनेकता ने अब तक देश को अक्रान्त किया है। अतः राष्ट्रीय एकता को छिन्न–भिन्न करने वाले इन कारणों को जानना अत्यन्त आवश्यक है जिससे उनको दूर करने का पूरा–पूरा प्रयास किया जा सके। इन कारणों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

साम्प्रदायिकता –

राष्ट्रीय एकता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा साम्प्रदायिकता की भावना है। साम्प्रदायिकता मानव–मानव में फूट डालती है। दो दोस्त के बीच घृणा और भेद की दीवार खडी करती है और अन्त में समाज के टुकड़े कर देती है। दुर्भाग्य से इस रोग को जितना खत्म करने का प्रयास किया गया, यह रोग उतना ही विषाक्त हो गया।

यदि राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रखना है तो साम्प्रदायिक विद्वेष, स्पर्द्धा, ईर्ष्या आदि राष्ट्र विरोधी भावों को अपने मन से दूर रखना होगा और परस्पर साम्प्रदायिक सद्भाव जाग्रत करना होगा।

''कोस–कोस में पानी बदले
चार कोस में बानी।।''

एकता का मूलमंत्र –

हिन्दू–मुस्लिम सिक्ख–ईसाई, आपस में सब भाई–भाई का नारा हमारी राष्ट्रीय अखण्डता का मूल मंत्र है।

भाषागत विवाद –

भारत बहुभाषी राष्ट्र है। विभिन्न प्रान्तों में अलग–अलग बोलियां बोली जाती हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा को श्रेष्ठ और उस भाषा के साहित्य को उत्कृष्ट मानता है। इस आधार पर भाषागत विवाद खड़े हो जाते हैं और राष्ट्र की अखण्डता भंग होने के खतरे बढ़ जाते हैं।

राष्ट्रीय एकता में सहायक तत्त्व –

राष्ट्रीय एकता को भंग होने से रोकने के लिए संविधान में कुछ ऐसे तत्त्व हैं जो राष्ट्रीय एकता में सहायक हैं जैसे – राष्ट्रीय झण्डा, राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय भाषा, एकल नागरिकता, सर्वधर्म समभाव की भावन, शिक्षा का प्रसार, हित की भावना।

राष्ट्रीय एकता और हमारे प्रयास –

हमारे देश के विचारक, साहित्यकार, दार्शनिकों ने बहुत प्रयास किए। इसके लिए सरकार ने लाहौर बस, यात्रा ढाका बस यात्रा द्वारा क्रमशः पाकिस्तान व बाग्लादेश से अपने सम्बन्धों का सुधार किया।

उपसंहार –

आज जबकि विकास के साधन बढ़ते जा रहे है और भौगोलिक दूरियाँ कम होती जा रही हैं फिर भी आदमी–आदमी के बीच दूरी बढ़ती जा रही है।

साधनों की मुट्ठियों में धरतियाँ सिमटी हुई और फिर भी फासला चारो तरफ।

आस्था का मेला कुंभ

महेश सोनी
दशम 'ख'

प्रस्तावना –

आस्था का मेला कुंभ हमारी भारतीय मूल की संस्कृति की पहचान, पौराणिक महत्त्व, प्राचीन देवों की नगरी व प्रयागराज में कुंभ मेले व उज्जैन, नासिक, हरिद्वार में कुंभ का आयोजन होता है।

आस्था का मेला कुंभ का वर्णन –

आस्था का मेला कुंभ का प्राचीन युग से ही महत्त्व है कुंभ मेला प्रत्येक छः साल के अन्तराल में अर्धकुंभ व 12 साल के अन्तराल पर महाकुंभ का आयोजन होता है। हमारी भारतीय संस्कृति में मान्यता है कि जब देवता अमृत कलश लेकर भाग रहे थे तो उज्जैन, नासिक, हरिद्वार व प्रयागराज में अमृत की कुछ बूँदे गिर गयी तभी से यहाँ कुंभ का आयोजन होने लगा। भारतीय इतिहास में भी कुंभ का वर्णन मिलता है एक बार सम्राट हर्षवर्धन यहाँ पर आये और इन्होंने अपने कपड़े तक दान में दे दिये। ऐसी मान्यता है कि कुंभ मेले में स्नान करने से व्यक्ति के बुरे कर्म धुल जाते है। आस्था का मेला कुंभ 2013 में 13 जनवरी से इलाहाबाद में शुरू हुआ। अभी भी इस महाकुंभ में स्नान कर रहे हैं। इस मेले में सबसे पहले नागा बाबा स्नान करते हैं और इन बाबाओं के अखाड़े भी होते है ये अपने शरीर 16 श्रृंगार करते जैसे कड़ा, राख, चिमटा, जटा, रुद्राक्ष की माला धारण करना आदि। इस महाकुंभ में लाखो की संख्या में देश, विदेश के पर्यटक पवित्र नदी गंगा में स्नान करते हैं। इलाहाबाद में प्रवेश करते ही विभिन्न बैनर, राजनेताओं के चित्र, साधु संन्यासी के चित्र देखने को मिलते हैं। सरकार की ओर से इस मेले में कैंप, स्वास्थ्य सुविधायें व भोजन की व्यवस्था की जाती है। सरकार द्वारा महाकुम्भों में अरबों रुपये की संपत्ति लगा दी जाती है। अनेक लोग, संन्यासी यहाँ आकर वचन देते हैं कि हम गंगा को दूषित नहीं करेगे लेकिन ये लोग पॉलीथीन, प्लास्टिक व अन्य कई प्रकार से गंदा करते हैं। तीर्थो के राजा प्रयागराज में इस महाकुंभ के आयोजन से सारे शहर में झाँकियाँ, नागा बाबाओं की कतार की प्रदर्शनी निकाली जाती है। अनेक राजनैतिक लोग यहाँ आकर संदेश देते है कि गंगा को प्रदूषण से बचाना चाहिए लेकिन यही राजनेता उद्योगपतियों से पैसा लेकर अपने संदेश खुद भूलाते तो ही है साथ में इन्ही की लापरवाहियों से उद्योगपति कारखाने सीवर से गंदा पानी निकालते हैं और नदियों को गंदा करवाने में अहम! भूमिका निभाते हैं और आस्था के मेले कुंभ में आकर अपनी सरकार को बनाये रखने के लिए जनता से झूठी योजनाएं बताकर और वोट बैंक की राजनीति से जनता से वोट लेने की कोशिश करते हैं और जनता भी मूर्ख बनकर जाति–पाति, भेदभाव आदि को आधार मानकर वोट देने में समर्थ हो जाती है। जब कुंभ मेले का आयोजन होता है तो इसकी तैयारियाँ कई महीने से शुरु हो जाती है। जगह–जगह पंडाल, यात्रियों की सुविधाओं के लिए मेला स्पेशल ट्रेनों की व्यवस्था की जाती है। मेले का रात का दृश्य बहुत लुभावना होता है। चारो तरफ रोशनी व गंगा नदी की आरती बहुत दर्शनीय होती है। रात में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इस महाकुंभ में स्नान के लिए लोग स्वतः ही खिचें चले आते हैं। ह्वेनसांग ने अपनी पुस्तक में भी कुंभ मेले का बखूबी वर्णन किया। आस्था का मेला कुंभ हमारे देश के अंदर जुनून और जोश प्रचार करता है।

इस कुंभ में जनता ही नहीं बल्कि पूर्व राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद व इंग्लैण्ड के जार्ज पंचम ने भी स्नान किया। हिन्दू लोगों की आस्था, भाई चारा व विश्वास का प्रतीक है कुंभ मेला। कुंभ मेलों का मुगल सम्राट अकबर ने भी इसका आयोजन कराया था। कुंभ मेला भारतीय संस्कृति की पहचान व श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र है। इस कारण श्रद्धालु भी यहाँ करोड़ों की संख्या में आते हैं और यहाँ आकर अपनी मातृभूमि व प्राकृतिक सौन्दर्य के गौरव का अनुभव करते हैं। परन्तु कुछ अराजक तत्त्व कुंभ मेले में गंदगी ही नहीं फैलाते बल्कि दंगों को भी भड़काते हैं। हमारी आस्था तो कुंभ मेले जाकर मन व आत्मा की शांति के लिए अपनी श्रद्धा बढ़ाना है।

उपसंहार –

आस्था का मेला कुंभ हमारी संस्कृति का ही नहीं बल्कि जीवन का भी आधार है। आस्था के मेले में 13 जनवरी 2013 से इस वर्ष महाकुंभ में करोड़ो की संख्या में लोगो ने स्नान करके अपनी मातृभूमि के प्रति समर्पण भाव व निष्ठा की भावना जगायी। आस्था का मेले महाकुंभ के द्वारा धार्मिक साहिष्णुता, राष्ट्रीय एकता का विकास होता है। आस्था के मेले का मुख्य निष्कर्ष जन कल्याण की भावना को प्रेरित करना है।

❁ ❁ ❁

हे जग के करतार तेरी कहा अस्तुति कीजै।
तू ही एक अनेक भयो है, अपनी इच्छा धार।।
तू ही सिरजै तू ही पालै, तू ही करै सँहार।
जित देखूँ तित तू–ही–तू है, तेरा रूप अपार।।
तू ही राम, नारायण तू ही, तू ही कृष्ण मुरार।
साधौं की रक्षाके कारण, युग युग ले औतार।।
तू ही आदि अरु मध्य तुही है, अन्त तेरा उजियार।
दानव देव तुही सूँ प्रकटे, तीन लोक विस्तार।।
जल थलमें व्यापक है तू ही, घट–घट बोलनहार।
तो बिन और कौन है ऐसो, जासों करों पुकार।।
तू ही चतुर शिरोमणि है प्रभु, तू ही पतित उधार।
चरणदास शुकदेव तुही है, जीवन प्राण अधार।।

सीमा पार से आतंकवाद

करन गुप्ता
एकादश 'क'

रूपरेखा –

1. प्रस्तावना
2. आतंकवाद : कारण एवं प्रभाव
3. आतंकवाद पर नियंत्रण के उपाय
4. उपसंहार

प्रस्तावना –

आतंकवाद का अर्थ वाद–विवाद, जन हानि व लोगों को भड़काना नहीं है बल्कि एक ऐसा वातावरण उत्पन्न करना जिससे समाज में पारस्परिक द्वेष, कुण्ठा व भय हो। आज हमारे देश में आतंकवाद एक जटिल समस्या बन गई है, इसका प्रभाव न केवल हमारे देश पर बल्कि हमारे पारस्परिक सौहार्द, परस्पर विश्वास व मुख्यतः हमारी सभ्यता व संस्कृति पर पड़ता है। आतंकवाद किसी एक देश की समस्या नहीं बल्कि यह आज एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बनकर सामने आयी है। आतंकवाद ठीक उसी बीमारी की तरह है जो एक बार किसी व्यक्ति को पकड़ लेती है और यदि उसका इलाज सही समय पर न किया जाए तो उसके कारण मृत्यु भी हो सकती है। आतंकवाद ने आज ठीक उसी बीमारी का रूप ले लिया है। हमारे देश को यह धीरे–धीरे खाता जा रहा है। अभी हाल ही में हुए मुम्बई हमले ने सारे देश को भय से सहमा दिया। यह आंतकवाद का काला प्रकोप नहीं तो और क्या है? आज अगर किसी स्थान पर अत्याचार होता है तो वह भी आतंकवाद है, अगर किसी स्थान पर किसी के साथ बदसलूकी, लूटपाट आदि होता है तो वह भी आतंकवाद का एक भाग है आतंकवाद ने जो स्थान आज हमारे देश में बनाया है उसका प्रभाव हमें आज दिखाई तो पड़ ही रहा है साथ ही अगर इसको नियन्त्रण में न किया गया तो यह भी भ्रष्टाचार, महँगाई व देश की अन्य आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं की भाँति एक आपदायिक वातावरण को जन्म देकर सम्पूर्ण देश को सदा–सदा के लिए क्रूरता के अन्धकार में डुबो देगी।

आतंकवाद : कारण एवं प्रभाव –

आतंकवाद का कारण कोई और नहीं बल्कि हम स्वयं है आज अगर कोई राजनेता कोई गलत निर्णय लेता है तो उसका मुख्य कारण हम स्वयं है क्योंकि उसको स्वयं हमने चुना है। हमारे देश में लोकतंत्र है जो भी होता है देश की जनता के कारण होता है। आज भारत का हर पाँचवा व्यक्ति रातों रात करोड़पति बनना चाहता है बस इसी बात का फायदा अन्य देश हमसे उठाते है। आज भारत को स्वतंत्र हुए 70 साल भी नहीं हुए कि यह फिर से परतंत्रता की बेंड़ियों में बँधने की स्थिति में है। आतंकवाद का जन्म आज के कुछ ऐसे व्यक्तियों के कारण होता है जो अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे हुए हैं उन्हें अपने देश, अपनी स्वतंत्रता की सीमाओं की कोई चिंता नहीं। भ्रष्टाचारियों ने तो आतंकवाद की जननी होने का कर्त्तव्य निभाने का निर्णय किया है। वे ही ऐसी सामाजिक कुरीतियों को

जन्म देकर सामाजिक वातावरण में पनपने के लिए छोड़ देते हैं आतंकवाद के मुख्य कारण निम्न हैं –

आपसी मतभेद व जातिगत कुरीतियाँ –

आज हमारे समाज में अन्ध विश्वास ज्यादा तो नहीं है परन्तु आपसी जाति भेदभाव, धर्मान्धता, छुआछूत ये भी आतंकवाद को जन्म देने के मुख्य कारण हैं। आज अगर किसी को समाज से अलग माना जाता है तो उसके मन में समाज के प्रति कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है तथा वह फिर आतंकवाद की शरण लेता हैं आतंक का वातावरण बनाने में हमारे समाज का बहुत बड़ा योगदान है। आज अगर आतंकवाद को पालने वाला कोई है तो वो हैं हमारे राजनेता वे ही जिनको हमारे देश की बागडोर दी गयी है,वे ही आज हमारे देश को पराधीन करवाना चाहते हैं। अतः हमें इसके प्रति जागरूक होना पड़ेगा।

महँगाई –

आज अगर किसी को सभी ऐश व आराम मिल रहा है तो कोई ऐसा भी है जिसको दो वक्त की रोटी नसीब नहीं, तो उसको हम आतंकवाद का एक हिस्सा बनने के लिए मजबूर कर रहे हैं क्योंकि आज कोई भी आदमी भूखों नहीं मरना चाहता, वह ऐन केन प्रकारेण अपना पेट भरने की कोशिश करेगा तथा उसे आतंकवाद की शरण लेनी पड़ेगी। आज महँगाई के कारण हमारे देश की स्थिति इतनी बिगड चुकी है कि आज कोई आम आदमी अपने घर की सभी उपलब्धियाँ नहीं पूर्ण कर पा रहा है तो ऐसे में आतंक के वातावरण का पनपना निश्चित है। क्योंकि आदमी जब एक बार अपनी जिंदगी से हार जाता है तो किसी भी मार्ग को चुनने व उस पर चलने के लिए तैयार होता है। आतंकवाद का प्रभाव मुख्यतः हमारे देश की समस्त व्यवस्थाओं मुख्य रूप से आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक व्यवस्थाओं पर पड़ा है।

सामाजिक प्रभाव –

आतंकवाद के कारण लोगों के दिलों में अपने देश के प्रति सोचने व उसके प्रति देशभक्ति में ह्रास होता है क्योंकि जब कोई सामान्य व्यक्ति अपने देश के बारे में सोचता है तो सर्वप्रथम अपने परिवार के कल्याण को ध्यान में लाता है इससे उसके मन में देश के प्रति आस्था घट जाती है तथा समाज में एक प्रकार की कुण्ठा जन्म लेती है जो समस्त जन सामान्य की चेतनाओं को आप्लावित और संकुचित कर देती है। इससे न कि हम पर बल्कि हमारे देश की सामाजिक अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

आर्थिक व राजनीतिक प्रभाव –

आर्थिक रूप से आतंकवाद को नियंत्रित करने में अत्यन्त अर्थ नष्ट होता है जो हमारे देश को अर्थ की ओर कमजोर बना रहा है। अगर कोई कार्य किसी आतंक के दायरे में रहकर किया जाएगा तो निश्चित है कि वह असफल होगा। भारत को आतंकवाद के जन्म देने में राजनीतिक कारणों का भी योगदान है परन्तु इसका प्रभाव पुनः उन्हीं पर पड़ता है। आतंकवाद हमारे देश का कोई अंग नहीं जिसे काटकर फेंक दिया जाए यह तो देश पर छाए काले बादल की तरह है जिसे केवल जन चेतना व मानव जाति की जागरूकता की हवा ही इस देश के वातावरण से दूर भगा सकती है।

आतंकवाद पर नियंत्रण के उपाय –

आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने का सिर्फ एक उपाय है कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर उस क्षमता का विकास करना जिससे वह कम से कम सही गलत की पहचान तो कर सके। आज अगर आतंकवाद का कहर है तो किसके कारण, सिर्फ हमारे देश की जनता की अज्ञानता व अपने कार्य के प्रति निष्ठावान न होने के कारण आज हमारे देश में कोई भी आतंकी आकर आतंक फैलाता है तो हम उसे नहीं रोक पाते, इसका कारण उसके इरादों के प्रति सदैव सावधान रहना होगा। शत्रु देश हमेशा यह घात लगाए बैठे रहता है कि कब हम असावधानी बरतें और वे हम पर आक्रमण कर हम पर अपना प्रभाव स्थापित कर आतंक का वातावरण उत्पन्न कर सकें। इसको पूर्णतः नष्ट करना तो उन्हीं के बस में है जो हमारे देश को सम्पूर्ण नीतियों का संचालन करते है। वे ही देश में सम्पूर्ण नीतियों का संचालन करते हैं। वे ही देश में आतंक को व आतंकियों को शरण देते हैं तथा शरण ही नहीं बल्कि उनका पूरा सहयोग भी करते है। अभी हाल में हुए संसद पर हमले में पूर्णतया हमारे देश के अधिकारियों का हाथ था। वे यह सब इसीलिए करते है क्योंकि धन के लालच में अपने समस्त कर्त्तव्यों व नीति तत्वों को भूल जाते है तथा धन व अन्य उपलब्धियों की लालच में अपना ईमान बेंच अपने देश को गिराने में पूर्णतयः सहयोग देते हैं क्योंकि उन्हें यह नहीं पता होता है कि वे जिस नाव में छेद कर रहे है वे स्वयं भी उसी में सवार हैं। अगर वह नाव डूबी तो इनका डूबना निश्चित है। बस हम इसी भावना का जन–जन तक विकास कर व पारस्परिक एकता के द्वारा आतंकवाद जैसी जटिल समस्या को आसानी से मिटा सकते हैं।

उपसंहार –

आतंकवाद को एक समस्या के रूप में देखा जाए तो यह अत्यन्त विकराल है इसने आज जन–जन के मन में ऐसा वातावरण उत्पन्न कर दिया है जिससे किसी व्यक्ति को मुक्त करना आज अत्यन्त जटिल हो गया है। आज एक ऐसे पैगाम एक ऐसे जोश की जरूरत है जो उस समय था जब देश परतंत्रता की बेड़ियो में बँधा स्वतंत्रता की दुहाई दे रहा था। अगर किसी बीमारी का जन्म होता है तो ईश्वर ने उसका इलाज जरूर बनाया होता है बस जरूरत होती है सही नजर की, जो उसे ढूँढ सके। ठीक उसी प्रकार इस समस्या का भी हल है और उसके द्वारा इससे निजात भी पाया जा सकता है क्योंकि ऐसा कोई देश नहीं, ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ कुछ तो अच्छाईयाँ बुराईयाँ न हों बस उन्हें दूर करने के लिए जरूरत होती है एक ताकत, एक लगन, एक सोच की ऐसी सोच जो जन कल्याण की भावना व अपने देश के प्रति मर–मिटने वाली भावनाओं से ओत–प्रोत हो।

कितना प्राकृतिक है जैव प्लास्टिक

रोहन वर्मा
नवम 'ग'

प्लास्टिक एक ऐसा पदार्थ है जिसे धरती हजम नहीं कर पाती। उत्पादित प्लास्टिक का प्रत्येक टुकड़ा जो अभी भी अस्तित्व में है, वह आगामी सैकड़ों वर्षों तक हमारे साथ ही रहेगा। वातावरण में आने के बाद प्लास्टिक छोटे–छोटे टुकड़ों में बंटकर जहरीले पदार्थों को अपनी ओर आकर्षित करती है और धरती पर हमारे वन्य जीव और समुद्र तक में घुसाकर हमारी जीवन श्रृंखला को दूषित कर देता है। हमारे समुद्र और जल–मार्ग इन छोटे पदार्थो से पटे पड़े हैं और प्रवाह के जरियें ये विश्व के समुद्रों के बीच में स्थित अभिसरण क्षेत्र में जिन्हें 'गीरस'कहा जाता है इकट्ठा हो जाता है इनमें सबसे उल्लेखनीय है 'दि ग्रेट पैसेफिक गारबेज पाथ' अर्थात् प्रशांत महासागर का विशाल कूड़ा क्षेत्र। जहाँ एक ओर समुद्र के बीच स्थित इस विशाल कूड़ा घर के विचार से बहुत से लोग सहमत नहीं हैं। परन्तु यह एक सच्चाई है। इसके अलावा सम्पूर्ण जलक्षेत्र में फैल गये प्लास्टिक को नष्ट करने की कोई उम्मीद ही नजर नहीं आ रही है।

हाँलांकि प्लास्टिक न तो स्वयं हमारे पर्यावरण को नष्ट कर रहा है। और न ही हमारे स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाता है। यह तो हमारा इस्तेमाल करने का तरीका है जो कि विप्लव जैसे हालात पैदा कर रहा है एक ऐसे पदार्थ का जो वातावरण में सैकड़ों वर्षों तक रहने वाला है इस्तेमाल सेकण्ड, मिनट, घण्टे या दिनों तक के हिसाब में नहीं किया जाना चाहिए। जरूरत इस बात की है कि एक ऐसे जटिल पदार्थ का जिसको बनाये जाने वाले फार्मूलों में कोई पारदर्शिता नहीं है और जिसमें जहरीले रसायनों का प्रयोग होता है हमारे पेय पदार्थ और भोजन के सम्पर्क में नहीं आना चाहिए।

प्लास्टिक से होने वाली प्रदूषण की समस्या इसके गलत तरीके से फेंकने भर पैदा नहीं होती बल्कि यह समस्या इसकी लापरवाही पूर्ण बनावट और गैर जिम्मेदार तरीके से इसे फेकनें से बढ़ती जाती है। इसके उत्पादकों द्वारा जिम्मेदारी का ठीक से वहन न करना और इस उत्पाद के जहरीलेपन को लेकर सुरक्षा संबधी लापरवाही पर्यावरण और मानवीय स्वास्थ्य के खिलाफ तूफान खड़े कर रही है जहां एक ओर इसके प्रयोग की व्यापकता ओर मानवीय स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव को लेकर एक समझ तैयार हो रही है वही दूसरी ओर एक ऐसे प्लास्टिक की बात भी जोर पकड़ रही है। जो जैव आधारित हो या जिसे नष्ट किया जा सके। परन्तु वास्तविकता इतनी सहज नहीं है प्लास्टिक जैव आधारित हो या कोई अन्य प्रकार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है, कि हम इसका प्रयोग कैसे करते हैं। अभी यह तय नहीं है, कि नष्ट हो जाने वाला प्लास्टिक सर्वोत्तम विकल्प है या नहीं। लेकिन सर्वप्रथम हमें तय करना होगा कि इस विकल्प का प्रयोग हम किस तरह करेगें। अभी भी कई तरह के नष्ट हो जाने वाले प्लास्टिक मौजूद हैं। इन्हें पुनः इस्तेमाल भी किया जा सकता है। ये है लम्बी अवधि तक चलने वाले बैग, बोतले, कटलरी का सामान आदि एवं कई इसके वैकल्पिक पदार्थ जैसे धातु शीशा या कागज उपलब्ध हैं! वर्तमान में निर्माता अपने उत्पादों के नष्ट होने तक के जिम्मेदार नहीं होते जैसे ही कोई वस्तु कारखाने से बाहर आती है वह कम्पनी की समस्या नहीं रह जाती। अतः हमारे पास ऐसी कोई पद्धति नहीं है कि हम नष्ट हो सकने वाले पदार्थ का व्यवस्थापन किस प्रकार से करेगें। इसके जहरीले

सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि त्रुटिपूर्ण और अप्रभावकारी नियामक प्रक्रिया के चलते यह सुनिश्चित नहीं किया जा सकता कि यह नया बायो–प्लास्टिक भी पारम्परिक प्लास्टिक की तरह जहरीला नहीं होगा और इसमें स्वास्थ्य संबन्धी समस्यायें खड़ी नहीं होंगी। एक बार प्रलचन में आ जाने के बाद इसे प्रतिबधिंत करना टेढ़ी खीर ही साबित होगा।

बायो–प्लास्टिक भी साधारण प्लास्टिक की तरह कृतिम या सिंथेटिक प्लास्टिक ही है इसका निर्माण कार्बन और हाइड्रोजन बजाय तेल के पौधों से किया जा सकता है

"जैव–प्लास्टिक को विकसित करने में हमें सावधानी बरतनी होगी यह एक बहेतर विकल्प साबित होगा शोध के अनुसार जैविक–प्लास्टिक भी पर्यावरण के लिए काफी हानिकारक है समय रहते इस उत्पाद को वास्तकि जैविक–प्लास्टिक बनने से गम्भीर परीक्षणों से गुजरना पड़ेगा।

❀ ❀ ❀

चिड़िया के बच्चे का गीत

दिलीप कुमार
अष्टम 'ग'

सबसे पहले मेरे घर का।
अण्डे जैसा था आकार।।
तब मैं यही समझती थी।
बस इतना सा ही है संसार।।

फिर मेरा घर बना घोंसला।
सूखे तिनकों से तैयार।।
तब मैं यही समझती थी।
बस इतना सा ही है संसार।।

फिर मैं निकल गई शाखों पर।
हरी–भरी थीं जो सुकुमार।।
तब मैं यही समझती थी।
बस इतना सा ही है संसार।।

आखिर जब मैं आसमान में
उड़ी अपने पंख पसार।।
तभी समझ में मेरे आया।
बहुत बड़ा है यह संसार।।

❀ ❀ ❀

भ्रष्टाचार

अक्षांश ओमर
द्वादश 'क'

जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होतें हैं एक खरा और दूसरा खोंटा। ठीक इसी प्रकार सभी के मन में प्रत्येक वस्तु को देखकर दो प्रकार के विचार उठते हैं, पक्ष में या विपक्ष में। उसी प्रकार भ्रष्ट विचार को देखकर किसी के मन में शायद ही पक्ष में विचार उठते होंगे, सब के मन में उसके विरोध में विचार उठते होंगे। भ्रष्टाचार एक गम्भीर समस्या है। सब एक–दूसरे से कहते रहते हैं, पर इसको कम करने का या खत्म करने का कोई उपाय नहीं ढूँढ़ता है, न कोई इसको समाप्त करना चाहता है। भ्रष्टाचार का मतलब है भ्रष्ट आचरण अर्थात् कानून के विरूद्ध अमानवीय व्यवहार। यह इन्सान तब करता है, जब इसे न तो लोकलाज का भय होता है, और न ही उसके अन्दर कोई लज्जा होती है। तभी वह जघन्य से जघन्य पाप कर बैठता है। आजकल भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि सारी दुनिया इस भ्रष्टाचार रूपी सहस्र मुख वाले दानव के अन्दर ऐसे समाती जा रही है जैसे कि कोई इंसान बड़े चाव से प्रकृति का आनन्द ले रहा हो। भ्रष्टाचार जब पहले होता था, तो जो व्यक्ति या नेता भ्रष्टाचारी होता है, उसके पकड़े जाने पर या तो व्यक्ति अपने आप को मौत के हवाले कर देता है या तो अपने पद से त्याग पत्र देकर एक घुटनभरी जिन्दगी को अपनाने को मजबूर होता था। पर हम आज की बात करें तो व्यक्ति के पकड़ जाने पर वह न तो लज्जा करता है, और न ही वह अपने पद का त्याग करता है, कि चलो बाहर का आनन्द भोगने के बाद अब जेल जा रहे हैं वहाँ भी ए०सी० लगी होगी। भ्रष्टाचार सर्वप्रथम राजनीतिक क्षेत्र में प्रारम्भ हुआ, राजनेता इतने भ्रष्टाचारी हो गए हैं कि वे विधान परिषद या राज्य सभा के चुनाव को जीतने के लिए किसी भी हद तक गिर सकते हैं। वह इन चुनावों को जीतने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद नीति का इस्तेमाल करते हैं चुनाव जीतने का प्रयत्न करते हैं चुनाव जीतने के पश्चात वह अपनी मनमानी कर सकते हैं और किसी भी प्रकार से कानून चला सकते हैं। भ्रष्टाचार अपने पाँव धीरे–धीरे पसारते हुए प्रशासनिक क्षेत्र में घुसना प्रारम्भ कर दिया है, और आज की सरकारी नौकरी चाहे वह I.A.S. हो या अध्यापक की हो या कोई प्राइवेट संस्था हो सब इस समय भ्रष्टाचार के रूप में सम्मोहित हो रहे हैं। भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर पहुँचकर शिक्षा रूपी पावन मन्दिर को अपने विकराल तथा जहरीले हाथों से डसता गया। आज शिक्षा के क्षेत्र में इसलिए प्रगति नहीं हो पा रही है क्योंकि यहाँ भी हर तरह के भ्रष्टाचार के कारण मेधावी छात्र अपने हुनर को दिखाने में नकामयाब हो रहे हैं। इसी भ्रष्टाचार के कारण आज पुल बनते हैं, सड़के बनती हैं, कुछ सालों के बाद ये सब टूट जाते हैं इसके लिए सरकार ने अनेक कदम उठाये तो हैं, मगर सरकार खुद भ्रष्ट है। भ्रष्टाचार के बढ़ते स्वरूप को देखकर हमारी ही नहीं सबकी रूह काँप जाती है। आजकल इतना भ्रष्टाचार फैला हुआ है, कि राजनेता खुद ही अपने मुँह से कहते है, कि आजकल तो भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन गया है। भ्रष्टाचार के कारण देश में अमीर और अधिक, अमीर तथा गरीब और अधिक गरीब होता जा रहा है। पर इसके प्रति कोई जागरूक नहीं हो रहा है। मेरे विद्यालय में हुए एक रंगमंचीय नाटक में एक किरदार ने कहा था कि "जितना जिससे बन सके लूट सके सो लूट। मोहन की सरकार में खुली लूट की छूट ये पंक्तियाँ आजकल के नेताओं के प्रति ठीक चरितार्थ होती हैं। भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे की ओर चलता है। बाकी सभी नीचे से ऊपर की आरे चलते हैं। यदि भ्रष्टाचार को देश से मिटाना या भगाना है तो हमारे देश के प्रत्येक छात्र, मनुष्य को देशभक्त होना पड़ेगा और आज हम कसम खायें कि हम आज से कभी भी भ्रष्ट आचरण नहीं करेंगे। यदि लोग ऐसा करने लगे तो मैं यह प्रमाण के साथ कहता हूँ कि हमारे देश को भ्रष्टाचार रूपी दानव से मुक्ति मिल जायेगी।

❀ ❀ ❀

मीडिया पर बंदिश के प्रयास

अभिनव पटेल
एकादश 'क'

प्रस्तावना

यदि हम आधुनिक काल से पुरातन काल की ओर चलें तो हम निष्कर्ष रूप में पायेंगे कि मानव आज उन्नति के उच्चतम शिखर पर चढ़ने कि लिए अति उत्सुक है। इसके लिए सूचनाओं तथा देश के निजी उत्पादों का आदान प्रदान आवश्यक है।

मीडिया अंग्रेजी शब्द मीडियम का पर्याय है। इसका अर्थ है सूचनाओं का आदान–प्रदान। आज इसका रूप व्यापक है। आधुनिक युग में तो मीडिया के बिना जीवन की परिकल्पना नहीं की जा सकती। मोबाइल, लैपटॉप, फैक्स, टेलीफोन, दूरदर्शन आज मानव जीवन में इस प्रकार व्याप्त है कि मानव उनसे अलग होने की कल्पना भी नहीं कर सकता है। वे मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं।

मीडिया क्या है ?

'मीडिया' शब्द का अर्थ है माध्यम। मीडिया एक प्रकार का माध्यम है जो सूचनाओं का आदान–प्रदान करता है तथा साधारण मनुष्य को राजनीति, खेल, मनोरंजन, अर्थव्यवस्था तथा समाज से परिचित कराता है।

मीडिया आज व्यापक रूप से सर्वत्र विश्व ही नहीं अपितु ब्रह्माण्ड में भी व्याप्त है। अंतरिक्ष में उपग्रहों द्वारा सूचनाओं का प्रसारण इसका एक महत्वपूर्ण अंग है। अंतरिक्ष यात्रियों की रेडियो सिग्नलों द्वारा वार्ता भी संभव है।

इंटरनेट का जाल आज सम्पूर्ण विश्व में फैला है। हम दुनिया के किसी भी कोने से अपने देश की खबर ले सकते है। Facebook, twitter, orkut तथा youtube पर हम किसी से संम्पर्क स्थापित कर सकते हैं, किसी से भी बात कर सकते हैं तथा किसी भी सूचना को दृश्य रूप में देख सकते हैं।

परन्तु इंटरनेट के उपयोग से Online अपराधों की संख्या भी बढ़ रही है। आप इसी बात से अनुमान लगा सकते हैं कि अमेरिका तथा यूरोपीयदेशों में प्रतिवर्ष लगभग10 मिलियन डालर कंम्पयूटर द्वारा चोरी कर लिए जाते है। तथा सचना एवं प्रौद्योगिकी के अत्याधुनिक प्रयोगों द्वारा अत्यंत महत्वपूर्ण सूचनाएँ इस प्रकार चोरी हो जाती है। जिस प्रकार आँखों के सामने से धूलभरी आँधी निकल जाती है।

मीडिया पर बंदिश

मीडिया पर बंदिश लगाना तो विश्व की पुरातन परंपरा हो गयी है। अंग्रेंजी शासन काल का प्रेस एक्ट अधिनियम, पत्रकारों की हत्या इसी के कुछ उदाहरण हैं।

मुम्बई में भारत के श्रेष्ठ पत्रकारों में एक ज्योर्तिमय डे की हत्या सिर्फ इसलिए हुई कि वे एक मंत्री द्वारा किए घाटाले पर पड़ी परत हटाना चाहते थे। यदि हम इन कारणों का गहन अध्ययन करें तो हम पायेंगे कि इन सब का मूल कारण भ्रष्टाचार ही है।

स्विस बैंक ने सभी देशों को अपने खाते में जमा उनके धन की सूचनाएँ दी परन्तु भारत ने उन्हें लेने से इन्कार कर सफाई दी कि देश का **वित्त भण्डार गोपनीय रहना चाहिए** जबकि वास्तविकता

में भारतीय घोटाले जो विश्व के महानतम घोटाले कहे जा सकते हैं का सम्पूर्ण धन स्विस बैंक में जमा हैं। आप इसी कथन से अनुमान लगा सकते हैं कि स्विटजरलैण्ड की अर्थव्यवस्था भारतीय धन से चल रही है तथा भारत का हर दूसरा परिवार दरिद्र है। हर दूसरा बच्चा कुपोषण का शिकार है। शिक्षा का अभाव है तथा अपराधिक वृत्तियाँ बढ़ रही हैं।

निवारण

हम सभी चाहते है कि मीडिया का व्यापक तथा सार्थक उपयोग तथा प्रचार प्रसार हो। यदि हम एक उन्नतिशील देश चाहते है तो हमें यथासंभव प्रयास करना होगा।

मीडिया एक माध्यम है जो एक सीमा पर सही है तो कुछ गलत भी। यदि इसके उपयोग हम सकारात्मक दृष्टि से करें तो यह हमारे लिए वरदान है। नकारात्मक दृष्टि से यह वह विनाश पैदा करेगी जिसकी आँधी को रोकना असंभव होगा। भ्रष्टाचार उन्मूलन शिक्षाा का व्यापक प्रचार–प्रसार, साक्षरतादर में वृद्धि, उद्योगों में सुधार तथा बेरोजगारी कम होने पर हम मीडिया का व्यापक उपयोग कर सकते है। अन्यथा नहीं।

मीडिया के दायरे

मीडिया के दायरे हमें स्वयं निर्धारित करने होंगे। यदि हम चाहें तो यह हमारे लिए वरदान है तथा यदि हम चाहें तो हमारे लिये अभिशाप भी बन सकती है।

प्रत्येक वस्तु का सीमित प्रयोग ही आवश्यक है। अतिशय मीडिया दंगे–फसाद कराने में भी योगदान देती है। जो अकल्पनीय हो जाता है। क्योंकि हम अपनी सीमा के बाहर चले जाते हैं। अतः हमें मीडिया के दायरे निर्धारित करने होंगे।

उपसंहार

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि मानव एक सामाजिक प्राणी है जो हर परिस्थिति में रह सकता है। वह सर्वाधिक बृद्धिमान माना जाता है। इसी बुद्धिमत्ता का प्रयोग करकेहमें स्वयं के संसार को अद्वितीय बनाना है। मीडिया तथा मनुष्य का सामंजस्य ही मानव को उन्नति के शिखर पर ले जा सकता है।

❀ ❀ ❀

सुश्रूषा श्रवणं चैव, ग्रहणं धारणं तथा।
ऊहापोहोर्थ विज्ञानं, तत्त्वज्ञानं च धी गुणाः।।

सफलता प्राप्ति के लिए

काजल
सप्तम 'ख'

1. जितना पढ़ो मन लगाकर पढ़ो।
2. सुनना ज्यादा, लेकिन अच्छा सुनना।
3. दान कभी ऐसा मत करना जिससे वह व्यक्ति आलसी हो जाए, दान ऐसा करना जिससे वह मनुष्य महान बन जाए विद्या को दान करना।
4. मजाक उतना करना, जितना दूसरे को पसन्द है।
5. सच बोलना लेकिन, किसी की जान जा रही तो झूठ भी बोलना।
6. दु:ख के समय ईश्वर को जरुर याद रखना लेकिन अगर सुख आ जाए तो उसे भूल मत जाना।
7. आप घर में हों या घर से बाहर, हमेशा शिष्टाचार याद रखना।
8. आप विद्या तो गुरु से ग्रहण करें पर उसका उपयोग अपने विवेक से करें क्योंकि हर जगह गुरु आपके साथ नहीं।
9. लालच करना लेकिन दूसरों की अच्छी आदतें देखकर, उनको ग्रहण करने के लिए लालच जरूर करना।
10. आप ऐसे पथ में चलें जिसमें लक्ष्य प्राप्त हो सकता हो इसके लिए आपको उस पथ में चलने के लिए चाहे कितने ही कष्ट उठाने पड़े।
11. माता–पिता से जिद्द करें तो ऐसी जिद्द जिससे उनके दिल को खुशी हो।
12. आप किसी की भी सेवा करें तो अपना मानकर, न कि पराया मानकर।
13. दोस्त, ऐसा बनाएँ जो जीवन भर आपका साथ दे।
14. दूसरों से झगड़ा करने की कोशिश मत करना, लेकिन अगर भारत माता पुकारे तो जमकर उन दुश्मनों से संघर्ष करना।
15. कम बोलना, लेकिन हमेशा मीठा बोलना।

सचिन का संन्यास

अभिषेक सोनी
सप्तम 'ग'

"सपनों का पीछा कीजिए सपने सच होते हैं। हर किसी को अपने सपनों का पीछा करने के लिए जी–जान लगा देनी चाहिए क्योंकि सपने सच होते हैं।" मैंने वर्ल्ड कप जीतने का सपना देखा था। वर्ल्ड कप जीत मेरी जिंदगी के सबसे गौरवशाली पल हैं। मैं अपने सभी साथियों का शुक्रिया अदा करता हूँ क्योंकि उनके बिना यह संभव नहीं था। मैं अपने आँसुओं पर कंट्रोल नहीं कर सका।

वर्ल्ड कप जीतने के बाद सचिन तेंदुलकर

23 साल। इन सालों में क्या कुछ नहीं बदला। खिलाड़ी बदले, खेल बदला,खेल का अंदाज बदला। मगर जो चीज नही बदली, वह थी सचिन रमेश तेंदुलकर के बल्ले की धमक। इन 23 सालों तक 5 फीट 5 इंच का खिलाड़ी और उसका करीब 3 फीट का बल्ला वनडे क्रिकेट की दुनियाँ पर राज करता रहा। बल्ले से रन निकलते रहे.... और घुंघराले बालों वाला युवा क्रिकेट का भगवान बन गया। आखिरकार 22 साल 91 दिन के अपने कैरियर के बाद 39 वर्षीय सचिन ने 23 दिसंबर 2012 को वनडे क्रिकेट के अलविदा कह दिया। उन्होंने वह सब हासिल किया जो एक क्रिकेटर तमन्ना रखता है और बन बैठे इस खेल के सबसे बड़े खिलाड़ी। सचिन के विशाल कैरियर का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पाकिस्तान के खिलाफ 1989 में जब उन्होंने अपने कैरियर की शुरूआत की तो सात बार के फॉर्मूला वन चैंपियन माइकल शूमाकर ने एक भी एफवन रेस में हिस्सा नहीं लिया था। महान रोजर फेडरर का नाम टेनिस जगत के लिए अंजान था। यहाँ तक की जब 16 साल के सचिन ने क्रिकेट की दुनिया में कदम रखा तो भारत के प्रधानमंत्री मनमाहेन सिंह की वित्त मंत्री के तौर पर उदारी करण की नीति का आना भी बाकी था। समय ने इस ग्रह पर हर किसी की रफ्तार रोकी, मगर उसने एक शख्स को इन सबसे अलग रखा। सचिन के सामने समय भी ठहर सा गया। कई चैंपियंस मिले, कई लीजेंड मिले, लेकिन कभी दूसरा सचिन नहीं मिला। सचिन जब–जब मैदान में उतरे करोड़ों लोगों की उम्मीदों के साथ शुभकामनाएँ भी साथ रहीं। उनकी सफलता पर पूरे देश ने जश्न मनाया और असफलता से उदास हुआ। शुक्रिया, इतना लंबा साथ निभाने के लिए। करोड़ों चेहरों पर खुशियाँ लाने और कभी न मिलने वाली छाप दिलों पर छोड़ने के लिए..... शुक्रिया सचिन।

सचिन का रिकार्ड

- सचिन के नाम वन–डे में सर्वाधिक रन, सर्वाधिक शतक, सर्वाधिक अर्धशतक बनाने का रिकार्ड।
- ग्रेग चैपल (686) के बाद एक सीरीज में सर्वाधिक 673 रन बनाने का रिकार्ड। ये रन सचिन ने 2003 वर्ल्ड कप में बनाए थे।
- एक पारी में सहवाग (219) के बाद सर्वाधिक नाबाद 200 रन बनाने का रिकार्ड।
- एक कैलेंडर वर्ष में सर्वाधिक 1894 रन बनाने का रिकॉर्ड। यह रन सचिन ने 1998 में 34 मैचों में

नौ शतक और सात अर्धशतकों की मदद से बनाए थे।

- एक कैलेंडर वर्ष में सर्वाधिक नौ शतक लगाने का रिकॉर्ड। सचिन ने यह रिकॉर्ड भी 1998 में बनाया था।
- भारत की ओर से किसी एक मैदान पर (शारजाह) सर्वाधिक 1778 रन बनाने का रिकॉर्ड।
- किसी एक टीम के खिलाफ सर्वाधिक शतक (आस्ट्रेलिया)के खिलाफ नौ और श्रीलंका मे खिलाफ आठ) लगाने का रिकार्ड।

❁ ❁ ❁

क्या होती है माँ

प्रीती यादव
सप्तम 'क'

यह परिभाषा कौन बता सकता है कि क्या होती है माँ
चन्द शब्दों में हम नहीं बता सकते हैं कि क्या होती है माँ

साहित्य ग्रन्थों को खोजने पर ही ज्ञात होता है कि क्या होती है माँ
सन्तान की खातिर कई पत्थर पूजने वाली होती है माँ

अनेक कष्टों को सहकर जन्म दात्री होती है माँ
स्वयं गीले पर किन्तु बालक को सूखे पर सुलाने वाली है माँ

बालक के मस्तिष्क में शिक्षा की प्रथम नींव रखने वाली होती है माँ
विद्यादायिनी माँ सरस्वती का रूप होती है माँ

नारी का सर्वसुलभ सरलतम रूप होती है माँ
जीवन के दुखद क्षणों में एकमात्र सहारा होती है माँ

अपने अरमानों की बलि देकर सर्व अरमानों को पूर्ण कराने वाली है माँ
बालक की हर सफलता पर मुदित होने वाली होती है माँ

अप्रत्यक्ष ईश्वर का प्रत्यक्ष स्वरूप होता माँ
तभी तो सबका कथन है ईश्वर से श्रेष्ठ होती है माँ

❁ ❁ ❁

माता-पिता व गुरुजनों की महत्ता

प्रीती कुमारी
सप्तम 'क'

युधिष्ठर ने पूछा

"पितामह! धर्म का रास्ता बहुत बड़ा है और उसकी अनेकों शाखाएँ है। इनमें से किस धर्म को आप सबसे प्रधान एवं विशेष रूप से आचरण में लाने योग्य समझते हैं जिसका अनुष्ठान करके मैं। इहलोक और परलोक में भी धर्म का फल पा सकूँगा।

भीष्म जी ने कहा

मातापित्रोर्गरुणां च पूजा बहुमता मम।
इह युक्ता नरो लोकान् यशश्च महदश्नुते।।

राजन् ! मुझे तो माता–पिता तथा गुरुजनों की पूजा ही अधिक महत्व की वस्तु जान पड़ती है। इस लोक में इस पुण्यकार्य में संलग्न होकर मनुष्य महान यश और श्रेष्ठ लोक पाता है।
(महा भारत, पर्व 108.3)

राजन् ! माता–पिता और गुरुजन जिस काम के लिए आज्ञा दें, उसका पालन करना ही चाहिए। इन तीनों की आज्ञा का कभी उल्लंघन न करें। जिस काम के लिए उनकी आज्ञा हो, वह धर्म ही है, ऐसा निश्चय करना चाहिए। माता–पिता और गुरु–ये ही तीनों लोक हैं ये ही तीनों आश्रम है, ये ही तीनों वेद हैं और ये ही तीनों अग्नियाँ हैं। पिता गार्हपत्य अग्नि, माता दक्षिणाग्नि और गुरु आहवनीयाग्नि हैं। लौकिक अग्नियों से माता, पिता व गुरु, इन त्रिविध अग्नियों का गौरव अधिक है। इन तीनों की सेवा में यदि भूल न करोगे तो तुम तीनों लोकों को जीत लोगे। पिता की सेवा से इस लोक को, माता की सेवा से परलोक को तथा नियमपूर्वक गुरु की सेवा से ब्रह्मलोक को भी लाँघ जाओंगे, इसलिए तुम इसके साथ सदैव अच्छा बर्ताव करो। ऐसा करने से तुम्हें उत्तम यश, परम कल्याण और महान फल देने वाले धर्म की प्राप्ति होगी। इनको भोजन कराने से पहले स्वयं भोजन न करना। इन पर कभी भी कोई दोषारोपण न करना और सदा इनकी सेवा में संलग्न रहना–यही सबसे उत्तम लोक हैं इनसे ही तुम सब कुछ प्राप्त कर लोगे।

सर्वेतस्यादृता लोका यस्यैते त्रय आदृताः
अनादृतास्तु यस्यैते सर्वास्तस्याफलाः क्रियाः।।

जिसने इन तीनों का आदर कर लिया उसके द्वारा सम्पूर्ण लोकों का आदर हो गया और जिसने इनका अनादर कर दिया, उसके सम्पूर्ण शुभ कर्म निफल हो जाते
(महाभारत शांति पर्व 188.12)

जिसने इन तीनों गुरुजनों का सम्मान नहीं किया उसके लिए न यह लोक है न परलोक। उसे *न इस लोक में यश मिलता है और न ही परलोक में सुख। मैं तो सब तरह से शुभ कर्मों का अनुष्ठान*

करके इन गुरुजनों को ही अर्पण कर देता हूँ। इससे उन कर्मों का पुण्य सौ गुना और हजार गुना बढ़ गया है तथा उसी का फल है।

पूजा गुरु की कीजिए, सब पूजा जेहि माँहि।
जब जल सीचै मूल तरु, शाखा पत्र अधाँहि।।

आज का स्टूडेण्ट

संकल्प सिंह सेंगर
सप्तम 'ग'

टैरीलीन की शर्ट पहनकर
टैरीलीन की पैन्ट
पॉकेट में महँगा पेन डालकर
बन गये स्टूडेन्ट।

फोर्थ पीरियड कॉलेज पहुँचे
दो महानुभावों के फ्रैण्ड
कॉलेज से प्रोग्राम बनाकर
पहुँचे रेस्टोरेन्ट।

परीक्षा में एपियर हो गये
ये सब स्टूडेन्ट।

किसी ने पूँछा क्या रिजल्ट
बतलायें पास सेकण्ड
मार्कशीट जब लेकर देखे,
था ट्वेन्टी परसेन्ट,

मुँह लटकाकर घर पहुँचे,
ज्यों तार मिला अर्जेन्ट
घर पर सुनते डाँट
मगर बाहर से है फर्जेन्ट

झूठ समझना मत इनको
ये हैं आज के स्टूडेण्ट।

संवेदनाएँ

दिलीप कुमार
अष्टम 'ग'

जब मैं केंचुआ था
लोगों ने मेरे खंड–खंड कर दिए।
जब मैं पक्षी था
लोगों ने गुलेल चलाकर
घायल कर दिया।
जब मैं पशु था
लोगों ने मुझे कैद कर लिया।
जब मैं पेड़ था
लोगों ने मुझे काट डाला।
आखिर थक हार कर
लुढ़कते–लुढ़कते जब मैं
पत्थर बन गया
हाय आश्चर्य ! लोग मेरी पूजा करने लगे।

❁ ❁ ❁

अगर पेड़ भी चलते होते

रंजन कुमार
अष्टम 'ग'

अगर पेड़ भी चलते होते
कितने मजे हमारे होते
बाँध तने में इनके रस्सी
चाहे जहाँ कहीं ले जाते
धूप सताती अगर अचानक
झट उनके नीच छिप जाते
भूख सताती अगर अचानक
तोड़ मधुर फल उनके खाते
आती कीचड़ बाढ़ कहीं तो
झट उनके ऊपर चढ़ जाते
अगर पेड़ भी चलते होते
कितने मजे हमारे होते।

❁ ❁ ❁

आस्था का संगम कुंभ मेला

रवि प्रताप सिंह
एकादश 'क'

मेला

कुंभ केवल आस्था का संगम ही नहीं है बल्कि यह सामाजिक सरोकारों से जुड़ा हुआ एक महा सम्मेलन भी है। यहाँ पहुँचे हुए श्रद्धालुओं का जन सैलाब अनुशासित होता है जो कि समाज में अहम बदलाव लाने में महत्वपूर्ण किरदार निभाता है।

मंत्र

अब वक्त की यही माँग है कि ऐसे महाआयोजनों से निकले सामाजिक सरोकारों के मंत्रों को देश और समाज के कल्याण के लिए इस्तेमाल किया जाए। यही हम सब के लिए बड़ा मुद्दा है। इससे ही हम सब कुंभ के मूल लक्ष्य व अभिप्राय को प्राप्त कर सकेंगे।

मर्म

कुंभ से जुड़े सरोकार हमारी परिपाटी रहे हैं। समय के साथ कुंभ की भव्यता, आधुनिकता, रूढ़ियों व परंपराओं पर भले ही सवाल खड़े किये जाते रहें हों, लेकिन इस महामंच का सार्थक इस्तेमाल सदियों से होता चला आ रहा है। ऋषि और प्रकृति एक दूसरे के पूरक है। महाकुंभ में आए संत महात्मा और मुनि अपने अनुयायियों को ऐसे ही सामाजिक सरोकारों से जुड़े मसलों के प्रति जागरूक कर रहे हैं।

आयोजन कब और क्यों

महाकुंभ मेले के आयोजन में दो मेलों के मध्य 12 वर्ष का अन्तर होता है। इसका कारण देवताओं और असुरों के मध्य समुद्र मंथन से हुआ था। जब देवताओं ने समुद्र मंथन द्वारा अमृत का निष्कर्षण किया था, तब देवताओं से अमृत कलश लेने के लिए असुरों ने देवताओं का पीछा किया। देवता अमृत कलश को जिस जगह रख देते थे। वहाँ कुंभ आयोजन होता है। चूँकि देवताओं ने 12 दिनों तक कलश को विभिन्न जगह रखा था। इसलिए एक महादिवस, एक वर्ष के बराबर होता है। हर 12 वर्ष के अन्तर पर कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है।

कुंभ का आयोजन इलाहाबाद में

कुंभ एक ऐसा स्थान हैं जहाँ पर लोग देश विदेश से बिना निमंत्रण/आमंत्रण के आते हैं और पूरी श्रद्धा के साथ संगम में स्नान करके जाते हैं। संगम का अर्थ होता है– ऐसा स्थान जहाँ दो या दो से अधिक वस्तुओं का एक स्थान पर मिलन हो।

इस बार कुंभ का आयोजन इलाहाबाद में हुआ है। इसके हर छठवें वर्ष में आयोजित होने वाला अर्द्धकुंभ कहलाता है अर्द्धकुंभ में महाराजा हर्ष अपना सर्वस्व दान करके पुनः अपनी राजधानी कन्नौज लौट जाते थे।

आयोजन के तीर्थ स्थल

महा कुंभ का आयोजन विभिन्न स्थानों पर प्रति 12 वें वर्ष में किया जाता है। नासिक, उज्जैन, प्रयाग, हरिद्वार में विभिन्न स्थानों पर कुंभ का आयोजन किया जाता है।

आयोजन का उद्देश्य

आयोजन का उद्देश्य भारतीय संस्कृति को विकसित करने के साथ–साथ उसका सम्पूर्ण विश्व में प्रचार प्रसार से है। कुंभ के आयोजन से लोगों में गंगा के प्रति संवदेनशीलता को उत्पन्न करना इसका प्रमुख उद्देश्य है। कुंभ मेले में रहने वाले संत, महात्मा अपने प्रवचनों के द्वारा देश विदेश में उत्पन्न बुराइयों को दूर करने का उपाय करते हैं। वे लोगों को भ्रूण हत्या, दहेज, प्रदूषण आदि से परिचित कराते हैं और उनकों दूर करने का उपाय सुझाते हैं।

यह गंगा, यमुना और सरस्वती नदी के मिलन पर आयोजित किया जाता है।

उपसंहार

कुंभ मेले की सफाई रखना हमारा प्रमुख उद्देश्य है। इसके लिए प्रतिदिन वहाँ पर संत, महात्मा तटों की सफाई करते है, व उनको साफ रखने का अनुरोध करते हैं। गंगा एक पवित्र नदी है अतः हमें इसे स्वच्छ रखने का यथा संभव प्रयास करना चाहिए यही कुंभ मेले का उद्देश्य है। यदि ऐसे सम्भव होगा, तो कुंभ का आयोजन सफल हो जाएगा।

❀ ❀ ❀

गाँधी और यमराज

कृष्ण दत्त ओझा
नवम 'ख'

जब गाँधी जी मरने के बाद ऊपर यमराज के पास गये तो गाँधी जी ने यमराज से पूँछा .....
.... कि
मैं जो अपने तीन बन्दर जमीन (पृथ्वी) पर छोड़ के आया था उनका क्या हाल है?

यमराज बोले.....
अपका पहला बन्दर जो कुछ नहीं देखता था।
वह तो अब कानून बन गया है।
दूसरा बन्दर जो कुछ नहीं सुनता था।
वह तो अब सरकार बन गया है।
तीसरा बन्दर जो कुछ नहीं बोलता था।
वह तो इस समय बेचारा जनता बन गया है।

❀ ❀ ❀

हँसना जरूरी है

अभिजय कृष्ण
षष्ठ 'ग'

ट्रैफिक हवलदार : लाइसेंस दिखाओ।
राजीव : नहीं है।
ट्रैफिक हवलदार : क्या तुमने ड्राइविंग लाइसेंस नही बनवाया ?
राजीव : मैं बनवाने गया था, लेकिन वे वोटर आई डी कार्ड माँग रहे थे, जो मेरे पास नहीं था।
ट्रैफिक हवलदार : तो वोटर आई.डी. कार्ड बनवा लो।
राजीव : मैं वहाँ गया था तो राशन कार्ड मांग रहे थे वो भी मेरे पास नहीं था।
ट्रैफिक हवलदार : तो पहले राशन कार्ड बनवा लो!
राजीव : राशन कार्ड में म्युनिसिपल ऑफिस भी गया था। वो पासबुक माँग रहे थे, जो मेरे पास नहीं थी।
ट्रैफिक हवलदार : अरे यार, तुम बैक में खाता ही क्यों नहीं खुलवा लेते।
राजीव : मैं बैंक गया था। वो ड्राइविंग लाइसेंस माँग रहे थे।

☺ ☺ ☺

भोलू : जब मैं पैदा हुआ था, तो मिलिट्री वालों ने 21 तोपें चलाई थीं।
गोलू : कमाल है सबका निशाना चूक गया।

☺ ☺ ☺

विक्की दरवाजा खटखटाता है।
चिंकू : कौन है ?
विक्की : मैं हूँ।
चिंकू : मैं कौन ?
विक्की : अरे पागल खुद को ही भूल गया तू।

☺ ☺ ☺

चिंकू और पिंकू चेस खेल रहे थे :
चिंकू : अब बस हुआ। अब खेल बंद करते हैं।
पिंटू : वैसे भी तुम्हारा घोड़ा और मेरा हाथी ही बचे हैं।

☺ ☺ ☺

टीचर : सबसे ज्यादा बारिश कहाँ होती है ?

स्टूडेन्ट : जमीन पर

☺ ☺ ☺

पैसेन्जर : तुमने मेरी जेब में हाथ क्यों डाला ?

मोनू : मुझे माचिस चाहिए थी।

पैंसेजर : तुम मुझसे माँग भी सकते थे।

मोनू : मैं अजनबियों से बात नहीं करता।

बॉस : तुमने मुझे इतनी बड़ी स्वीच क्यों दी? सब बोर हो गये थे।

सेक्रेट्री : सर स्वीच तो छोटी थी। पर गलती से मैंने आपको तीन कॉपीज दे दी थी।

☺ ☺ ☺

सुमित पुलिस से .....

कल रात चोर घर से टीवी के अलावा सब सामान ले गये।

पुलिस : टीवी क्यों नहीं ले गए ?

सुमित : टीवी तो मैं देख रहा था।

☺ ☺ ☺

पहला टीचर : आप क्या नया पढ़ा रहे हैं?

दूसरा टीचर : अरे मैं क्या नया पढ़ा सकता हूँ, मैं हिस्ट्री का टीचर हूँ।

☺ ☺ ☺

❁ ❁ ❁

शिक्षक का सम्मान करो

अवनीश चौहान
सप्तम 'ग'

शिक्षक की गरिमा मत भूलो, अमृत हैं उसकी वाणी में।
वह सच्चा जग निर्माता है, वह है अवस्थित हर वाणी में।
कृपा दृष्टि से उसकी जन के, मन के, विकार सब मिट जाते हैं।
जीवन फूलों सा मुस्काता है, पथ के काँटें सब छट जाते हैं
उसकी गरिमा गुरुता पाकर, जग में कृष्ण महान बने थे।
उसकी क्षमता को अपनाकर, दशरथ सुत भगवान बने थे।
यह याद रखो अध्यापक ही, अध्याय बदलता रहता है।
पृथ्वी पर दूजा ब्रह्म है, इतिहास बदलता रहता है।
उसकी गुरुता की गरिमा को तुम, स्वीकार करो।
उसका धन–मन–तन से तुम सम्मान करो।
सम्मान करो ! सम्मान करो ।
शिक्षक का सम्मान करो।।

❀ ❀ ❀

आज के लोग

मोनेश कुमार अग्रवाल
सप्तम 'ग'

सामने से ये गले लगाते
पीठ–पीछे ये गर्दन पर छुरी चलाते।
षडयन्त्रों से ये प्रीति निभाते,
भाषणों में ये नीति दिखाते।
भेदभाव ब घृणा की ये आग लगाते,
झूठे मान–सम्मान से ये अपनी भूख मिटाते।
शर्म, हया, छोड़ व सहयोगियों को फोड़ ये उन्हें गुमराह करते
चापलूसी व निज स्वार्थ में ये डूबे रहते।
इनका होता अंदाज निराला,
होंठो पे रखते झूठी मुस्कान, दिल में ईर्ष्या की ज्वाला।
धर्म, जाति व क्षेत्रवाद का ये अस्त्र चलाते,
निरन्तर ऊँचे आसनों की ओर ये दौड़ लगाते।

❀ ❀ ❀

स्वदेश प्रेम

आकाश गुप्त
सप्तम 'ग'

हमारा देश भारत है और हम उस देश के वासी हैं। जिस देश में गंगा बहती है हमारा देश एक प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र होने के साथ–साथ एक कृषि प्रधान देश है। जिसमें कृषि को महत्ता दी गई है। हमारा देश सब देशों से अलग है। हमारा देश ऐसा है जहाँ सभी धर्मों के लोग निवास करते हैं, जिनमें किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं है। सब आपस में बड़े ही प्रेम से रहते हैं। और देश प्रेम की भावना को उजागर करते हैं। हमारे देश में कई प्रकार की भाषा भी बोली जाती है। और हमारे देश में सभी धर्मों के लोग निवास करते है जो धर्म का पालन करते हैं। और अपने–अपने त्योहारों को बड़ी ही प्रसन्नता, बन्धुत्व के भाव से मनाते हैं। जो कि हमारे देश प्रेम का सबसे अच्छा उदाहरण है। हमे अपने देश से बहुत प्रेम है और सभी को अपने देश से प्रेम करना चाहिये।

"जो भरा नहीं है भावों से
बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नहीं है पत्थर है
जिसमें स्वदेश से प्यार नहीं।"

धोखे बाज गधा

पवन कुमार
अष्टम 'क'

गधा एक था चरता वन में
कष्ट बड़ा था उसके मन में
कहीं सिंह का चमड़ा पाया
उसने उससे रूप बनाया।
सबको डर दिखलाता था
अच्छे मजे उड़ाता था
चर जाता था सबके खेत
सब डरते थे उसको देख
रात एक उजियाली आयी
खूब गधे के मन में भायी
चरने लगा खेत मे जाकर
रखवाले सब भागे डरकर
तभी रेंकने से भेद खुल गया
रखवालों ने लठठ् उठाया।
मार–मारकर खूब छकाया
जो देता औरो को धोखा
ईश्वर फल देता है जैसे तो तैसा।

Amazing Facts

Siddhartha Porwal
IXth 'B'

1. The number system was invented by India Aryabhatta was the scientist who invented the digit zero.
2. Intelligent people have more zinc and copper in their hair.
3. The highest kangaroo leap recorded is loft and the longest is 42 ft.
4. The only 2 animal that can see behind itself without turning its head are the rabbit and the parrot.
5. Tea is said to have been discovered in 2737 BC by a chinese emperor when some tea leaves accidentally blew into a pot of boiling water.
6. Saturn is a very windy place ! winds can reach up to 1,100 miles per hour. Saturn is also made of gas. If you could find an ocean large enough. It would float. This planet is jamous for its beautiful rings. and has at least 18 moons.
7. Just about everyone listens to the radio most families have several radios.
8. The bird that can fly the fastest is called a white it can fly up to 95 miles per hour.
9. If you were to remove your skin. It would weight as much as 5 pounds.
10. The eyes of the Chameleoh can move independently & can see in two different directions at the same time.
11. Along with its length neck the giraffe has a very long tongue .... more than a foot and a half. A giraffe can clean its ears with its 21 inch tongue.

महंगाई

यश सिंह
दशम 'ख'

महंगाई के राज में भइया
महंगा इंतजाम है
आटा महंगा, चावल महंगा
महंगा सब सामान है
सब्र है महंगा, नीयत मंहगी
और मंहगा ईमान है
खून पसीना सारा सस्ता
महंगी एक मुस्कान है
सस्ता इंसान, सस्ता फरिश्ता
सस्ता–सा–भगवान हैं
घाट है महंगा, कफन है
महंगा
महंगी मुक्ति दुकान है।
लकड़ी महंगी, कोयला महंगा
महंगा दस्तरख्वान है
मेहमान सस्ते में मिलता
महंगा मेजबान है
विद्या मंहगी अक्षर महंगे
महंगी कलमदान है
रोजगार सब मंहगे पाए
शपा की महंगी शान है

गाय

सिद्धार्थ पोरवाल
नवम 'ख'

1. गौमाता में 33 कोटि देवताओं का वास है जिनमें 8 वसु, 12 आदित्य, 11 रूद्र, 2 अश्विनी कुमार है।
2. कुल गो दुग्ध उत्पादन में विश्व में भारत का प्रथम स्थान है।
3. प्राण निकलते समय कष्ट निवारण हेतु किए जाने वाले गौदान को उत्क्रान्ति धेनु दान कहते हैं।
4. यजुर्वेद वह वेद है जिसमें पशुओं को मारना निषेध किया गया है।
5. श्री राम ने वन गमन से पूर्व त्रिजट नामक ब्राह्मण को गायें दान दी थीं।
6. गाओं की अधिष्ठात्री आदि जननी 'सुरभि' को माना जाता है।
7. शंकर के अवतार माने जाने वाले सुरभि सुत वृषभ का नाम 'नील वृषभ' है।
8. गौ मूत्र में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, गंधक, अमोनिया मैगनीज, यूरिया, साल्ट, कॉपर, एवं अन्य क्षार मिश्रित हैं।
9. गाय के गोबर में 18% पोटेशियम ऑक्साइड होता है।
10. माँ के दूध में कैलोरी की मात्रा 65% होती है। गाय के दूध में 67 % होती है।
11. गाय के दूध में कैल्सियम 120%, फॉस्फोरस 90%, लौह 0.2% गंधक 14%, पोटेशियम 140% सोडियम 16% पाए जाते हैं।
12. भगवान राम के पूर्वज महाराज दिलीप कामधेनु की पुत्री 'नन्दिनी गाय की पूजा करते थे।
13. गाय का दूध कैरोटीन तत्व अर्थात् विटामिन 'ए' के कारण पीला होता है।
14. देश का पहला "गौ विज्ञान अनुसंधान केन्द्र' देवलापार, नागपुर, स्व० मोरोपंतजी पिंगले की प्रेरणा से प्रारम्भ हुआ।
15. गौतम ऋषि की तपस्या से एक मृत गाय का उद्धार करने के लिए पावन गंगा ब्रह्मगिरी से एक नदी बनकर प्रवाहित हुई जिसका नाम गोदावरी नदी है।

❁ ❁ ❁

गौ

सिद्धार्थ पोरवाल
नवम 'ख'

गौ के लिए तुमने क्या किया ?
जिसने माँ से अधिक हमें,
जीवन भर दूध पिलाया।
देकर जीवन का दान,
शान से हमें अन्न खिलाया।
सेवा से कब इन्कार किया,
कब अपना शीष झुकाया।
साथ गई परलोक में
ईश्वर से तुम्हे मिलाया।
सुधा–सा मुग्ध हो, दुग्ध
जिस गौ का तुमने पिया।
हाथ हृदय पर रखकर कहो,
उस 'गौ' के लिए तुमने क्या किया ?

❁ ❁ ❁

शैक्षिक देशदर्शन-२०१२ (राजस्थान)
विद्यालय से जयपुर तक

अर्चित पाण्डेय
अष्टम 'ख'

विद्यालय से हम 53 छात्र 6 आचार्य व 4 कर्मचारियों समेंत 8:04 मिनट पर जयपुर के लिए रवाना हुए। विद्यालय से हमारी विदाई प्रधानाचार्य जी, महेश जी व अन्य आचार्य तथा छात्रों द्वारा की गई। विद्यालय से निकलकर हम राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–2 से अकबरपुर–सिकन्द्रा होते हुए प्रथम बार H.P. ढाबा पीतमपुर (सिकन्द्रा) में रूके। वहाँ हमने रात्रि का भोजन किया। द्वितीय बार हम आगरा जिले में गंगा होटल पर रूके जहाँ से आगरा की दूरी 53 किलोमीटर थी। वहाँ हमने दो घण्टे विश्राम किया।

वहाँ विश्राम के पश्चात हम प्रातः 9 बजे जयपुर में केशव नगर स्थित सामुदायिक भवन पहुँचे। वहाँ पर हमें अपने विद्यालय के पूर्व छात्र मिले जिन्होंने हमारे नाश्ता इत्यादि की व्यवस्था की। वहाँ जल्द ही हम तैयार हुए व राजस्थानी नाश्ता किया। नाश्ता करके बस से जयपुर शहर का भ्रमण करने निकले। सर्वप्रथम हमने सवाई मान सिंह स्टेडियम देखा। यहाँ सवाई मान सिंह पोलो खेलते थे। वहाँ के पश्चात हम जलमहल गये।

जलमहल

जलमहल महाराजा प्रतापसिंह द्वारा निर्मित महल है जो जयपुर से 7 किमी. दूर ओमर मार्ग पर स्थित है। यह महल मान सागर के मध्य स्थित है।

जलमहल देखने के पश्चात हम हवामहल घूमने गये।

हवामहल

जयपुर का विलक्षण व प्रभावी महल है सवाई प्रताप सिंह द्वारा 1799 ई० में निर्मित हवामहल लाल पत्थर से नगर के मध्य स्थित है। इसके पहले हिस्से में 360 खिड़कियाँ बनी हैं।

हवा महल का भ्रमण के पश्चात हम सिटी गेट देखने गये।

जंतर–मंतर

बेजान ईट–पत्थर के मेल से बनी यह अद्‌भुत वेदशाला जो कि ज्योतिष यंत्रालय या जन्तर मन्तर के नाम से जानी जाती है। इस आश्चर्य जनक यन्त्र समूह का निर्माण 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा त्रिपोलिया के प्रांगण में करवाया गया था। इस यन्त्रालय में हम 18 यंत्र देख सकते है–

1. धूप घड़ी
2. ध्रव नाल
3. नारी वलय
4. क्रान्ति वृत 'दक्षिणी'
5. उन्नतांश
6. दिशा

7.	दक्षिणेदकाभित्ति	8.	सम्राट	9.	व
10.	षष्टांश	11.	नारी वलय–राशि चक्र	12.	अन्नतांश
13.	जयप्रकाश	14.	वक्र	14.	कपाली
16.	राम	17.	दिगंश	18.	क्रान्ति वृत उत्तरी

जंतर–मंतर में पूर्णतः भ्रमण के पश्चात हम सभी लोग बिरला मंदिर (लक्ष्मी नारायण मंदिर) मोती डुंगुरी के नीचे पहाड़ी का सफेद मार्बल से बना आधुनिक मंदिर का दृश्य बड़ा ही मनोरम है।

बिरला मंदिर घूमने के पश्चात् हम राजस्थान कला केन्द्र गये।

राजस्थान कला केन्द्र

यह कला केन्द्र बहुत बड़ा था वहाँ सभी छात्रों व आचार्यों ने दीवालों पर बने चित्रों का अवलोकन किया।

चित्रों का अवलोकन कर सभी ने वहाँ कॉफी पी तथा वहाँ से हम सीधे सामुदायिक भवन गये। वहाँ सभी ने शान्ति के साथ भोजन किया भोजन के पश्चात् सभी कमरों में जाकर सो गये।

जयपुर से बीकानेर तक

जयपुर में अगले दिन सभी लोग प्रातः ही जाग गये तथा प्रातः 5:56 मिनट पर हम बीकानेर के लिए रवाना हुए। लगभग 326 किमी० की यात्रा के पश्चात हम बीकानेर पहुँचे। शहर के प्रारंभ में ही वैष्णों मंदिर था कटरा में बसा माँ के मंदिर का प्रतिरूप है। मंदिर भ्रमण के पश्चात हम मिलेट्री स्टेशन गये। मिलेट्री स्टेशन में हम 42वीं रेजीमेंट डेरा बाबा नानक में गये। वहाँ के कर्नल विद्यालय के पूर्व छात्र श्री रजत पाण्डेय जी थे। वहाँ पहुँचकर हम वहाँ के भोजनालय में भोजन करने गये। वहाँ हमनें कच्चा भोजन (दाल, चावल, सब्जी, रोटी) किया। भोजन के पश्चात हम वहाँ के मैदान में गये वहाँ हमारे लिए अस्त्रों तथा शस्त्रों की प्रदर्शिनी लगी थी।

प्रदर्शिनी देखने के पश्चात वहाँ के कैम्पस में हमें घूमाया गया। हमनें वहाँ के परिसर में विदेशी ट्रक व टैन्कों को देखा और वहाँ पर हमने तोपों टैन्कों तथा अन्य बड़े हथियारों की सफाई करने वाली मशीन देखी। हमें वहाँ घुमाने के लिए एक सर की नियुक्ति की गई। उनका नाम श्री धनेश कुमार था जो कि हरियाणा के थे। सायंकाल हम लघु शस्त्र गृह गये वहाँ हमने गार्ड बदली देखी।

रात्रि में हम एक कार्यक्रम में गये जो कि रजत जी ने आयोजित किया था। उसमें हमें अनेक जानकारी दी एन0डी०ए०, में हम कैसे जाए, इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मिलेट्री में अफसर की कमी बताई गई। कार्यक्रम के पश्चात हम भोजन करने गये। भोजन के पश्चात हम सभी लोग वापस अपने कमरों में गये। प्रातः काल जल्दी सभी लोग उठकर तैयार हुए व भोजनालय में जलपान किया। जलपान करके सभी लोग सर्वधर्म स्थल गये। वहाँ हमने हवन किया हनुमानाष्टक व हनुमान चालीसा का जाप किया। पूजा खत्म होने के बाद हमने प्रसाद ग्रहण किया।

सर्वधर्म स्थल से हम लोग टैन्क देखने गये वहाँ हम उनपर घूमे भी। वहाँ पर हमारे जलपान की व्यवस्था थी। जलपान करने के बाद हम जूनागढ़ का किला देखने गए। इस किला का निर्माण काल

350 साल तक चला इस किले का निर्माण 6 वें से 10 वें राजा तक चला।

वहाँ से हम प्राचीन संग्रहालय गए जहाँ पर अग्रेंजों के समय के अस्त्र–शस्त्र देखे व वहाँ हमने एक पूर्वकाल का जहाज भी देखा। किले व संग्रहालय में घूमने के पश्चात हम करणी माता के मंदिर गए। नवरात्रि के कारण भीड़ अधिक थी इसलिए हमने मंदिर के बाहर से ही दर्शन किये। मंदिर के समीप ही हमने भोजन किया व वापस लौटने की तैयारी की। वापस लौटने पर हमने मिलेट्री स्टेशन में चाय पी व जैसलमेर लौटने की तैयारियां की रात्रि में हम जैसलमेर के लिए रवाना हुए।

बीकानेर से जैसलमेर तक

रात्रि भर सफर के पश्चात प्रातः 6:08 मिनट पर हम जैसलमेर पहुँचे वहाँ हम होटल अरूण में रूके। कुछ ही समय में हम तैयार हुए व जलपान किया। जलपान करने के पश्चात हम सभी लोग जैसलमेर का दुर्ग देखने गए वहाँ पर हम लोग बुद्ध मंदिर देखने गए। बुद्ध मंदिर से 11:05 बजे गाड़ी सर तालाब गये। तालाब में अनेक मछलियाँ थी। हम लोग 12:30 पर होटल अरूण लौट आए। 11:00 बजे हम सभी भोजन करने के लिए गए। 2:30 बजे हम लोग पुनः यात्रा पर चले और हम लोग कुलधरा में एक स्थान का जहाँ राजा शाहआलम शाह था। उसने अपनी प्रजा को बहुत सताया अनेक अत्याचार किये इसलिए वहाँ के पुरोहितों ने उसे श्राप दे दिया। कि जो भी व्यक्ति यहाँ के लोगों को सताएगा या कोई चीज चुरा कर ले जाएगा उसका वंश नष्ट हो जाएगा। इसी कारण आस–पास के 83 गाँव नष्ट हो गये। ये ब्राह्मण उस स्थान से जाकर पूरे देश में जाकर बस गये। आज इन्हे पॉलीवाल कहते है। उसके बाद हम अपने प्यारे रेगिस्तान पहुँचे।

पहले सभी ने निर्णय लिया कि हम लोग ऊँट से जाऐंगे लेकिन फिर निर्णय लिया कि सवारी में क्या आनन्द ? बैठे रहने में क्या मजा ? इसलिए हम लोग पैदल ही चल पड़े। उस समय का नजारा बहुत ही सुन्दर था। वहाँ सभी ने बहुत मस्ती की। कोई दौड़ा, कोई चला, तो कोई टीले से नीचे उतरा कोई गिरा और ये आनंद हम छात्रों ने ही नहीं आचार्यों ने भी लिया। हम लोग थक कर वापस एक दुकान पर आये वहाँ हमने कोल्ड ड्रिंक पी फिर हम लोग एक लम्बे समय तक मजे करने के बाद 5:30 बजे होटल वापस आये। इसके बाद 9:30 बजे हम सभी ने भोजन किया। भोजन के पश्चात हम सभी सो गये। अगले दिन हम 5:30 बजे उठे व तैयार हुए। तैयार होने के पश्चात हम जलपान करने गए। 8:00 बजे हम जोधपुर जाने के लिए रवाना हुए।

जैसलमेर से जोधपुर तक

घण्टों सफर के पश्चात हम जोधपुर पहुँचे और जोधपुर में सर्वप्रथम हम महारानगड़ किले में गये। इस किले का निर्माण मान सिंह ने करवाया। किन्तु बाद में जगत सिंह ने इस पर कब्जा कर लिया। यहाँ मारवाड़ चित्रशैली का विकास 1725–1843 में हुआ। जिसमें चित्रकारों को बहुत मौके दिये गए। चित्रशैली के विकास के लिए इसका विकास करने वाले राजा बखत सिंह जी थे। इनका शासनकाल 1725 से 1751 तक रहा। इस महल में नक्काशीदार पत्थरों पर सोने की पेन्टिंग की गई है।

मारवाड़ क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत की तीसरी बड़ी रियासत है। इस पर राजपूतों का लगभग 500 वर्षों तक शासन रहा। यहाँ तख्त सनामक एक कमरा था। जिसका निर्माण संगीत के लिए हुआ अर्थाज यह म्यूजिकल हाल था। जहाँ राजा नाच–गाने सुनता था। इस किले के बाहर रॉय जोधा नामक झील भी है। मोतीमहल का निर्माण राजा सूर सिंह जी ने 1595–1619 के मध्य कराया। इस महल में राजा सभा करते थे। जिसमें उसके मन्त्री बैठते थे।

राजपूतों के राजाओं की कुल संख्या अट्ठारह है अर्थात अट्ठारह राजपूत राजाओं ने यहाँ शासन किया था। इस के बाद हम लोग मंडोर उद्यान गये जहाँ इकथम्बा महल था। यही पर जनाना महल था। इसका निर्माण अजीत सिंह ने करवायाय। इसका निर्माण राज घराने की स्त्रियों के महल में ठन्डक रखने के लिए करवाया था। वहाँ भ्रमण के पश्चात हम सुचेता कृपलानी विकलांग विद्यालय में गये। यहाँ विकलांग विद्यार्थी पढ़ते हैं। यहीं के छात्रावास में हमारे ठहरने की व्यवस्था की गई। 8:45 बजे हम भोजन करने वहाँ के भोजनालय में गये भोजन के पश्चात हम सभी सो गए।

अगले दिन प्रातः 5:30 बजे हम लोग जाग गये व 7:00 बजे तक हम अपने नित्य क्रिया से निवृत्त होकर जलपान करने गए। जलपान के पंश्चात हम उन सभी छात्रों से मिलने गए। वहाँ उन्होंने हमें अनेक कला कृतियाँ दिखाईं। इस विद्यालय को अब्दुल कलाम, अटल बिहारी वाजपेयी, प्रतिभा देवी पाटिल आदि लोगों का मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ। 9:00 बजे इस विद्यालय में घमने गये वहाँ के कैप्पस में घूमें 10:00 बजे पुष्कर रवाना हुए। 9 घण्टे सफर के बाद हम पुष्कर पहुँचे वहाँ जगद्गुरू पीपा नन्दा ट्रस्ट द्वारा बनवाये गये धर्मशाला में ठहरे।

7:45 बजे से यहाँ सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का संचालन भैया पार्थ निगम ने किया। जो देश दर्शन के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रमुख थे। भैया आशुतोष गुप्त ने छात्र प्रस्तुति प्रारम्भ की व अन्य छात्रों ने भी गीत गाये जैसे कि चि० विकास कुमार, चि० प्रियांशु कुशवाहा व स्वयं भैया पार्थ निगम। चि० देवांश ने नृत्य प्रस्तुत किया। देशदर्शन प्रमुख भैया हिमांशु प्रताप के द्वारा हास्य भाषण व गीत प्रस्तुत किया गया। भैया निलय सिंह द्वारा देश भक्ति का बेहतरीन भाषण प्रस्तुत किया गया। चि० कृष्ण दत्त ओझा ने हँसी से परिपूर्ण अभिनय किया। अंततः छात्र प्रस्तुति समाप्त हुई। आचार्य जगपाल जी ने भी अनेक भाषाओं के गीत हमें सुनाए। आचार्य दुर्गेश जी ने हमें उद्बोधन दिया। आचार्य श्री हेमन्त जी ने कार्यक्रम का समापन किया।

कार्यक्रम समाप्त होते ही हम लोग भोजन करने गए। भोजन के पश्चात हम सो गए। प्रातः जल्द उठकर नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर परमपिता के दर्शन करने गये। पुष्कर्रराज के दर्शन के पूर्व हमने पुष्कर सरोवर देखा। हमने मित्रों के साथ प्रसाद लेकर दर्शन किये व वापस आश्रम लौटे। आश्रम में लौटने के पश्चात हम वापस कानपुर आने के लिए तैयारी करने लगे।

पुष्कर से कानुपर तक

पुष्कर राज के मंदिर में फर्श पर इग्लैण्ड के राजाओं के सिक्के लगे थे जिसमें जार्ज नामक शासक के अधिक सिक्के थे। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है। कि इसका निर्माण 17वीं से

18 वीं शताब्दी के मध्य हुआ होगा। 8:45 बजे हम जयपुर के लिए रवाना हुए जो कि हमारा प्रथम स्टॉप था। 3 घण्टे में हम जयपुर पहुँचे। 12:20 बजे हम नैश्नल हैण्डलूम कार्पोरेशन वैशाली नगर, जयपुर में शॉपिंग करने गए। मैंने वहाँ आइसक्रीम खाई व कोल्डड्रिंक पी। फिर तीन बजे शॉपिंग करके कानपुर लौटेने लगे। 5:37 बजे हम लोग मेंहदीपुर गये। शनिवार होने के कारण अधिक भीड़ जिससे हम दर्शन न कर सके।

हम लोगों ने पुनः कानपुर वापस आने की यात्रा प्रारम्भ की। रात्रि में फिरोजाबाद, इटावा, औरैया, सिकन्द्रा से होते हुए वापस सुबह कानपुर आये। विद्यालय आते ही सभी छात्र मारूति सभागार गये।

जयपुर की विशेषताएँ

1. यहाँ मिट्टी दो प्रकार की होती है पीली मिट्टी व लाल मिट्टी।
2. यहाँ यातायात के नियम अत्यधिक अच्छे हैं यहाँ चालक व बैठने वाले सब हेलमेट पहनते हैं।
3. यह शहर बहुत साफ –सफाई वाला है। यहाँ की सड़के टूटी–फूटी नहीं हैं।
4. यहाँ सभी लोग जल का सदुपयोग करते हैं।
5. इस शहर को गुलाबी शहर इसलिए कहते है। क्योंकि यहाँ का पुराना शहर जो पुराने समय में बसाया गया था। वहाँ आज भी सभी घर गुलाबी कलर से पुते हैं।

जैसलमेर की विशेषताएँ

1. इस नगर को स्वर्ण नगरी कहते हैं क्योंकि यहाँ के सभी घर गोल्डन कलर के हैं।
2. यहाँ विश्व का दूसरा सबसे बड़ा रेगिस्तान है।
3. यहाँ से पाकिस्तान का बार्डर लगभग 65 किमी० है।

देशदर्शन में गये आचार्यों के नाम

1. श्री दिनेश भदौरियां (देशदर्शन प्रभारी)
2. श्री हेमन्त शुक्ल (ग्रुप A प्रभारी)
3. श्री दुर्गेश वाजपेयी (ग्रुप B प्रभारी)
4. श्री आलोक द्विवेदी (ग्रुप C प्रभारी)
5. श्री जगपाल सिंह (ग्रुप D प्रभारी)
6. श्री श्री प्रकाश ओझा (ग्रुप E प्रभारी)

विद्यालय के देशदर्शन पर गये अष्टम के छात्रों के नाम (ग्रुप–D) व (ग्रुप–E)

1. अर्चित पाण्डेय
2. अभिषेक राजपूत
3. शिवम कुमार
4. अनुग्रह द्विवेदी
14. ऋषभ यादव
15. मनीष कुमार
16. प्रियम गुप्त
17. देवांश भारद्वाज

5. आशीष यादव
6. अनिरूद्ध राजपूत
7. विकास कुमार
8. ऋषिकेश कुमार
9. ऋषभ त्रिवेदी
10. रोहित वर्मा
11. राहुल कुमार
12. राजन कुमार
13. संदीप सिंह
18. अभिनव गुप्त
19. उत्कर्ष यादव
20. आनन्द कुमार
21. आशुतोष अग्निहोत्री
22. शिव कुमार
23. दिलीप कुमार
24. कमलेश कुमार
25. हिमांशु कुमार
26. पवन पाल

नवम के छात्रों के नाम (ग्रुप–C)

1. रोहित आनन्द
2. ऋषभ सिंह
3. प्रियांशु सिंह
4. शिखर सेंगर
5. आशुतोष गुप्त
6. आदित्य कुमार
7. परमवीर कुमार
8. कृष्ण दत्त ओझा

दशम के छात्रों के नाम (ग्रुप –B)

1. प्रशांत सिंह चौहान
2. शिवांग शाक्य
3. सचिन पाठक
4. अक्षत कृष्णा
5. विशाल शुक्ल
6. पीयूष कटियार
7. सन्तोष गुप्त
8. बाला प्रसाद
9. देवेश राज
10. आशुतोष कुशवाहा

द्वादश के छात्रों के नाम (ग्रुप –A)

1. हिमांशु प्रताप सिंह
2. मानवर्धन कुशवाहा
3. विवेक पाठक
4. अमित चौरसिया
5. अनुज उमराव
6. चमन शाहू
7. निलय सिंह
8. पार्थ निगम

सप्तम के छात्र का नाम (ग्रुप –E)

1. साधञ्जय चाकमा

देशदर्शन में गये कर्मचारियों के नाम

1. श्याम लाल जी
2. राम स्वारथ जी
3. राम निहोर जी
4. आशीष जी

चतुर्वर्णस्थ माँ

अर्चित पाण्डेय
अष्टम 'ख'

"ऊपर जिसका अन्त नहीं उसे आसमाँ कहते हैं
सृष्टि में जिसका अन्त नहीं, उसे ही माँ कहते हैं"
संदोष या कि निर्दोष जैसी भी
वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत
हम सबका कोई न कोई वर्ण है
लेकिन माँ
माँ में चारो वर्ण
एक साथ लीन हो गये
कितने समीचीन हो गये।
और ये माँ चतुवर्णस्थ है।
माँ जब–जब बोध देती है
वह ब्राह्मण बन जाती है।
माँ जब–जब रक्षा करती है
और समय से लड़ना सिखाती है।
वह क्षत्रिय सी लगती है।
अन्नपूर्णा के रूप में
माँ वैश्य नहीं तो और क्या है ?
दिन रात यथा आवश्यकता
समय–असमय
जब वह मलमूत्र साफ करती है
माँ सफाई कामगार लगती है।
माँ बनने के लिए
औरत होना जरूरी है
हर औरत माँ नही हो सकती
माँ बनने के लिये
औरत का चतुर्वर्णस्थ होना जरूरी है।

"बचपन के आठ साल तुझे अँगुली पकड़कर जो माँ–बाप स्कूल ले जाते थे, उस माँ–बाप को बुढ़ापे के आठ साल सहारा बनकर मंदिर ले जाना ..... शायद थोड़ा सा कर्ज, थोड़ा सा फ़र्ज पूरा हो सकेगा।"

पत्ता और मैं

मायावती
सप्तम 'क'

देखकर शाखा से गिर पत्तों को
मुझे लड़की होने का एहसास हुआ
कितनी खामोशियाँ सुना गया
वो पत्ता जब बोलनें पर आया
तो हमेशा के लिए टूट गया
पर मुझे तो टूटकर फिर जुड़ना है।
वो नहीं जानता, जानती मैं भी नहीं
हम किस मंजिल की तलाश में हैं।
'उफ' तो वह भी नहीं करता
'आहें' मैं भी नहीं भरती
क्या है उस पार जो मैं देख पाई
विवशता की जिंदगी से जुड़ सकी
काश मैं भी एकबार टूट जाती
भूल दुनिया के फरेबी जालों को
खुली हवा में साँस ले पाती

उनको औकात दिखा दो अब

रोहित यादव
दशम 'ग'

कायर नहीं शेर हैं हम,
पाकिस्तान को ये बतला दो अब।
कहना सुनना बहुत हुआ,
उनको औकात दिखा दो अब।।
जब बंदूकों में गोली भी है,
जज्बातों में होली भी है।
सीनों में दहकें हैं शोले,
हाथों में जलते हथगोले।
देश में इतनी आग भरी हैं,
पूरा पाक जला दो अब,
उनको औकात दिखा दो अब।
माना कि जंग ही चाह नहीं है,
पर चुप रहना भी राह नहीं है।
कब तक अपनों की लाशें ढोयें,
कब तक अपने ही ऊपर रोयें।
जंग बिना अब बात न होगी,
पूरा पाक हिला दो अब,
उनको औकात दिखा दो अब।

नहीं किसी से कम है बेटी

प्रीति कुमारी
सप्तम 'क'

घूँघट में मैं रही जनम भर दुनिया देख न पायी,
सुन–सुनकर अपनों के तानें आती मुझे रूलाई।
मात–पिता के आँगन में ही बनकर पराई,
नारी–जीवन देख हृदय में पीड़ा भर–भर आयी।
मन की चाह रही मन में ही कर ना सकी पढ़ायी,
ठान लिया अब लड़नी होगी अपनी मुझे लड़ाई।
चूल्हा–चौका, झाड़ू, बर्तन में ही उम्र बितायी,
बिटिया पर पढ़ने न दूँगी मैं दुःख की परछाई।
बाली उमर बीत न पायी तब तक हुई सगाई,
कदम–कदम पर मैंने तो जीवन भर ठोकर खायी।
छूट गयीं सब सखी सहेली मैं पिय के घर आयी,
बहुत दूर से नए जमाने की आहट सुन पायी।
यह रीत है इस दुनिया की माँ ने बात बताई,
मैं अनपढ़ रह गयी न कुछ अपनी पहचान बनायी।
बाबुल के घर से बिटिया की होती सदा विदाई,
पर बिटिया को खूब पढ़ाऊँगी यह कसम उठायी।
नया–नया माहौल देखकर मैं बेहद घबराई,
बढ़ने लगी फूल–सी बिटिया चंपा–सी खिल आयी।
कठपुतली–सी डोल रही थी पर कुछ बोल न पाई,
सही समय पर विद्यालय जाकर की शुरू पढाई।
दोनों कुल की लाज रखूँ अब इसमें थी चतुराई,
बिटिया रातों पढ़ी खूब सबसे आगे वह आयी।
सबकी खुशियों में ही मैंने अपनी खुशी मनायी,
किया गाँव का नाम चेतना सब में नई जगाई।
बीत गए कुछ दिन ऐसे ही तभी घड़ी वह आयी,
नहीं किसी से कम है बेटी बात समझ तब आयी।
पैर हुए भारी मुझसे अब सबने आस लगाई,
बेटा कुल दीपक, बेटी है ज्योति सदा सुखदायी।
हुई फूल–सी कोमल बिटिया मैं अतिशय हर्षायी,
लेकिन घरवालों को ही बिटिया की जात न भायी।

❀ ❀ ❀

हमारे पर्व (चौपाइयाँ)

सौरभ शुक्ल
नवम 'ग'

१. लोहड़ी

पर्व लोहड़ी का है आया।
सिक्खों ने है जश्न मनाया।।
बच्चों ने है धूम मचाया।
नाच–नाच कर ढोल बजाया।।

२. मकर संक्रान्ति

मकर–संक्रान्ति शुभ है आई।
मिलकर सबने खिचड़ी खाई।।
तिल के लड्डू घर में लाई।
दान करें सब लोग–लुगाई।।

३. बसंत पंचमी

है बसंत ऋतुओं का राजा।
फूलों को महकाने आया।।
रंग–बिरंगी खुशियाँ आया।
पीत–वस्त्र पहनाने आया।।

४. शिवरात्रि

शिवरात्रि सुंदर है आई।
नाच रहे भोले विषपाई।।
ठंडाई सबने बँटवाई।
व्रत–उपवास करें सब भाई।।

५. होली

रंग–बिरंगी होली आई
रंगो सी खुशियाँ ये लाई।।
भर–भर रंग चले पिचकारी।
सर्दी अब गर्मी से हारी।।

६. रक्षा बन्धन

राखी का उत्सव है आया।
माथे पर चंदन महकाया।।
खुशियों का आलम है छाया।
बच्चों ने मोदक है खाया।।

७. जन्माष्टमी

कृष्ण जन्म का उत्सव आया।
वृंदावन में रास रचाया।।
फूलों से दरबार सजाया।
पंञ्चामृत का भोग लगाया।।

८. ईद

सुंदर चाँद नजर है आया।
घर को सबने खूब सजाया।।
बेगम ने पकवान बनाया।
धूम–धाम से ईद मनाया।।

९. दशहरा

विजयादशमी पर्व है आया।
मिलकर रावण खूब जलाया।।
चाट–पकौड़ा सबने खाया।
मेले का आनंद उठाया।।

१०. दीपावली

दीवाली सुंदर है आई।
घर में नया उजाला लाई।।
खील–खिलौने दीपक लाई।
धन की देवी सुंदर आई।।

११. क्रिसमस

जीसस का क्रिसमस है आया।
बच्चों को सांता है भाया।।
क्रिसमस ट्री को खूब सजाया।
उपहारों का मजा उठाया।।

❀ ❀ ❀

बस की यात्रा (व्यंग्य)

हरिशंकर परसाई
लेखक

प्रस्तुति : अभिषेक राजपूत
अष्टम 'क'

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हम में से दो को सुबह काम पर हाजिर होना था इसलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना जरूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफर नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं ? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफर नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसें हुआ जा सकता है।

बस कंपनी के एक हिस्सेदार भी उस बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा–"यह बस चलती भी है?" वह बोले –"चलती क्यों नहीं है जी। अभी चलेगी।" हमने कहा– "वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह ? हाँ जी, और कैसे चलेगी ?"

गजब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है। हम आगा–पीछा करने लगे। डॉक्टर मित्र ने कहा– "डरो मत बस अनुभवी है। नयी–नवेली बसों में ज्यादा विश्वसनयी है। हमें बेटों की तरह प्यार से गोद में लेकर चलेगी।"

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखे कह रही थी– "आना–जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा–राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।"

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीरत बैठे हैं। काँच बहुत कम थे। जो बचे उनसे हमें बचना था। हम फौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है। बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गाँधी जी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ–दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए। यह समझ में नहीं आया था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रूक गई। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में डीजल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजनें लगा अब मैं उम्मीद कर रहा

था कि थोड़ी देर बाद बस–कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से डीजल पिलाएँगें, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

बस की रफ्तार अब पंद्रह–बीस मील हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ हरे–भरे पेड़ थे। जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन मान रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतजार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता खा जाएगी।

एकाएक फिर बस रूकी। ड्राइवर ने तरह–तरह की तरकीबे की पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था। कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे। –" बस तो फर्स्ट क्लास है जी। यह तो इत्तफाक की बात है।"

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी। हिस्सेदारी ने इंजन खोला और कुछ सुधारा बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई थी।

धीरे–धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती " निकल जाओ, बेटी। अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।" एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि टायर फिस्स करके बैठ गया वह बहुत जोर से हिलकर थम गई। अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैनें उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते है। फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफर कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते और देवता बाँहे पसारे उसका इंतजार करते कहते– "वह महान आदमी आ रहा है। जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए। मर गया, पर टायर नहीं बदला।

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लगता था, जिंदगी इसी बस में गुजारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंजिल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गए। हम बड़े इत्मिनान से घर की तरह बैठ गए। चिंता जाती रही। हँसी–मजाक चालू हो गया।

❀ ❀ ❀

आचार्य–परिवार

क्र. सं.	नाम	पद	शैक्षिक उपाधियाँ
1.	श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव	प्रधानाचार्य,	एम.ए. (गणित), एल.टी.
2.	श्री हेमन्त शुक्ल	प्रवर आचार्य,	एम एस.सी. (भौतिकी), बी.एड.
3.	श्री कैलाश जोशी	प्रवर आचार्य,	एम एस.सी. (गणित), बी.एड.,एम.एड.
4.	श्रीमती शारदा राव	प्रवर आचार्या,	एम.ए. (अंग्रेज़ी), बी.एड.
5.	श्रीमती रेखा निगम	प्रवर आचार्या,	एम.ए. (अंग्रेज़ी), बी.एड.
6.	श्री दिनेश सिंह भदौरिया	प्रवर आचार्य,	एम एस.सी. (रसायन विज्ञान), बी.एड.
7.	डॉ. मनोज कुमार शुक्ल	प्रवर आचार्य	एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी), पी–एच.डी.
8.	श्री दुर्गेश वाजपेयी	प्रवर आचार्य	एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत), बी.एड., पत्रकारिता परास्नातक
9.	श्री सुधीर अवस्थी	प्रवर आचार्य,	एम एस.सी. (रसायन), बी.एड.
10	श्री गणेश शंकर वाजपेयी	आचार्य,	एम.ए. (संस्कृत), शिक्षा शास्त्री
11.	श्री सतीश चन्द्र गुप्त	आचार्य,	एम.ए. (इतिहास) एम.एड.
12.	श्री सुभाष चन्द्र शर्मा	आचार्य,	एम.ए. (भूगोल), डी.पी.एड.
13.	श्री जगपाल सिंह	आचार्य,	एम.ए. (भूगोल), बी.एड.
14.	श्री श्री प्रकाश ओझा	आचार्य,	एम एस.सी. (भौतिकी), बी.एड.
15.	श्री मंजीत सिंह	आचार्य,	एम एस.सी. (गणित), बी.एड.
16.	श्री आनन्द श्रीवास्तव	आचार्य,	एम.ए. (अंग्रेजी), बी.एड.
17.	श्रीमती मीना अग्रवाल	आचार्या,	एम एस.सी. (गणित), बी.एड,
18.	श्रीमती पल्लवी अग्रवाल	आचार्या,	एम एस.सी. (वनस्तपति विज्ञान), एम.ए. (अंग्रेज़ी)
19.	श्री सुनील दीक्षित	आचार्य,	एम एस.सी. (रसायन विज्ञान), बी.एड.
20.	श्री आलोक द्विवेदी	आचार्य,	एम एस.सी. (बायोकेमिस्ट्री),बी.एड.
21.	श्री दुर्गा प्रसाद सिंह	आचार्य,	एम एस.सी. (भौतिकी), बी.एड.
22.	श्रीमती शक्ति श्रीवास्तव	आचार्या,	बी एस.सी., एम.ए. (समाजशास्त्र)
23.	डॉ. मधुलता त्रिपाठी	आचार्या,	एम.ए. (संस्कृत), बी.एड., पी.एच–डी.
24.	श्री उमेश कुमार गुप्त	आचार्य,	एम एस.सी. (गणित), बी.एड.
25.	श्रीमती दीप्ति अवस्थी	आचार्या	एम एस.सी. (वनस्पति विज्ञान), बी.एड.
26.	श्री वेद कुमार शर्मा	आचार्य,	बी.ए., बी.एड., (आई.जी.डी.बाम्बे)
27.	श्री अजय मिश्र	आचार्य,	एम.पी.एड.
28.	श्री किशन स्वरूप अवस्थी	आचार्य,	एम.ए. (समाजशास्त्र), बी.पी.एड.
29.	श्री पवन पाण्डेय	आचार्य,	एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी)
30.	श्रीमती कोमल संजय जैन	आचार्या,	एम.कॉम., एल–एल.बी.
		कम्प्यूटर विभाग	
1.	श्रीमती अर्चना विद्यार्थी	आचार्या,	बी.एस–सी., एम.ए., (कम्प्यूटर डिप्लोमा–"ए" लेविल)

प्राथमिक विभाग		
1.	श्रीमती तृप्ति प्रेम	आचार्या, बी.ए., बी.एड. (National Course in Broad Casting & Media Entrepreneurship, Linguistics & Phonetics)
2.	सुश्री प्रीती तिवारी	आचार्या, एम एस.सी. (पर्यावरण विज्ञान) एम.फिल., एम.ए. (अंग्रेज़ी)
3.	श्री अंकुर दुबे	आचार्य, संगीत प्रभाकर
4.	श्रीमती स्मिता वाजपेयी	आचार्या, एम.कॉम., एन.टी.टी.
5.	श्रीमती देवो श्री सैनी	आचार्या, एम.ए., एन.टी.टी., बी.एड., बी.पी.एड.
6.	सुश्री दीपिका	आचार्या, बी.एस–सी., एम.सी.ए., एन.टी.टी., बी.एड.
7.	श्रीमती ललिता रस्तोगी	आचार्या, एम.ए. (संगीत)
8.	श्रीमती शुभ्रा मिश्रा	आचार्या, M.HSc. (Food & Nutrition), बी.एड़
9.	श्रीमती पूजा पुनेथा	आचार्या, एम.ए., एन.टी.टी.
10.	श्रीमती ज्योति मोहन	आचार्या, एम.ए. (हिन्दी, चित्रकला), एम.एड.
11.	श्री हिमांशु तिवारी	(एम.पी.एड.)
कार्यालय विभाग		
1.	श्री राजेन्द्र गुप्त	कार्यालय–अधीक्षक
2.	श्री ओंकार नाथ गुप्त	
3.	श्री रिण्टू घोष	
छात्रावास		
1.	श्री सुरेश चन्द्र अग्निहोत्री	छात्रावास अधीक्षक
2.	श्री शैलेश दीक्षित	
3.	श्री बी.एस.बिसेन	
4.	श्री शिव मोहन सिंह	

विद्यालय-प्रबन्ध-समिति

अध्यक्ष	डॉ0 ज्ञानचन्द्र अग्रवाल	अवकाश प्राप्त प्राध्यापक	कानपुर
उपाध्यक्ष	श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी	व्यवसायी	कानपुर
मंत्री	श्री वीरेन्द्र जीत सिंह	चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट	कानपुर
सहमंत्री	श्री यतीन्द्र जीत सिंह	व्यवसायी	कानपुर
सदस्य	डॉ0 योगेन्द्र भार्गव	अ0प्र0 मुख्य अभियन्ता	कानपुर
सदस्य	श्री ओम प्रकाश भार्गव	व्यवसायी	कानपुर
सदस्य	श्री प्रेम चन्द्र गुप्त	व्यवसायी	कानपुर
सदस्य	श्री शंकर शरण श्रीवास्तव	शिक्षाविद्	कानपुर
सदस्य	श्री हरि कृष्ण सेठ	अधिवक्ता	कानपुर
सदस्य	श्री तरुण विजय	पत्रकार	कानपुर
सदस्य	डॉ0 अशोक वार्ष्णेय	सामाजिक कार्यकर्ता	कानपुर
सदस्य	श्रीमती नीतू जीत सिंह	चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट	कानपुर
सदस्य	श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी	पूर्व प्रधानाचार्य	कानपुर
सदस्य	श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव	प्रधानाचार्य	कानपुर
सदस्य	दो शिक्षक प्रतिनिधि		

अन्तरताना ठिकाना : www.pddusdv.org
अणुडाक : pddusdvkanpur@gmail.com

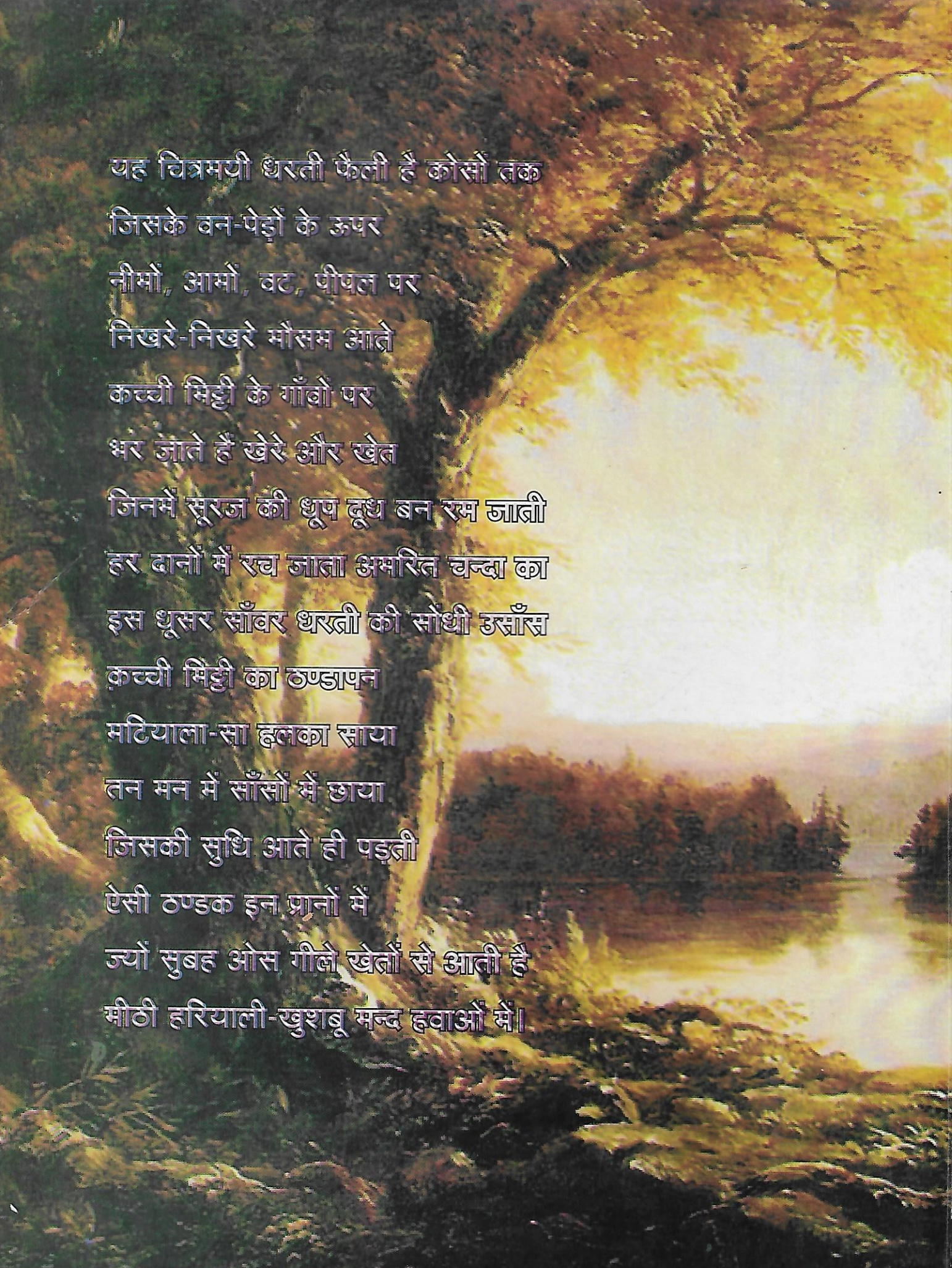

यह चित्रमयी धरती फैली है कोसों तक
जिसके वन-पेड़ों के ऊपर
नीमों, आमों, वट, पीपल पर
निखरे-निखरे मौसम आते
कच्ची मिट्टी के गाँवों पर
भर जाते हैं खेरे और खेत
जिनमें सूरज की धूप दूध बन रम जाती
हर दानों में रच जाता अमरित चन्दा का
इस धूसर साँवर धरती की सोंधी उसाँस
कच्ची मिट्टी का ठण्डापन
मटियाला-सा हलका साया
तन मन में साँसों में छाया
जिसकी सुधि आते ही पड़ती
ऐसी ठण्डक इन प्रानों में
ज्यों सुबह ओस गीले खेतों से आती है
मीठी हरियाली-खुशबू मन्द हवाओं में।